नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 334, नई दिल्ली, सोमवार 02 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।"

03 अंकशास्त्र में पिनैकल्स (Pinnacles) और चैलेंजेस (Challenges)
06 युवा बजट 2026-27 के आर्थिक मायने विशिष्ट, विकसित भारत 2047 के सपने होंगे
08 वित्त मंत्री निर्मला का हुआ निर्देश, मानसिक स्वास्थ्य व तंत्रिका विज्ञान का दूसरा अस्पताल पुनः रांची में

"बजट 2026-27: आम जनता के लिए समृद्धि का नया द्वार"

संजय कुमार बाठला

भारत सरकार का केंद्रीय बजट 2026 - 27 आम जनता के लिए समावेशी विकास, रोजगार सृजन और जीवन स्तर सुधार पर केंद्रित है।

यह बजट किसानों, युवाओं, महिलाओं, गरीबों और मध्यम वर्ग को सीधे लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं से भरा पड़ा है, जिससे दैनिक जीवन में सकारात्मक बदलाव आएंगे।

किसानों व ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लाभ

*किसानों की आय दोगुनी करने की दिशा में डिजिटल एग्रीकल्चर प्लेटफॉर्म 'भारत-विस्तार' लॉन्च किया गया, जो AI-आधारित सलाह देगा।

*मछली पालन, पशुपालन और 500 जलाशयों का विकास ग्रामीण रोजगार बढ़ाएगा।

*किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा ₹3 लाख से बढ़ाकर ₹5 लाख कर दी गई, जिससे सस्ता ऋण उपलब्ध होगा।

रोजगार व कौशल विकास

*युवाओं के लिए MSME को मजबूत करने,

*हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर (7 नए) और 4000 ई-बसों से लाखों नौकरियां सृजित होंगी।

*हर जिले में गर्ल्स हॉस्टल बनाना महिलाओं की शिक्षा व रोजगार को बढ़ावा देगा।

*खेलो इंडिया मिशन का विस्तार खेलप्रेमियों के लिए अवसर खोलेगा।

करदाताओं व मध्यम वर्ग को राहत

*वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज आय छूट ₹50,000 से बढ़ाकर ₹1 लाख,

*TDS छूट सीमा बढ़ी।

*विदेशी टूर पैकेज पर TCS दरों में कटौती से यात्रा सस्ती हुई।

*विवाद से विश्वास योजना का विस्तार कर विवादों को आसानी से सुलझाने की सुविधा।

*छोटे करदाताओं के लिए सरलीकृत प्रक्रिया से समय व धन की बचत

स्वास्थ्य व बुनियादी ढांचे में सुधार

*कैंसर दवाओं के दाम घटाने,

*मेडिकल टूरिज्म हब बनाने से इलाज सुलभ व सस्ता होगा।

*1.5 लाख करोड़ का ब्याज - मुक्त ऋण राज्यों को इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए, जिससे सड़क, रेल व बिजली सुविधाएं बेहतर होंगी।

*पर्यटन व सांस्कृतिक विकास से स्थानीय रोजगार बढ़ेगा।

प्रमुख लाभों का सारांश

1. किसान/ग्रामीणः- डिजिटल कृषि, KCC वृद्धि, पशुपालन रोजगार
2. युवा/रोजगारः- ई-बस, हाई-स्पीड रेल, MSME क्रेडिट
3. मध्यम वर्गः- टैक्स छूट, TCS कटौती, रिटर्न सुधार
4. महिलाएं/वृद्धः- गर्ल्स हॉस्टल, ब्याज छूट वृद्धि
5. स्वास्थ्यः- कैंसर दवा सस्ती, मेडिकल हब

यह बजट समृद्धि के साथ स्थिरता सुनिश्चित करता है, जिससे आम जनता का क्रय शक्ति बढ़ेगी और भविष्य सुरक्षित होगा।

भारत सरकार का केंद्रीय बजट 2026 - 27 आज पेश किया गया, जिसमें व्यय, घाटे और राज्यों को हस्तांतरण का स्पष्ट सार प्रस्तुत किया गया।

बजट सार की मुख्य विशेषताएं बजट सार दस्तावेज सरल ग्राफ और इन्फोग्राफिक्स के माध्यम से आय (प्राप्तियां) और खर्च (व्यय) का चित्रण करता है। इसमें राजकोषीय घाटा (एफडी), राजस्व घाटा (आरडी), प्रभावी राजस्व घाटा (ईआरडी) और प्राथमिक घाटा (पीडी) प्रमुखता से दर्शाए गए हैं।

राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों को दिए जाने वाले संसाधनों व योजनाओं का सारांश भी शामिल है।

घाटों के अर्थ

राजकोषीय घाटा (एफडी) कुल व्यय और कुल प्राप्तियों (ऋण प्राप्तियां छोड़कर) के बीच का अंतर है, जो सरकार की उधारी जरूरत बताता है।

राजस्व घाटा (आरडी) तब होता है जब राजस्व व्यय राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो; प्रभावी राजस्व घाटा (ईआरडी) में पूंजीगत संपत्तियों हेतु सहायता अनुदान घटाया जाता है; प्राथमिक घाटा (पीडी) एफडी से ब्याज भुगतान घटाकर निकाला जाता है। प्रभावी पूंजीगत व्यय (एफ-कैपेक्स) पूंजीगत व्यय और सहायता अनुदान का योग है।

व्यय के अनुमान

संशोधित अनुमान (आरई) 2025-26 में कुल व्यय ₹49,64,842 करोड़ तथा पूंजीगत व्यय ₹10,95,755 करोड़ का अनुमान है, जो पिछले वास्तविक ₹46,52,867 करोड़ से अधिक है।

बजट अनुमान (बीई) 2026-27 में कुल व्यय ₹53,47,315 करोड़, पूंजीगत व्यय ₹12,21,821 करोड़ और प्रभावी पूंजीगत व्यय ₹17,14,523 करोड़ रखा गया।

राज्यों को हस्तांतरण

2026 - 27 के बजट में राज्यों को कुल ₹25,43,769 करोड़ के संसाधन हस्तांतरित करने का अनुमान है, जिसमें राज्य का कर हिस्सा, अनुदान/ऋण और केंद्र प्रायोजित योजनाएं शामिल हैं। यह 2024-25 के वास्तविक ₹3,78,262 करोड़ से काफी वृद्धि दर्शाता है।

* **2024-25 (वास्तविक):-** कुल व्यय ₹ करोड़) 46,52,867, पूंजीगत व्यय (₹ करोड़) 10,51,953, राज्यों को हस्तांतरण (₹ करोड़) 3,78,262

* **2025-26 (आरई):-** कुल व्यय (₹ करोड़)49,64,842, पूंजीगत व्यय (₹ करोड़) 10,95,755, राज्यों को हस्तांतरण (₹ करोड़) --

* **2026-27 (बीई):-** कुल व्यय (₹ करोड़) 53,47,315, पूंजीगत व्यय (₹ करोड़) 12,21,821, राज्यों को हस्तांतरण (₹ करोड़) 25,43,769

बजट 2025 - 26 की मुख्य प्राप्तियां कर राजस्व, उधार, विनिवेश और गैर - कर राजस्व पर आधारित हैं। कुल प्राप्तियों में सकल कर राजस्व सबसे बड़ा हिस्सा रखता है, जिसमें आयकर, कॉर्पोरेट कर और जीएसटी प्रमुख हैं।

प्रमुख प्राप्ति स्रोत

सकल कर राजस्वः ₹25 लाख करोड़ से अधिक का अनुमान, जिसमें प्रत्यक्ष कर (आयकर व कॉर्पोरेट कर) और अप्रत्यक्ष कर (जीएसटी व सीमा शुल्क) शामिल।

जीएसटी संग्रह में वृद्धि दर्ज की गई।

उधार व अन्य दायित्वः राजकोषीय घाटे को पूरा करने हेतु बाजार उधार व छोटे बचत निधि से प्राप्तियां।

विनिवेश व सार्वजनिक उद्यम बिक्रीः सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के शेयर बिक्री से ₹50,000 करोड़ का लक्ष्य।

प्राप्ति अनुमान सारांश

1. सकल कर राजस्वः- 25,00,000+
2. पूंजीगत प्राप्तियां (उधार):- 15,00,000+
3. गैर-कर राजस्वः- 4,00,000
4. कुल प्राप्तियांः- 32,00,000+

यह आंकड़े बजट सार से लिए गए हैं, जो ग्राफ द्वारा स्पष्ट रूप से दर्शाए गए। वास्तविक संग्रह 2024-25 से अधिक होने का अनुमान है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा प्रस्तुत किए गए वर्ष 2026-27 के बजट पर एक विशेष सारगर्भित विश्लेषणात्मक आलेख

विकसित भारत की नींव रखने वाला साहसिक बजट

-डॉ.जयंतीलाल भंडारी

यकीनन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा प्रस्तुत वित्त वर्ष 2026-27 के बजट की तस्वीर में यह उभरकर दिखाई दे रहा है कि यह बजट आम आदमी के लिए राहत और विकसित भारत के लिए साहसिक सुधारों को आगे बढ़ाने वाला ऐतिहासिक बजट है। इस बजट में वित्त मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा प्रस्तुत सुधारों की प्रतिब्द्धता को आगे बढ़ाते हुए तीन कर्तव्यों पर बजट को आधारित किया है। इनमें उत्पादकता और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ना, लोगों की आशंकाओं को पूरा करने के लिए क्षमता निर्माण और सबका साथ, सबके विकास के मद्देनजर ढांचागत सुधार के साथ प्रगति करना शामिल है। इस बजट में रिकॉर्ड पूंजीगत व्यय 12.2 लाख करोड़ रुपए सुनिश्चित किए गए हैं। यद्यपि बजट के तहत इनकम टैक्स स्लैब में कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन एक अप्रैल 2026 से नया आयकर अधिनियम लागू किया जाना सुनिश्चित करके आयकर संबंधी प्रक्रिया को सरल बनाया गया है और आयकर भरना आसान किया गया है। बजट के नए प्रावधानों से बुनियादी ढांचा, छोटे शहर, एमएसएमई, शिक्षा, पर्यटन और सर्विस सेक्टर जैसे क्षेत्रों में नई पीढ़ी के लिए रोजगार के व्यापक मौके बढ़ेंगे। खास बात यह भी है कि आगामी वर्ष के बजट के तहत वित्त मंत्री राहत और विकास के बीच सूझबूझ पूर्ण संतुलन बनाते हुए राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 4.3 फीसदी के स्तर पर सीमित रखने और सात फीसदी से अधिक विकास दर पाने की रणनीति के साथ आगे बढ़ते हुए दिखाई दी हैं।

गौरतलब है कि नए बजट के तहत वित्त मंत्री ने वैश्विक आर्थिक अनिश्चिता, भू राजनीतिक तनाव और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में धीमेपन के बीच अगली पीढ़ी के सुधार, नीतिगत स्थिरता व दीर्घकालीन विकास की रणनीति के साथ घरेलू मांग की मजबूती पर्यावरण नवाचार, उद्यमिता बुनियादी ढांचा, कृषि विकास, गरीब, युवा, महिला और किसान वर्ग के लिए राहत के प्रभावी प्रावधानों के साथ मैन्युफैक्चरिंग, सेवा क्षेत्र रक्षा, सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग (एमएसएमई) स्वदेशी प्रोत्साहन और हरित ऊर्जा पर बड़े ऐलान किए हैं। इनके साथ-साथ भारत को वैश्विक बायो फॉर्मा केंद्र बनाने, शहरी आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण, नए राष्ट्रीय जल मार्ग, सात हाई स्पीड कोरिडोर, व्यापार सुंगमता, कंटेंनर निर्माण, बुजुर्गों के लिए मजबूत इकोसिस्टम, टीयर-2 और टीयर-3 शहरों के विकास के लिए प्रभावी प्रावधान किए गए हैं।

निश्चित रूप से वित्तमंत्री इस बजट के माध्यम से युवाओं के रोजगार बढ़ाने, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने, डिजिटल कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को रोजगार बाजार की उभरती जरूरतों के अनुरूप ढालने, प्रधानमंत्री कौशल मुद्रा योजना, ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ाने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण, निजी निवेश को प्रोत्साहित करने, वित्तीय समावेशन को बेहतर करने और विदेशी निवेश को आकर्षित करने संबंधी प्रभावी प्रावधानों के साथ आगे बढ़ी हैं। नए बजट में हर क्षेत्र में आर्टिफिशल इटेंलिजेंस (एआई) को अहमियत हेतु प्रावधान किए गए है, ताकि भारत एआई का वैश्विक हब बन सके। चूँकि इस समय चीन, पाकिस्तान के साथ-साथ बांग्लादेश से भी देश की बाहरी सुरक्षा के खतरे बढ़े हैं, ऐसे में सुरक्षा क्षमता बढ़ाने के लिए बजट में अधिक धन का आवंटन किया गया है। वित्त मंत्री ने इस बजट में भारत को दुनिया के बाजार और अधिक प्रभावी रूप से जुड़ने और भारत को निर्यात का नया हब बनाने के लिए नई रणनीति प्रस्तुत की है। भारत को यूरोपीय संघ समेत विभिन्न देशों के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) के बाद दुनिया के बाजार में भारतीय उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बूस्ट करने के प्रोत्साहनमूलक प्रावधानों के साथ आगे बढ़ी हैं। इतना ही नहीं अमेरिका के द्वारा लगाए गए 50 फीसदी टैरिफ से प्रभावित निर्यात क्षेत्रों को भी राहत देने के मद्देनजर वित्त मंत्री नए निर्यात प्रोत्साहनों की डगर पर आगे बढ़ते हुए दिखाई दी हैं। निश्चित रूप से वित्त मंत्री ने इस बजट में सीमा शुल्क के लिए जहाँ राहत दी है, वहीं सीमा शुल्क में सुधार भी किए है।

निश्चित रूप से वित्त मंत्री सीतारमण के द्वारा एक फरवरी को प्रस्तुत आगामी वित्त वर्ष 2026-27 का प्रस्तुत बजट कोई साधारण वार्षिक बजट नहीं है, बल्कि यह बजट देश के आर्थिक परिदृश्य को ऐतिहासिक मोड़ देने वाला बजट है। उम्मीद करें कि इस बजट से जहाँ देश में साहसिक सुधारों का नया युग शुरू होगा, वहीं आम आदमी के लिए अधिक राहत और देश के लिए तेज विकास का नया परिदृश्य निर्मित होगा। उम्मीद करें कि एक ओर वित्त मंत्री वर्ष 2026-27 के बजट के बजट के लक्ष्य के तहत राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.3 फीसदी तक रखने में कामयाब होगी। उम्मीद करें कि इस अभूतपूर्व बजट से देश की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ेगी और यह बजट देश को वर्ष 2028 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने वाला और 2047 तक विकसित भारत बनाने की नींव रखने वाला बजट सिद्ध होगा।

बजट 2026: सरकार का बड़ा फैसला अब अनजाने में टैक्स छिपाने पर नहीं होगी जेल

संजय कुमार बाठला

बजट 2026: सरकार का बड़ा फैसला, अब अनजाने में टैक्स छिपाने पर नहीं होगी जेल। वित्त मंत्री निर्मला सीतरमण ने रविवार को बजट पेश किया. उन्होंने इनकम टैक्स में सुधार का ऐलान किया.

सरकार ने कहा कि अब करदाता को अपराधी की नजर से नहीं देखा जाएगा. इसके जरिए सरकार की कोशिश देश में भरोसा आधारित टैक्स संरचना विकसित करना है.

वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में कहा कि एक अप्रैल से लागू होने वाले नए इनकम टैक्स एक्ट के तहत अगर किसी की आय में कोई गड़बड़ी मिलती है या अनजाने में टैक्स छिपाया जाता है तो सजा की बजाय केवल जुर्माना भरना होगा.

इसके अलावा, जिन लोगों की विदेशों में अघोषित संपात्ते है, उन्हें अपनी गलती सुधारने के लिए 6 महीने का विशेष समय मिलेगा. वह लोग एक खास प्रकटीकरण स्कीम के तहत अपनी संपत्ति की जानकारी देकर कानूनी दांवपेचों से बच सकते हैं.

वित्त मंत्री ने अपने बजट 2026-27 के भाषण में कहा, "छोटे अपराथों पर केवल जुर्माना लगेगा. शेष अभियोगों को अपराध की गंभीरता के अनुरूप वर्गीकृत किया जाएगा. इनमें केवल साधारण कारावास होगा, अधिकतम कारावास घटाकर दो वर्ष कर दिया गया है और न्यायालयों के पास इन्हें भी जुर्माने में बदलने का अधिकार होगा."

वित्त मंत्री के कहा, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के समक्ष अपील की अवधि के लिए करदाता पर जुर्माने की राशि पर कोई ब्याज नहीं लगेगा, चाहे अपील प्रक्रिया का परिणाम कुछ भी हो. इसके अलावा, अग्रिम भुगतान की राशि को 20 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत किया जा रहा है और इसकी गणना केवल मूल कर मांग पर ही की जाएगी.

इसके अलावा, वित्त मंत्री ने इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) में बड़ी राहत दी है. अब आईटीआर में गलती होने पर इसे सुधारना आसान होगा और इसके लिए सरकार ने अतिरिक्त समय देने का ऐलान किया है. अब करदाता मामूली फीस देर रिटर्न अपडेट कर सकेंगे.

सरकार ने प्रॉपर्टी खरीदने को भी आसान बना दिया है. अगर आप किसी एनआरआई से घर या जमीन खरीदते हैं तो पहले की तरह टैन नंबर की कठिन प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ेगा और बिना टैन के भी टीडीएस कट सकेगा.

वहीं, अब छोटे करदाताओं को निल टीडीएस के लिए अधिकारियों के चक्कर नहीं लगाने होंगे और पूरी प्रक्रिया अब ऑटोमैटिक और डिजिटल हो जाएगी.

बजट 2026 में महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा को लेकर एक बड़ा और ज़रूरी कदम।

पिंकी कुंडू

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ऐलान किया है कि देश के हर ज़िले में एक Girls Hostel बनाया जाएगा। यह सिर्फ़ इमारत नहीं, बल्कि उन लाखों लड़कियों के लिए सुरक्षित ठिकाना होगा जो पढ़ाई, नौकरी और आत्मनिर्भर बनने का सपना लेकर घर से बाहर निकलती हैं। यह फैसला शिक्षा, सुरक्षा और समान अवसर — तीनों को एक साथ मज़बूत करता है। बजट 2026 में सशक्त भारत की नींव, बेटियों के सुरक्षित भविष्य से रखी जा रही है।

समय से पहले रेट बढाकर सिगरेट ओर पान मसाले के खरबो रूपये कमाये किसी भी विभॉग या संबंधित ने सुध नहीं ली जनता को लुटवाया

संजय कुमार बाठला

सिगरेट पीने वालों के लिए बुरी खबर है, क्योंकि 1 फरवरी 2026 से सिगरेट की कीमतें बढ़ गई हैं। सरकार ने सिगरेट पर उत्पाद शुल्क बढ़ा दिया है, जिससे कीमतें लगभग 15% से 40% तक बढ़ गई हैं।

- सिगरेट की नई कीमतें:

- 10 रुपये वाली सिगरेट अब 14 रुपये तक हो सकती है।
- 18 रुपये वाली सिगरेट अब 24 रुपये तक हो सकती है।

- तंबाकू उत्पादों पर बढ़ा शुल्कः

- सिगरेट पर उत्पाद शुल्क 200-735 रुपये प्रति 1,000 स्टिक से बढ़कर 2,700-11,000 रुपये हो गया है।
- चबाने वाले तंबाकू पर शुल्क 25% से बढ़कर 100% हो गया है।
- हुक्का तंबाकू पर शुल्क 25% से बढ़कर 40% हो गया है

गुटखा और पान मसाले पर 1 फरवरी 2026 से 40% जीएसटी लगेगा, जो पहले 28% था। इसके अलावा, अतिरिक्त एक्साइज ड्यूटी और हेल्थ सेस भी लगेगा। इस बढ़े हुए टैक्स का उद्देश्य तंबाकू उत्पादों की खपत को कम करना और सरकार के राजस्व में वृद्धि करना है

- टैक्स दरें:

- गुटखा और पान मसाले पर 40% जीएसटी
- अतिरिक्त एक्साइज ड्यूटी और हेल्थ सेस
- लागू होने की तिथिः 1 फरवरी 2026
- उद्देश्यः तंबाकू उत्पादों की खपत को कम करना और सरकार के राजस्व में वृद्धि करना।

पिंकी कुंडू

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचारः "बैंक खाते फ्रीज़ करने संबंधी इलाहाबाद हाई कोर्ट का निर्णय"

1. पृष्ठभूमि

- इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ पीठ ने हाल ही में इस मुद्दे पर विचार किया कि क्या केवल पुलिस अनुरोध पर बैंक ग्राहक खातों को फ्रीज़ कर सकते हैं।
- मामला एक मेडिकल स्टोर चेन की याचिका से उत्पन्न हुआ, जिसका एक्सिस बैंक खाता राचकोंडा पुलिस (हैदराबाद) द्वारा डेबिट फ्रीज़ नोटिस जारी करने के बाद फ्रीज़ कर दिया गया था।
- पुलिस ने आरोप लगाया कि साइबर अपराध पीड़ित के खाते से धोखाधड़ी से स्थानांतरित धनराशि याचिकाकर्ता के खाते में पहुँची थी।

2. न्यायालय की टिप्पणियाँ

- कानूनी प्रक्रिया की आवश्यकताः न्यायालय ने स्पष्ट किया कि केवल पुलिस अनुरोध पर बैंक खाते फ्रीज़ नहीं कर सकते। उचित कानूनी प्रक्रिया का पालन आवश्यक है।
- नागरिक और आपराधिक दायित्वः यदि बैंक बिना विधिक प्रक्रिया के खाते फ्रीज़ करते हैं, तो उन पर नागरिक और आपराधिक दोनों प्रकार की कार्रवाई हो सकती है।
- पुलिस नोटिस की कमियाँः
- एक्सिस बैंक को जारी नोटिस में फ्रीज़ की जाने वाली राशि का उल्लेख नहीं था।
- बार-बार अनुरोध के बावजूद जाँच अधिकारी ने एफआईआर की प्रति या औपचारिक जब्ती आदेश उपलब्ध नहीं कराया।

3. न्यायालय का निर्णय

- हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता का खाता डी-फ्रीज़ करने का आदेश दिया।
- साथ ही प्रक्रिया अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु दिशा-निर्देश जारी किएः
- खाते फ्रीज़ करने की सूचना तुरंत बैंक या भुगतान सेवा प्रणाली के नोडल अधिकारी को भेजी जाए।
- बैंक तभी कार्रवाई करें जब उचित कानूनी दस्तावेज (एफआईआर, जब्ती आदेश या न्यायिक निर्देश) प्रस्तुत हों।

4. निर्णय के प्रभाव

- बैंकों के लिएः
- खाते फ्रीज़ करने से पहले सावधानी बरतें और उचित दस्तावेज माँगें।
- अनुपालन न करने पर मुकदमेबाज़ी और दायित्व का सामना करना पड़ सकता है।
- पुलिस के लिएः
- जाँच अधिकारियों को सुनिश्चित करना होगा कि नोटिस एनसीआरपी शिकायतों, एफआईआर, जब्ती आदेश या न्यायिक निर्देशों से समर्थित हों।
- अस्पष्ट या अधूरे नोटिस विधिक रूप से मान्य नहीं होंगे।
- नागरिकों के लिएः
- व्यक्तियों और संगठनों को मनमाने ढंग से खाते फ्रीज़ किए जाने से सुरक्षा मिलेगी।
- यदि विधिक प्रक्रिया का पालन नहीं होता, तो वे अदालत में चुनौती दे सकते हैं।

5. व्यापक महत्व

- यह निर्णय वित्तीय जाँचों में विधिक प्रक्रिया की सुरक्षा को मजबूत करता है।
- यह साइबर अपराध मामलों में त्वरित कार्रवाई की आवश्यकता और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के बीच संतुलन स्थापित करता है।
- यह कानून प्रवर्तन और वित्तीय संस्थानों के बीच जवाबदेही और पारदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

6. मुख्य निष्कर्ष

- केवल पुलिस अनुरोध पर बैंक खाते फ्रीज़ नहीं कर सकते।
- उचित कानूनी दस्तावेज अनिवार्य हैं।
- मनमाना फ्रीज़ करना बैंकों के लिए नागरिक और आपराधिक दायित्व ला सकता है।
- नागरिकों को अवैध खाते फ्रीज़ करने के विरुद्ध न्यायिक उपाय उपलब्ध हैं।
- यह निर्णय साइबर अपराध से संबंधित वित्तीय जाँचों में प्रक्रिया की अखंडता को सुदृढ़ करता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

अजवाइन: छोटे दाने, बड़े फायदे

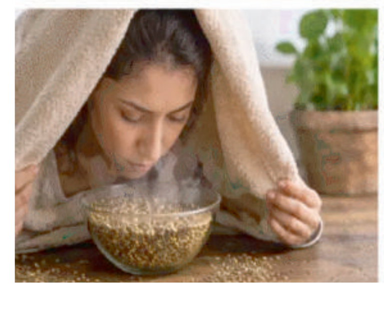

1.यकृत के रोग : 2 ग्राम पिसी अजवाइन, 1 ग्राम पिसी सोंठ को 1 कप पानी में रात को भिगोएं, सुबह इसे मसलकर छान लें और कम गर्म करके पीयें। इस प्रयोग को 15 दिन तक लगातार करें। इससे यकृत के रोग से लाभ होता है।

2.पथरी : अजवाइन 5 ग्राम और जीरा 4 ग्राम को मिलाकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण प्रतिदिन सुबह-शाम पानी के साथ लेने से सभी प्रकार की पथरी निकल जाती है।

3.अजवाइन 6 ग्राम प्रतिदिन सुबह-शाम फांकने से गुर्दे व मलाशय की पथरी घुलकर निकल जाती है।

4.अम्लपित्त : 1 चम्मच पिसी हुई अजवाइन, 1 गिलास पानी और 1 नींबू का रस मिलाकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

5..यकृत का बढ़ना : 1.5 ग्राम अजवाइन का चूर्ण और 5 मिलीलीटर भांगरे का रस एक साथ मिलाकर पिलाने से यकृत वृद्धि मिट जाती है।

6.अजवाइन, चीता, यवक्षार, पीपलामूल, दन्ती की जड़, छोटी पीपल आदि को एक साथ 5-5 ग्राम की मात्रा में लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में से एक चुटकी चूर्ण दही के पानी के साथ बच्चे को दें। इससे यकृत रोग मिट जाता है।

7.पाचन क्रिया का खराब होना : अजवाइन का रस या पुनर्नवा का रस या मकोए का रस एक तिहाई कप में पानी मिलाकर भोजन के बाद दिन में सुबह और शाम प्रयोग करें।

8.पेट में कृमि (पेट के कीड़े) होने पर : अजवाइन के लगभग आधा ग्राम चूर्ण में इसी के बराबर मात्रा में कालानमक मिलाकर सोते समय गर्म पानी से बच्चों को देना चाहिए। इससे बच्चों के पेट के कीड़े मर जाते हैं। कृमिरोग में पत्तों का 5 मिलीलीटर अजवाइन का रस भी लाभकारी है।

9.अजवाइन को पीसकर प्राप्त हुए चूर्ण की 1 से 2 ग्राम को खुराक के रूप में छाछ के साथ पीने से पेट के कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

10.अजवाइन के बारीक चूर्ण 4 ग्राम को 1 गिलास छाछ के साथ पीने या अजवाइन के तेल की लगभग 7 बूंदों को प्रयोग करने से लाभ होता है।

11.अजवाइन को पीसकर प्राप्त रस की 4 से 5 बूंदों को पानी में डालकर सेवन करने आराम मिलता है।

आधे से एक ग्राम अजवाइन का बारीक चूर्ण करके गुड़ के साथ मिलाकर छोटी-छोटी गोलियां बना लें। इसे दिन में 3 बार खिलाने से छोटे बच्चों (3 से लेकर 5 साल तक) के पेट में मौजूद कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

अजवाइन का आधा ग्राम बारीक चूर्ण और चुटकी भर कालानमक मिलाकर सोने से पहले 2 गाम की मात्रा में पिलाने से पेट में मौजूद कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

अजवाइन का चूर्ण आधा ग्राम, 60 ग्राम छाछ के साथ और बड़ों को 2 ग्राम चूर्ण और 125 मिलीलीटर छाछ में मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

अजवाइन का तेल 3 से 7 बूंद तक देने से हैजा तथा पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

25 ग्राम पिसी हुई अजवाइन आधा किलो पानी में डालकर रात को रख दें। सुबह इसे उबालें। जब चौथाई पानी रह जाये तब उतार कर छान लें। ठंडा होने पर पिलायें। यह बड़ों के लिए एक खुराक है। बच्चों को इसकी दो खुराक बना दें। इस तरह सुबह, शाम दो बार पीते रहने से पेट के छोटे-छोटे कृमि मर जाते हैं

अजवाइन के 2 ग्राम चूर्ण को बराबर मात्रा में नमक के साथ सुबह-सुबह सेवन करने से अजीर्ण (पुरानी कब्ज), जोड़ों के दर्द तथा पेट के कीड़ों के कारण उत्पन्न विभिन्न रोग, आध्मान (पेट का फूलना और पेट में दर्द आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

पेट में जो हुकवर्म नामक कीडे.होते हैं, उनका नाश करने के लिए अजवाइन का बारीक चूर्ण लगभग आधा ग्राम तक खाली पेट 1-1 घंटे के अंतर से 3 बार देने से और मामूली जुलाब (अरंडी तैल नहीं दें) देने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। यह प्रयोग, पीलिया के रोगी और निर्बल पर नहीं करना चाहिए।

गठिया (जोड़ों का दर्द) : जोड़ों के दर्द में पीड़ति स्थानों पर अजवाइन के तेल की मालिश करने से राहत मिलेगी।

गठिया के रोगी को अजवाइन के चूर्ण की पोटली बनाकर सेंकने से रोगी को दर्द में आराम पहुंचता है।

जंगली अजावयन को अरंड के तेल के साथ पीसकर लगाने से गठिया का दर्द ठीक होता है।

अजवाइन का रस आधा कप में पानी मिलाकर आधा चम्मच पिसी सोंठ लेकर ऊपर से इसे पीलें। इससे गठिया का रोग ठीक हो जाता है।

1 ग्राम दालचीनी पिसी हुई में 3 बूंद अजवाइन का तेल डालकर सुबह-शाम सेवन करें। इससे दर्द ठीक होता है।

मिट्टी या कोयला खाने की आदत : एक चम्मच अजवाइन का चूर्ण रात में सोते समय नियमित रूप से 3 हफ्ते तक खिलाएं। इससे बच्चों की मिट्टी खाने की आदत छूट जाती है।

पेट में दर्द : एक ग्राम काला नमक और 2 ग्राम अजवाइन गर्म पानी के साथ सेवन कराएं।

शीतपित्त : अजवाइन 50 ग्राम अच्छी तरह कूटकर 50 ग्राम गुड़ के साथ 6-6 ग्राम की गोलियां बनाकर सुबह-शाम 1-1 गोली ताजे पानी के साथ लें। एक हफ्ते में ही सारे शरीर पर फैली हुई पित्ती दूर हो जायेगी।

आधा चम्मच अजवाइन और एक चम्मच गुड़ मिलाकर सेवन करने से जल्द ही लाभ होगा।

पित्ती होने पर 1 चम्मच अजवाइन और कालानमक मिलाकर सुबह खाली पेट पानी से फंकी लेने से फायदा होता है।

अजवाइन और गेरू मिलाकर गुड़ के साथ खाने से लाभ होता है।

अजवायन और शुद्ध गंधक को बराबर मात्रा में मिलाकर, कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर 1 ग्राम मात्रा में शहद के साथ खाने से शीतपित्त खत्म होती है।

अजवाइन और गेरू को सिरके में पीसकर लगाने से पित्ती ठीक हो जाती है।

अजवाइन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, जवाखार। इन सब चीजों को आधा-आधा चम्मच की मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें इसमें से दो चुटकी चूर्ण रोज गर्म पानी के साथ खायें।

मोटापा नाशक : अजवाइन 20 ग्राम, सेंधानमक 20 ग्राम, जीरा 20 ग्राम, कालीमिर्च 20 ग्राम की मात्रा में कूटकर छानकर रख लें। रोजाना एक पुड़िया सुबह खाली पेट छाछ के साथ पीयें। यह प्रयोग शरीर में चर्बी को कम करके मोटापा दूर कर देता है।

रक्तपित्त : अजवाइन 5 ग्राम, पिपरमेंट 10 दाने और गुड़ 10 ग्राम। तीनों को मिलाकर दो खुराक बनायें तथा सुबह-शाम इसका प्रयोग करें। इससे रक्तपित्त खत्म हो जाता है।

नींद न आना : जब किसी व्यक्ति को नींद नहीं आ रही हो तो अजवाइन के तेल को कान के पीछे कनपटियों पर मलने से नींद आ जाती है।

लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग खुरासानी अजवाइन का चूर्ण सुबह-शाम लेने से अच्छी नींद आती है।

नाक के कीड़े : खुरासानी अजवाइन के काढ़े से नाक के जख्म को साफ करने से दर्द कम हो जाता है।

प्लीहा (तिल्ली) में वृद्धि होने पर : सुबह के समय 2 कप पानी मिट्टी के बर्तन में लें। इसमें 15 ग्राम अजवाइन डालकर दिन में घर के अंदर और रात में खुले में रख दें। अगले दिन सुबह उठकर छानकर इसे पियें तथा इसका प्रयोग लगातार 15 दिनों तक करें, इससे बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है। केवल अजवाइन का भी प्रयोग किया जा सकता है।

अजवाइन, चित्रक के जड़ की छाल, दन्ती और बच इन सभी का चूर्ण बना लें और रोजाना इस चूर्ण को 3 ग्राम दही के पानी से सेवन करें या 6 ग्राम गोमूत्र के साथ जवाखार लेने से तिल्ली निश्चित रूप से छोटी हो जाती है।

नाक के रोग : 10 ग्राम अजवाइन और 40 ग्राम पुराने गुड़ को लगभग 450 मिलीलीटर पानी में डालकर उबालने के लिए रख दें। उबलने पर जब 250 मिलीलीटर के करीब पानी बाकी रह जाये तो उस पानी को थोड़ी देर तक रखकर थोड़ा ठंडा होने पर पीकर ऊपर से चादर ओढ़ कर सो जाये। इससे छींक आना बंद हो जाती है।

अजवाइन के काढ़े या अजवाइन के रस से फुंसियों को अच्छी तरह से साफ करने से नाक की फुंसियां ठीक हो जाती हैं।

पाला मारना : अजवाइन का चूर्ण बनाकर शरीर व हाथ-पैर की मालिश करने से शरीर का ताप बढ़ जाता है।

वात रोग : खुरासानी अजवाइन का प्रयोग गठिया, घुटने के रोग की सूजन में बहुत ही फायदेमंद होती है।

आक्षेप (बेहोशी अवस्था में कांपना) : लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग खुरासानी अजवाइन सुबह और शाम को खाने से आक्षेप, मिर्गी और अनिद्रा में बहुत लाभ प्राप्त होता है।

गुल्म (वायु का गोला) : अजवाइन का चूर्ण और थोड़ा-सा संचर नमक छाछ (मट्ठे) में मिलाकर पीने से कफ से उत्पन्न गुल्म में लाभ होता हैं।

नजला, नया जुकाम : 10 ग्राम अजवाइन को एक साफ कपड़े में बांधकर पोटली बनाकर तवे पर रखकर गर्म कर लें। इसको बार-बार नाक से सूंघने से बंद नाक खुल जाती है और जुकाम भी ठीक हो जाता है नाक का गंदा पानी निकल जाता है और सिर का भारी होना भी ठीक हो जाता है।

पेट के दर्द में : अजवाइन और काला नमक को बराबर मात्रा में पीस लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ पीने से पेट में दर्द मिटता है।

20 ग्राम अजवाइन तथा 10 ग्राम नौसादर को पीसकर रख लें। इसे 2 ग्राम की खुराक के रूप में गर्म पानी के साथ पीने से पेट के दर्द में लाभ होता है।

2 ग्राम अजवाइन और 1 ग्राम नमक को मिलाकर गर्म पानी के साथ पीने से पेट के दर्द में आराम मिलता है।

15 ग्राम अजवाइन, 5 ग्राम कालानमक और आधा ग्राम हींग को अच्छी तरह पीसकर शीशी में रखकर लें, आधा चम्मच की मात्रा में दिन में 2 बार गर्म पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता हैं।

2 चम्मच अजवाइन, 8 चम्मच जीरा और 2 चम्मच कालानमक को पीसकर शीशी में भरकर रख लें, फिर 1 गिलास पानी में 2 चम्मच का चूर्ण और नींबू को निचोड़कर पीने से पेट के दर्द, अपच (भोजन का न पचना) में लाभ मिलता है।

1 चम्मच अजवाइन गुड़ को मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

अजवाइन, झाऊ का बक्कल, धनिया, त्रिफला, बड़ी पीपल, काला जीरा, अजमोद, पीपला मूल (पीपल की जड़) और वायबिडंग को बराबर मात्रा में लेकर अच्छी तरह पीसकर रख लें। इस बने चूर्ण में 4 गुना थूहर का दूध डालकर मिश्रण बना लें, फिर रोज थोड़ी-सी मात्रा में लेकर प्रयोग करने से पेट की बीमारियों में लाभ होता है।

अजवाइन 1 चम्मच, जीरा आधा चम्मच को बारीक पीसकर मिश्रण बना लें, इसमें आधे नींबू का रस और थोड़ी-सी मात्रा में कालानमक मिलाकर पीने से भोजन का न पचना और पेट की गैस में लाभ होता है।

अजवाइन को पीसकर प्राप्त हुए रस को थोड़ी मात्रा में पानी के साथ सुबह और शाम दें।

अजवाइन का चूर्ण 60 ग्राम और काला नमक 10 ग्राम को पानी के साथ पीने से पेट का दर्द, पेट की गैस (अफारा), वायु गोला (मल के न त्यागने के कारण रुकी हुई वायु या गैस) में तुरंत लाभ होता है।

अजवाइन 12 ग्राम, सोंठ 6 ग्राम और स्वादानुसार काला नमक को पीसकर छानकर प्रयोग करें।

अजवाइन का चूर्ण 300 ग्राम और 50 ग्राम कालानमक को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से खांसी, पेट का तनाव, गुल्म (ट्यूमर), तिल्ली (प्लीहा), कफ और गैस की काफी बीमारियों को समाप्त करती है।

अजवाइन, सेंधानमक, संचर नमक, यवाक्षार, हींग, सूखा आंवला को पीसकर चूर्ण बना लें। इसे 5 से 10 ग्राम की मात्रा में रोज शहद के साथ सुबह और शाम चाटने से पेट के दर्द में आराम होता है।

अजवाइन, सेंधानमक, जीरा, चीता या हाऊबेर को अच्छी तरह पीसकर छाछ के साथ पीने से `जलोदर बादी के कारण होने वाला दर्द मिट जाता है।

अजवाइन के चूर्ण को पोटली में बांधकर पेट पर सेंकने से पेट की पीड़ा शांत होती है।

3 से 5 ग्राम अजवाइन के चूर्ण में 1 ग्राम कालानमक डालकर गर्म पानी के साथ सेवन करने से पेट के दर्द में लाभ होता है।

एक चम्मच अजवाइन, आधा चम्मच जीरा को बारीक पीसकर उसमें आधे नींबू का रस और थोड़ा-सा काला नमक मिलाकर पी लें। इसे पीने से पेट की गैस और भोजन के न पचने के कारण होने वाली बीमारियों में लाभ होता है।

300 ग्राम अजवाइन को तवे पर, 300 ग्राम हींग को लौह के बर्तन पर तब तक भूने जब तक वह लाल न हो जाये, फिर इसमें 250 ग्राम सेंधानमक मिलाकर बारीक चूर्ण बना लें। इस बने चूर्ण को 8 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ दिन में दो बार रोजाना देने से पेट के दर्द, गैस और कब्ज की शिकायत में लाभ होता है।

पिसी अजवाइन का चूर्ण लगभग 1ग्राम का चौथा भाग को दूध में मिलाकर दिन में 2 बार (सुबह और शाम) पीने से पेट के दर्द में लाभ होता हैं।

अजवाइन 3 ग्राम को लाहौरी नमक 1 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ लें।

अजवाइन 2 ग्राम और नमक एक ग्राम गर्म पानी के साथ देने से पेट दर्द बंद हो जाता है और पाचन क्रिया ठीक होती है। पतले दस्त होते हो तो वे बंद हो जाते हैं, प्लीहा की विकृति दूर हो जाती है।

15 ग्राम अजवाइन, 5 ग्राम कालानमक और आधा ग्राम हींग तीनों को पीसकर शीशी में भर लें। पेट दर्द होने पर 1 ग्राम की मात्रा सुबह-शाम गर्म पानी से लें। इससे भूख भी बढ़ती है।

पेशाब में खून आना : 3-3 चम्मच शर्बत बजुरी या अंजवार को आधा कप पानी में मिलाकर सोते समय लेने से पेशाब में खून आने के रोग मे लाभ होता है।

बंद पेशाब खुल जाये : ठंडी प्रकृति वाले रोगी को आधा चम्मच पिसी हुई अजवाइन शहद के साथ और गर्म प्रकृति वाले को आधा चम्मच पिसी हुई अजवाइन सिरके के साथ देने से बंद पेशाब आने लग जाता है।

स्त्री रोगों में : प्रसूता (जो स्त्री बच्चे को जन्म दे चुकी हो) को 1 चम्मच अजवाइन और 2 चम्मच गुड़ मिलाकर दिन में 3 बार खिलाने से कमर का दर्द दूर हो जाता है और गर्भाशय की शुद्धि होती है। साथ ही साथ भूख लगती है व शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा मासिक धर्म की अनेक परेशानियां इसी प्रयोग से दूर हो जाती हैं। नोट : प्रसूति (डिलीवरी) के पश्चात योनिमार्ग में अजवाइन की पोटली रखने से गर्भाशय में जीवाणुओं का प्रवेश नहीं हो पाता और जो जीवाणु प्रवेश कर जाते हैं वे नष्ट हो जाते है। जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए योनिमार्ग से अजवाइन का धुंआ भी दिया जाता है तथा अजवाइन का तेल सूजन पर लगाया जाता है।

खांसी : एक चम्मच अजवाइन को अच्छी तरह चबाकर गर्म पानी का सेवन करने से लाभ होता है।

रात में लगने वाली खांसी को दूर करने के लिए पान के पत्ते में आधा चम्मच अजवाइन लपेटकर चबाने और चूस-चूसकर खाने से लाभ होगा।

1 ग्राम साफ की हुई अजवाइन को लेकर रोजाना रात को सोते समय पान के बीडे. में रखकर खाने से खांसी में लाभ मिलता है।

जंगली अजवाइन का रस, सिरका तथा शहद को एक साथ मिलाकर रोगी को रोजाना दिन में 3 बार देने से पुरानी खांसी, श्वास, दमा एवं कुक्कुर खांसी (हूपिंग कफ) के रोग में लाभ होता है।

अजवाइन के रस में एक चुटकी कालानमक मिलाकर सेवन करें। और ऊपर से गर्म पानी पी लें। इससे खांसी बंद हो जाती है।

अजवाइन के चूर्ण की 2 से 3 ग्राम मात्रा को गर्म पानी या गर्म दूध के साथ दिन में 2 या 3 बार लेने से भी जुकाम सिर दर्द, नजला, मस्तकशूल (माथे में दर्द होना) और कृमि (कीड़ों) पर लाभ होता है।

कफ अधिक गिरता हो, बार-बार खांसी चलती हो, ऐसी दशा में अजवाइन का बारीक पिसा हुआ चूर्ण लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग, घी 2 ग्राम और शहद 5 ग्राम में मिलाकर दिन में 3 बार खाने से कफोत्पित्त कम होकर खांसी में लाभ होता है।

खांसी तथा कफ ज्वर यानि बुखार में अजवाइन 2 ग्राम और छोटी पिप्पली आधा ग्राम का काढ़ा बनाकर 5 से 10 मिलीलीटर की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।

1 ग्राम अजवाइन रात में सोते समय मुलेठी 2 ग्राम, चित्रकमूल 1 ग्राम से बने काढ़े को गर्म पानी के साथ सेवन करें।

5 ग्राम अजवाइन को 250 मिलीलीटर पानी में पकायें, आधा शेष रहने पर, छानकर नमक मिलाकर रात को सोते समय पी लें।

खांसी पुरानी हो गई हो, पीला दुर्गन्धमय कफ गिरता हो और पाचन क्रिया मन्द पड़ गई हो तो अजवाइन का जूस दिन में 3 बार पिलाने से लाभ होता है।

बिस्तर में पेशाब करना : सोने से पूर्व 1 ग्राम अजवाइन का चूर्ण कुछ दिनों तक नियमित रूप से खिलाएं।

पाचक चूर्ण : अजवाइन और हर्र को बराबर मात्रा में लेकर हींग और सेंधानमक स्वादानुसार मिलाकर अच्छी तरह से पीसकर सुरक्षित रख लें। भोजन के पश्चात 1-1 चम्मच गर्म पानी से लें।

बहुमूत्र (बार-बार पेशाब आना) : 2 ग्राम अजवाइन को 2 ग्राम गुड़ के साथ कूट-पीसकर, 4 गोली बना लें, 3-3 घंटे के अंतर से 1-1 गोली पानी से लें। इससे बहुमूत्र रोग दूर होता है।

अजवाइन और तिल मिलाकर खाने से बहुमूत्र रोग ठीक हो जाता है।

गुड़ और पिसी हुई कच्ची अजवाइन समान मात्रा में मिलाकर 1-1 चम्मच रोजाना 4 बार खायें। इससे गुर्दे का दर्द भी ठीक हो जाता है।

जिन बच्चे को रात में पेशाब करने की आदत होती है उन्हें रात में लगभग आधा ग्राम अजवाइन खिलायें।

मुंहासे : 2 चम्मच अजवाइन को 4 चम्मच दही में पीसकर रात में सोते समय पूरे चेहरे पर मलकर लगाएं और सुबह गर्म पानी से साफ कर लें।

दांत दर्द : पीड़ति दांत पर अजवाइन का तेल लगाएं। 1 घंटे बाद गर्म पानी में 1-1 चम्मच पिसी अजवाइन और नमक मिलाकर कुल्ला करने से लाभ मिलता है।

अजवाइन और बच बराबर मात्रा में लेकर बारीक पीसकर लुगदी (पेस्ट) बना लें। आधा ग्राम लुग्दी (पेस्ट) रात को सोते समय दाढ़ (जबड़े) के नीचे दबाकर सो जाएं। इससे दांतों के कीड़े मर जाते हैं तथा दर्द खत्म हो जाता है।

अपच, मंदाग्नि में (पाचन शक्ति में) : भोजन के बाद नियमित रूप से 1 चम्मच सिंकी हुई व सेंधानमक लगी अजवाइन चबाएं।

जूं, लीख : 1 चम्मच फिटकिरी और 2 चम्मच अजवाइन को पीसकर 1 कप छाछ में मिलाकर बालों की जड़ों में सोते समय लगाएं और सुबह धोयें। इससे सिर में होने वाली जूं और लीखें मरकर बाहर निकल जाती हैं।

पुराना बुखार, मन्द ज्वर : 15 ग्राम की मात्रा में अजवाइन लेकर सुबह के समय मिट्टी के बर्तन में 1 कप पानी में भिगो दें। इस बर्तन को दिन में मकान में और रात को खुले आसमान के नीचे ओस में रखें। दूसरे दिन इसको सुबह के समय छानकर इस पानी को पी लें। यह प्रयोग लगातार 15 दिनों तक करें। यदि बुखार पूरी तरह से न उतरे तो यह प्रयोग कुछ दिनों तक और भी चालू रखा जा सकता है। इस उपचार से पुराना मन्द ज्वर ठीक हो जाता है और यदि यकृत और तिल्ली बढ़ी हुई हो तो वह भी ठीक हो जाते हैं साथ ही साथ भूख खुलकर लगने लगती है।

बांझपन (गर्भाशय के न ठहरने) पर : मासिक-धर्म के आठवें दिन से नित्य अजवाइन और मिश्री 25-25 ग्राम की मात्रा में लेकर 125 ग्राम पानी में रात्रि के समय एक मिट्टी के बर्तन में भिगों दें तथा प्रातःकाल के समय ठंडाई की भांति घोंट-पीसकर सेवन करें। भोजन में मूंग की दाल और रोटी बिना नमक की लें। इस प्रयोग से गर्भ धारण होगा।

खटमल : चारपाई के चारों पायों पर अजवाइन की 4 पोटली बांधने से खटमल भाग जाते हैं।

मच्छर : अजवाइन पीसकर बराबर मात्रा में सरसों के तेल में मिलाकर उसमें गत्ते के टुकड़ों को तर (भिगो) करके कमरे में चारों कोनों में लटका देने से मच्छर कमरे से भाग जाते हैं।

भोज्य पदार्थों के लिए : पूरी, परांठे आदि कोई भी पकवान हो, उसको अजवाइन डालकर बनाएं। इस प्रकार के भोजन को खाने से पाचनशक्ति बढ़ती है और खाई गई चीजें आसानी से पच जाती हैं। पेट के पाचन सम्बन्धी रोगों में अजवाइन लाभदायक है।

सिर में दर्द होने पर : 200 से 250 ग्राम अजवाइन को गर्म कर मलमल के कपड़े में बांधकर पोटली बनाकर तवे पर गर्म करके सूंघने से छींके आकर जुकाम व सिर का दर्द कम होता है।

अजवाइन को साफ कर महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 2 से 5 ग्राम की मात्रा में नस्वार की तरह सूंघने से जुकाम, सिर का दर्द, कफ का नासिका में रुक जाना एवं मस्तिष्क के कीड़ों में लाभ होता है।

अजवाइन और अरंड की जड़ को पीसकर माथे पर लेप करने से सिर का दर्द खत्म हो जाता है।

अजवाइन के पत्तों को पीसकर सिर पर लेप की तरह लगाने से सिर का दर्द दूर हो जाता है।

कर्णशूल (कान दर्द) : 10 ग्राम अजवाइन को 50 मिलीलीटर तिल के तेल में पकाकर सहने योग्य गर्म तेल को 2-2 बूंद कान में डालने से कान का दर्द मिट जाता है।

पेट में पानी की अधिकता होना (जलोदर) : गाय के 1 लीटर पेशाब में अजवाइन लगभग 200 ग्राम को भिगोकर सुखा लें, इसको थोड़ी-थोड़ी मात्रा में गौमूत्र के साथ खाने से जलोदर मिटता है।

यही अजवाइन जल के साथ खाने से पेट की गुड़गुड़ाहट और खट्टी डकारें आना बंद हो जाती हैं।

अजवाइन को बारीक पीसकर उसमें थोड़ी मात्रा में हींग मिलाकर लेप बनाकर पेट पर लगाने से जलोदर एवं पेट के अफारे में लाभ होता है।

अजवाइन, सेंधानमक, जीरा, चीता और हाऊबेर को बराबर मात्रा में मिलाकर छाछ पीने से जलोदर में लाभ होता है।

अजवाइन, हाऊबेर, त्रिफला, सोंफ, कालाजीरा, पीपरामूल, बनतुलसी, कचूर, सोया, बच, जीरा, त्रिकुटा, चोक, चीता, जवाखार, सज्जी, पोहकरमूल, कूठ, पांचों नमक और बायबिण्डग को 10-10 ग्राम की बराबर मात्रा में, दन्ती 30 ग्राम, निशोथ और इन्द्रायण 20-20 ग्राम और सातला 40 ग्राम को मिलाकर अच्छी तरह बारीक पीसकर चूर्ण बनाकर बनाकर रख लें। यह चूर्ण सभी प्रकार के पेट की बीमारियों में जैसे अजीर्ण, मल, गुल्म (पेट में वायु का रुकना), वातरोग, संग्रहणी (पेचिश), मंदाग्नि, ज्वर (बुखार) और सभी प्रकार के जहरों की बीमारियों को समाप्त करती है। इस बने चूर्ण को 3 से 4 गर्म की मात्रा में निम्न रोगों में इस प्रकार से लें, जैसे- पेट की बीमारियों में- छाछ के साथ, मल की बीमारी में- दही के साथ, गुल्म की बीमारियों में- बेर के काढ़े के साथ, अजीर्ण और पेट के फूलने पर- गर्म पानी के साथ तथा बवासीर में अनार के साथ ले सकते हैं।

सर्दी-जुकाम : पुदीने का चूर्ण 10 ग्राम, अजवाइन 10 ग्राम, देशी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डालकर अच्छी प्रकार से डॉट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीज गलकर पानी बन जायेगी। इसकी 3-4 बूंद रूमाल में डालकर सूंघने से या 8-10 बूंद गर्म पानी में डालकर भाप लेने से तुरंत लाभ होता है।

उल्टी-दस्त : पुदीने का चूर्ण 10 ग्राम, अजवाइन का चूर्ण 10 ग्राम, देशी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डालकर अच्छी प्रकार से डॉट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीज गलकर पानी बन जायेंगी। इसकी 4-5 बूंदें बताशे में या गर्म पानी में डालकर आवश्यकतानुसार देने से तुरंत लाभ होता है। एक बार में लाभ न हो तो थोड़ी-थोड़ी देर में दो-तीन बार दे सकते हैं।

अतिसार : पुदीने का चूर्ण 10 ग्राम, अजवाइन का चूर्ण 10 ग्राम, देशी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डालकर अच्छी प्रकार से डॉट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीज गलकर पानी बन जायेंगी। इसकी 5 से 7 बूंद बताशे में देने से मरोड़, पेट में दर्द, श्वास, गोला, उल्टी आदि बीमारियों में तुरंत लाभ होता है।

कीट दंश : पुदीने का चूर्ण 10 ग्राम, अजवाइन का चूर्ण 10 ग्राम, देशी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डालकर अच्छी प्रकार से डाट लगाकर धूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीजें गलकर पानी बन जायेंगी। इसको बिच्छू, ततैया, भंवरी, मधुमक्खी इत्यादि जहरीले कीटों के दंश पर भी लगाने से शांति मिलती है।

पेट की गड़बड़, पेट में दर्द, मंदाग्नि, अम्लपित्त : 3 ग्राम अजवाइन में आधा ग्राम कालानमक मिलाकर गर्म पानी के साथ फंकी लेने से पेट की गैस, पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

प्रसूता स्त्रियों (बच्चे को जन्म देने वाली महिला) को अजवाइन के लड्डू और भोजन के बाद अजवाइन 2 ग्राम की फंकी देनी चाहिए, इससे आंतों के कीड़े मरते हैं। पाचन होता है और भूख अच्छी लगती है एवं प्रसूत रोगों से बचाव होता है।

भोजन के बाद यदि छाती में जलन हो तो एक ग्राम अजवाइन और बादाम की 1 गिरी दोनों को खूब चबा-चबाकर या कूट-पीस कर खायें।

अजवाइन के रस की 2-2 बूंदे पान के बीड़े में लगाकर खायें।

अजवाइन 10 ग्राम, कालीमिर्च और सेंधानमक 5-5 ग्राम गर्म पानी के साथ 3-4 ग्राम तक सुबह-शाम सेवन करें।

अजवाइन 80 ग्राम, सेंधानमक 40 ग्राम, कालीमिर्च 40 ग्राम, कालानमक 40 ग्राम, जवाखार 40 ग्राम, कच्चे पपीते का दूध (पापेन) 10 ग्राम, इन सबको महीन पीसकर कांच के बरतन में भरकर 1 किलो नींबू का रस डालकर धूप में रख दें और बीच-बीच में हिलाते रहें। 1 महीने बाद जब बिल्कुल सूख जाये, तो सूखे चूर्ण को 2 से 4 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करने से मंदाग्नि शीघ्र दूर होती है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा अजीर्ण (अपच), संग्रहणी, अम्लपित्त इत्यादि रोगों में लाभ होता है।

शिशु के पेट में यदि दर्द हो और सफर (यात्रा) में हो तो बारीक स्वच्छ कपड़े के अंदर अजवाइन को रखकर, शिशु की मां यदि उसके मुंह में चटायें तो शिशु का पेट दर्द तुरंत मिट जाता है।

दस्त : जब मूत्र बंद होकर पतले-पतले दस्त हो, तब अजवाइन तीन ग्राम और नमक लगभग 500 मिलीलीटर ताजे पानी के साथ फंकी लेने से तुरंत लाभ होता है। अगर एक बार में आराम न हो तो 15-15 मिनट के अंतर पर 2-3 बार लें।

अजवाइन को पीसकर चूर्ण बनाकर लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग से लेकर लगभग आधा ग्राम की मात्रा में लेकर मां के दूध के साथ पिलाने से उल्टी और दस्त का आना बंद हो जाता है।

अजवाइन, कालीमिर्च, सेंधानमक, सूखा पुदीना और बड़ी इलायची आदि को पीसकर चूर्ण बना लें, फिर इसे एक चम्मच के रूप में पानी के साथ लेने से खाना खाने के ठीक से न पचने के कारण होने वाले दस्त यानी पतले ट्टी को बंद हो जाता है।

पेट के रोगों पर : एक किलोग्राम अजवाइन में एक लीटर नींबू का रस तथा पांचों नमक 50-50 ग्राम, कांच के बरतन में भरकर रख दें, व दिन में धूप में रख दिया करें, जब रस सूख जाये तब दिन में सुबह और शाम 1 से 4 ग्राम तक सेवन करने से पेट सम्बन्धी सब विकार दूर होते हैं।

1 ग्राम अजवाइन को इन्द्रायण के फलों में भरकर रख दें, जब वह सूख जाये तब उसे बारीक पीसकर इच्छानुसार काला नमक मिलाकर रख लें, इसे गर्म पानी से सेवन करने से लाभ मिलता हैं।

अजवाइन चूर्ण तीन ग्राम सुबह-शाम गर्म पानी से लें।

1.5 लीटर पानी को आंच पर रखें, जब वह खूब उबलकर 1 लीटर रह जाये तब नीचे उतारकर आधा किलोग्राम पिसी हुई अजवाइन डालकर ढक्कन बंद कर दें। जब ठंडा हो जाये तो छानकर बोतल में भरकर रख लें। इसे 50-50 ग्राम दिन में सुबह, दोपहर और शाम को सेवन करें

पेट में वायु गैस बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 मिलीलीटर मट्ठे में 2 ग्राम अजवाइन और आधा ग्राम कालानमक मिलाकर आवश्यकतानुसार सेवन करें।

बवासीर (अर्श) : अजवाइन देशी, अजवाइन जंगली और अजवाइन खुरासानी को बराबर मात्रा में लेकर महीन पीस लें और मक्खन में मिलाकर मस्सों पर लगायें। इसको लगाने से कुछ दिनों में ही मस्से सूख जाते हैं।

अजवाइन और पुराना गुड़ कूटकर 4 ग्राम रोज सुबह गर्म पानी के साथ लें।

अजवाइन के चूर्ण में सेंधानमक और छाछ (मट्ठा) मिलाकर पीने से कोष्ठबद्धकता (कब्ज) दूर होती है।

दोपहर के भोजन के बाद एक गिलास छाछ में डेढ़ ग्राम (चौथाई चम्मच) पिसी हुई अजवाइन और एक ग्राम सैंधानमक मिलाकर पीने से बवासीर के मस्से दोबारा नहीं होते हैं।

प्रमेह (वी*र्य विकार) : अजवाइन 3 ग्राम को 10 मिलीलीटर तिल के तेल के साथ दिन में सुबह, दोपहर और शाम सेवन करने से लाभ होता है।

गुर्दे का दर्द : 3 ग्राम अजवाइन का चूर्ण सुबह-शाम गर्म दूध के साथ लेने से गुर्दे के दर्द में लाभ होता है।

दाद, खाज-खुजली : त्वचा के रोगों और घावों पर इसका गाढ़ा लेप करने से दाद, खुजली, कीडेयुक्त घाव एवं जले हुए स्थान में लाभ होता है।

अजवाइन को उबलते हुए पानी में डालकर घावों को धोने से दाद, फुन्सी, गीली खुजली आदि त्वचा के रोगों में लाभ होता है।

मासिक-धर्म सम्बंधी विकार : अजवाइन 10 ग्राम और पुराना गुड़ 50 ग्राम को 200 मिलीलीटर पानी में पकाकर सुबह-शाम सेवन करने से गर्भाशय का मल साफ होता है और रुका हुआ मासिक-धर्म फिर से जारी हो जाता है।

अजवाइन, पोदीना, इलायची व सौंफ इन चारों का रस समान मात्रा में लेकर लगभग 50 मिलीलीटर की मात्रा में मासिक-धर्म के समय पीने से आर्तव (माहवारी) की पीड़ा नष्ट हो जाती है।

3 ग्राम अजवाइन चूर्ण को सुबह-शाम गर्म दूध के साथ सेवन करने से मासिक धर्म की रुकावट दूर होती है और मासिकस्राव खुलकर आता है।

शराब की आदत : शराबियों को जब शराब पीने की इच्छा हो तथा रहा न जाये तब अजवाइन 10-10 ग्राम की मात्रा में 2 या 3 बार चबायें।

आधा किलो अजवाइन 400 मिलीलीटर पानी में पकायें, जब आधा से भी कम शेष रहे तब छानकर शीशी में भरकर फ्रिज में रखें, भोजन से पहले एक कप काढ़े को शराबी को पिलायें जो शराब छोड़ना चाहते हैं और छोड़ नहीं पाते, उनके लिए यह प्रयोग एक वरदान के समान है।

मूत्रकृच्छ (पेशाब करने में कष्ट) होना : 3 से 6 ग्राम अजवाइन की फंकी गर्म पानी के साथ लेने से मूत्र की रुकावट मिटती है।

10 ग्राम अजवाइन को पीसकर लेप बनाकर पेडू पर लगाने से अफारा मिटता है, शोथ कम होता है तथा खुलकर पेशाब होता है।

बुखार : अजीर्ण की वजह से उत्पन्न हुए बुखार में 10 ग्राम अजवाइन, रात को 125 मिलीलीटर पानी में भिगों दें, प्रातःकाल मसल-छानकर पिलाने से बुखार आना बंद हो जाता है।

शीतज्वर में 2 ग्राम अजवाइन सुबह-शाम खिलायें।

बुखार की दशा में यदि पसीना अधिक निकले तब 100 से 200 ग्राम अजवाइन को भूनकर और महीन पीसकर पूरे शरीर पर लगायें।

शेष अगले अंक में....

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंकशास्त्र में पिनैकल्स (Pinnacles) और चैलेंजेस (Challenges)

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

अंकविज्ञान के दो अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ हैं — पिनैकल (Pinnacles) और चैलेंजेस (Challenges)।
जहाँ पिनैकल जीवन में मिलने वाले अवसर, उपलब्धियाँ और ऊँचाइयों को दर्शाते हैं, वहीं चैलेंजेस उन परीक्षाओं और बाधाओं का संकेत देते हैं जिनके माध्यम से आत्मा का विकास होता है।
जीवन के चार अलग-अलग, क्रमबद्ध जीवन चक्रों (फेज़) और उनसे जुड़े अवरोधों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास और जीवन की प्रमुख थीम्स को परिभाषित करते हैं।
पिनैकल्स जहाँ अवसरों और वातावरण (environmental atmosphere) को दर्शाते हैं, वहीं चैलेंजेस उन पाठों (lessons) को दिखाते हैं जिन्हें पार करना आवश्यक होता है।
ये चक्र सामान्यतः जन्मतिथि से गणना किए जाते हैं और व्यक्ति की प्रगति को दिशा देते हैं, जिनके परिवर्तन अक्सर जीवन में बड़े बदलाव लेकर आते हैं।

आपकी जीवन यात्रा का छिपा हुआ ब्लूप्रिंट (The Hidden Blueprint of Your Life's Journey)
हर जीवन अध्यायों में खुलता है — अलग-अलग चरण, जो परिवर्तन, चुनौती, विकास और अवसर से चिह्नित होते हैं। फिर भी, कई लोगों के लिए ये परिवर्तन अचानक या बोझिल लगते हैं।
अगर आपके जीवन के टर्निंग पॉइंट्स के पीछे कोई गहरा पैटर्न हो तो?
अंकशास्त्र इसी प्रश्न की कुंजी प्रदान करता है। इस प्राचीन आध्यात्मिक विज्ञान के केंद्र में एक शक्तिशाली अवधारणा है —

पिनैकल साइकिल्स (Pinnacle Cycles):-

पिनैकल साइकिल्स क्या हैं?
ये चार प्रमुख जीवन काल, जो आपकी जन्मतिथि से निकाले जाते हैं, आपके भाग्य को चरणों में प्रकट होने का संकेत देते हैं।
ये पारंपरिक अर्थों में भविष्यवाणी नहीं हैं, बल्कि ऊर्जात्मक थीम्स और आत्मा के आमंत्रण (soul invitations) हैं, जो समय के साथ आपके विकास का मार्गदर्शन करते हैं।
हर पिनैकल साइकिल आपके व्यक्तिगत जीवन की पटकथा (life script) का एक अध्याय होती है।

चार पिनैकल चक्र
पहला पिनैकल – आपके प्रारंभिक जीवन की नींव बनाता है।
दूसरा पिनैकल – आपको व्यक्तिगत और व्यावसायिक विस्तार की ओर ले जाता है।
तीसरा पिनैकल – आपको परिपक्व होने और अपने गहरे सत्य के साथ संरेखित होने की चुनौती देता है।
चौथा पिनैकल – समापन प्रदान करता है — आपकी विरासत, ज्ञान और संतुष्टि।
पिनैकल साइकिल्स को समझने से आपको क्या स्पष्टता मिलती है?
आपके जीवन के कुछ समय आसान और कुछ कठिन क्यों रहे?
कब परिवर्तन शुरू करना चाहिए और कब स्थिर रहना चाहिए?
आने वाले वर्षों में कौन-सी व्यक्तिगत थीम्स, सबक और अवसर आपका इंतज़ार कर रहे हैं?

जीवन के चार मौसम और पिनैकल्स:-
पिनैकल्स जीवन के चार दीर्घकालिक चक्र होते हैं, जो जीवन के "मौसमों" का प्रतिनिधित्व करते हैं —
वसंत (Spring) – प्रारंभिक जीवन
ग्रीष्म (Summer)
शरद (Autumn)
शीत (Winter) – वृद्धावस्था
1st Pinnacle (पहला पिनैकल)
प्रारंभिक जीवन:-
इस पिनैकल की अवधि जन्म से लगभग 30–35 वर्ष तक होती है (यह व्यक्ति की जन्मतिथि पर निर्भर करती है)। यह चरण विकास और नींव निर्माण का होता है।

2nd & 3rd Pinnacles (दूसरा और तीसरा पिनैकल):-
इन दोनों की अवधि लगभग 9-9 वर्ष होती है। यह मध्य जीवन का समय होता है। करियर, परिवार और परिपक्वता का चरण।

4th Pinnacle (चौथा पिनैकल):-
यह व्यक्ति की पूरी जीवन अवधि तक रहता है। यह चरण बुद्धिमत्ता, अनुभवों के एकीकरण और स्थिरता का होता है।

पिनैकल्स का महत्व (Significance):-
1. सफलता का रोडमैप
पिनैकल्स यह मार्गदर्शन देते हैं कि:
कब पहल करनी है
कब नींव मजबूत करनी है
और कब विस्तार करना है
2. थीम की पहचान
अपने पिनैकल नंबर (1–9 या मास्टर नंबर) को जानकर,
आप उस समय की ऊर्जा और वाइब को समझ सकते हैं।
उदाहरण:
1 (सूर्य) पिनैकल – स्वतंत्रता और नई शुरुआत।
6 (शुक्र) पिनैकल – परिवार, जिम्मेदारी और संबंधों पर फोकस।

अंकशास्त्र में चैलेंजेस (Numerology Challenges):-
चैलेंज नंबर वे विशेष, दोहराए जाने वाले अवरोध होते हैं, जिन्हें पार करना व्यक्तिगत, आध्यात्मिक और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक होता है।
ये कोई नियत असफलताएँ नहीं हैं, बल्कि ऐसे जीवन पाठ हैं जो व्यक्ति को विशेष कौशल सिखाने के लिए बनाए गए हैं।

चार प्रकार के चैलेंज:-
पहला चैलेंज (प्रारंभिक):-
जन्म से लगभग 30–35 वर्ष तक (जन्मतिथि पर निर्भर)।
दूसरा चैलेंज (मध्य):-
इसकी अवधि 9 वर्ष होती है।
तीसरा / मुख्य चैलेंज (मिड-लाइफ):-
इसकी अवधि भी 9 वर्ष होती है।
यह मध्य आयु में सबसे अधिक तीव्रता से महसूस होता है।
चौथा चैलेंज (अंतिम):-
जीवन के उत्तरार्ध में और पूरे जीवनकाल तक गहराई से महसूस होता है।

चैलेंजेस का महत्व (Significance):-
कर्मिक सबक:-
चैलेंजेस उन कमजोर क्षेत्रों या कर्मिक पाठों को उजागर करते हैं
जिन्हें व्यक्ति के व्यक्तित्व में समाहित करना आवश्यक होता है।
स्व-सुधार (Self-Correction)
अपने चैलेंज नंबर को समझकर, व्यक्ति असुरक्षा, अधीरता, नियंत्रण की प्रवृत्ति जैसी आदतों पर सचेत रूप से कार्य कर सकता है और अपनी उच्च क्षमता को खोल सकता है।

पिनैकल्स और चैलेंजेस: अंतर और समन्वय:-
पिनैकल्स = अवसर और वातावरण
→ आपको क्या अनुभव करना या प्राप्त करना है।
चैलेंजेस = बाधाएँ और चरित्र विकास→
सफल होने के लिए आपको किन बातों पर काम करना है।

पिनैकल और चैलेंज का संयुक्त प्रभाव:-
यदि कोई पिनैकल नंबर चुनौतीपूर्ण या तीव्र है, तो संबंधित चैलेंज नंबर को समझकर उस पिनैकल को काफी सहजता से जिया जा सकता है।
इससे जीवन अधिक सचेत और सक्रिय बनता है।
जब हम केवल पिनैकल देखते हैं, तो हमें अवसर दिखते हैं।
जब केवल चैलेंज देखते हैं, तो कठिनाइयाँ दिखती हैं।
लेकिन दोनों को साथ समझने से जीवन का वास्तविक रोडमैप स्पष्ट होता है:-
☞ उच्च पिनैकल + कठिन चैलेंज = महान उपलब्धियाँ लेकिन कठिन संघर्ष।
☞ साधारण पिनैकल + हल्के चैलेंज = स्थिर, शांत और संतुलित जीवन।
यदि पिनैकल अनुकूल हो लेकिन जीवन कठिन लगे तो क्यों?
क्योंकि उस समय व्यक्ति अपना चैलेंज अवॉयड कर रहा होता है।
अंकशास्त्र कहता है — जब तक चैलेंज स्वीकार नहीं किया जाता, पिनैकल का पूरा फल नहीं मिलता।
उदाहरण:-
यदि आप 6 पिनैकल (जिम्मेदारी और परिवार पर फोकस) में हैं
और साथ ही 6 चैलेंज भी चल रहा है, तो आपको जिम्मेदारियों का अत्यधिक बोझ महसूस हो सकता है।
यहाँ जीवन का सबक है — सिर्फ बोझ उठाना नहीं, बल्कि संतुलन सीखना।

यह क्यों महत्वपूर्ण है? (Why This Matters?):-
अधिकांश लोग जीवन में उन पवित्र लयों (sacred rhythms) से अनजान रहते हैं जो उन्हें दिशा दे रही होती हैं।
लेकिन जब आप अपने पिनैकल साइकिल्स और आने वाले चैलेंजेस को समझ लेते हैं, तो आपको एहसास होता है कि जीवन में कुछ भी आकस्मिक नहीं है — हर अनुभव के पीछे एक दैवी बुद्धि (divine intelligence) कार्य कर रही है।
यह ज्ञान आपको:-
आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने
बेहतर निर्णय लेने
और अपने जीवन के सही समय का सम्मान करने की शक्ति देता है।
आप अपनी योजनाओं के साथ पहले से तैयार रहते हैं, अपनी क्षमता और चुनौतियों से अवगत होते हैं, और इसी कारण वर्तमान जीवन परिस्थितियों में सही कदम उठाकर सफलता की यात्रा सहजता से तय कर पाते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion):-
पिनैकल हमें बताते हैं कहाँ पहुँचना है,
चैलेंज बताते हैं कैसे पहुँचना है।
अंकशास्त्र में यही संतुलन जीवन को दिशा देता है।
जो व्यक्ति अपने पिनैकल और चैलेंज को समझकर जीवन जीता है, वह भाग्य का मोहताज नहीं रहता, बल्कि अपने भाग्य का निर्माता बन जाता है।

चण्डी पाठ किए बिना भी वही फल सिद्धकुंजिकास्तोत्र

पिंकी कुंडू

सिद्धकुंजिकास्तोत्र केवल एक स्तोत्र नहीं है, बल्कि शक्ति-साधना की वह कुंजी है, जो दुर्गा सप्तशती के गूढ़ द्वार खोल देती है। "सिद्ध" यानी सिद्धि देने वाला और "कुंजिका" यानी ताला खोलने वाली चाबी — नाम ही अपने आप में बहुत कुछ कह देता है। जब यह समझ में आता है, तो एहसास होता है कि यह स्तोत्र वास्तव में सप्तशती का संक्षिप्त सार है।

पौराणिक कथा कहती है कि एक बार माता पार्वती के मन में भी वही प्रश्न उठा, जो आज कई साधकों के मन में आता है — इतना विस्तृत चण्डी पाठ, क्या इसका कोई सरल रहस्य नहीं? तब भगवान शिव ने यह गुप्त स्तोत्र प्रदान किया। उनका कथन सीधा और स्पष्ट था — जो इसे श्रद्धा से जपता है, वह संपूर्ण सप्तशती का फल पा लेता है।

इस स्तोत्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह कम शब्दों में अधिक शक्ति समेटे हुए है। सात सौ श्लोकों का भाव, बीज मंत्रों की ऊर्जा, कवच की सुरक्षा और कीलक - अर्गला की गहराई — सब कुछ इसमें अंतर्निहित है। यही कारण है कि व्यस्त जीवन जीने वाले गृहस्थों से लेकर गूढ़ तांत्रिक साधक तक, सभी के लिए इसका महत्व समान रूप से बढ़ जाता है।

सिद्धकुंजिकास्तोत्र का प्रभाव केवल बाहरी रक्षा तक सीमित नहीं है। यह भीतर से मन को स्थिर करता है, भय को शांत करता है और आत्मबल को जगाता है। इसमें नवदुर्गा की करुणा भी है और दश महाविद्याओं का सूक्ष्म स्पर्श भी। यह आकर्षण या वशीकरण की बात नहीं करता, बल्कि भीतर छिपे तेज और साहस को जाग्रत करता है।

पाठ की विधि भी जटिल नहीं है — बस भाव शुद्ध हो। नवरात्रि, विशेषकर गुप्त नवरात्रि, इसका समय और भी प्रभावशाली बना देती है। एक दीपक, एक आसन और शांत मन — इतना ही पर्याप्त है। गुरु के बिना भी इसका पाठ किया जा सकता है, यदि श्रद्धा और मर्यादा बनी रहे।

नियमित पाठ करने वालों का अनुभव अक्सर एक जैसा होता है — जीवन की अदृश्य बाधाएँ धीरे - धीरे हटने लगती हैं, मन में अकारण स्थिरता आती है और माँ दुर्गा की उपस्थिति केवल विश्वास नहीं, अनुभूति बन जाती है। शायद यही कारण है कि इसे "कुंजी" कहा गया है — क्योंकि यह बाहर नहीं, अंदर का द्वार खोलती है।

सृष्टि में सबसे शक्तिशाली तत्व कौन सा है

पिंकी कुंडू

एक बार स्वर्ग लोक में देवताओं के बीच चर्चा छिड़ी कि सृष्टि में सबसे शक्तिशाली तत्व कौन सा है।

कोई ज्ञान को बड़ा कहता, तो कोई पराक्रम को तभी देवर्षि नारद ने सुझाव दिया कि इस प्रश्न का उत्तर केवल कैलाश पर ही मिल सकता है।

जब सभी देवता कैलाश पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि संपूर्ण ब्रह्मांड शांत है और भगवान शिव अपनी आँखें बंद किए ध्यान मग्न हैं। माता पार्वती उनके समीप ही बैठी थीं। नारद मुनि के अनुरोध पर शिव जी ने अपनी आँखें खोलीं और मुस्कुराते हुए कहा, ҙशक्ति के बिना शिव शव है, और शिव के बिना शक्ति का कोई आधार नहीं।

* सृष्टि का आधार केवल इन दोनों का संतुलन है।"

इसे सिद्ध करने के लिए शिव और शक्ति ने नृत्य आरंभ किया.

* भगवान शिव ने 'तांडव' नृत्य शुरू किया, जो ब्रह्मांड की ऊर्जा, विनाश और पुनर्निर्माण का प्रतीक है।

* उनके हर कदम से धरती और आकाश गूंजने लगे।

* शिव के उग्र नृत्य को संतुलित करने के लिए माता पार्वती ने अत्यंत कोमल और सुंदर 'लास्य' नृत्य किया।

* उनके नृत्य में प्रेम, सृजन और ममता की झलक थी

* जैसे-जैसे नृत्य आगे बढ़ा, शिव और शक्ति एक-दूसरे की गति में समाहित हो गए।

* यह नृत्य देख देवता समझ गए कि संसार केवल युद्ध या केवल शांति से नहीं, बल्कि दोनों के सुंदर तालमेल से चलता है.

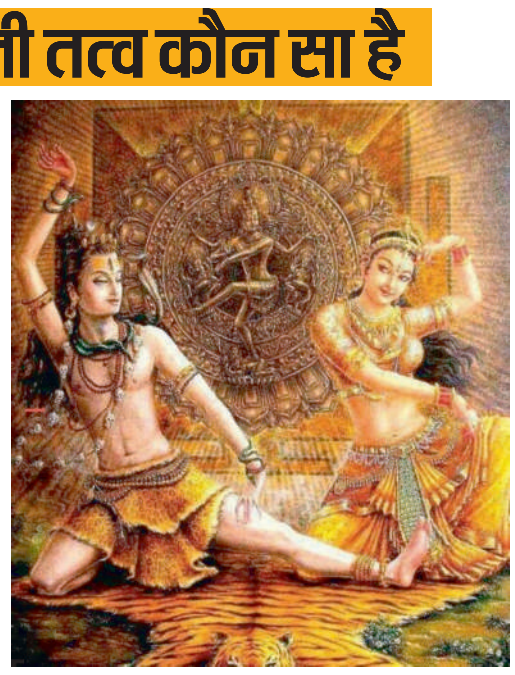

नारद का अहंकार

पिंकी कुंडू

एक बार की बात है, वीणा बजाते हुए नारद मुनि भगवान श्रीराम के द्वार पर पहुँचे। नारायण नारायण !!
नारदजी ने देखा कि द्वार पर हनुमान जी पहरा दे रहे है।

हनुमान जी ने पूछाः नारद मुनि! कहाँ जा रहे हो?

नारदजी बोलेः मैं प्रभु से मिलने आया हूँ। नारदजी ने हनुमानजी से पूछा प्रभु इस समय क्या कर रहे है?

हनुमानजी बोलेः पता नहीं पर कुछ बही खाते का काम कर रहे है, प्रभु बही खाते में कुछ लिख रहे है।

नारदजीः अच्छा? क्या लिखा पढ़ी कर रहे है?

हनुमानजी बोलेः मुझे पता नहीं मुनिवर आप खुद ही देख आना।

नारद मुनि गए प्रभु के पास और देखा कि प्रभु कुछ लिख रहे है।

नारद जी बोलेः प्रभु आप बही खाते का काम कर रहे है? ये काम तो किसी मुनीम को दे दीजिए।

प्रभु बोलेः नहीं नारद, मेरा काम मुझे ही करना पड़ता है। ये काम मैं किसी और को नही सौंप सकता।

नारद जीः अच्छा प्रभु ऐसा क्या काम है? ऐसा आप इस बही खाते में क्या लिख रहे हो?

प्रभु बोलेः तुम क्या करोगे देखकर, जाने दो।

नारद जी बोलेः नही प्रभु बताईये ऐसा आप इस बही खाते में क्या लिखते हैं?

प्रभु बोलेः नारद इस बही खाते में उन भक्तों के नाम है जो मुझे हर पल भजते हैं। मैं उनकी नित्य हाजिरी लगाता हूँ।

नारद जीः अच्छा प्रभु जरा बताईये तो मेरा नाम कहाँ पर है? नारदमुनि ने बही खाते को खोल कर देखा तो उनका नाम सबसे ऊपर था। नारद जी को गर्व हो गया कि देखो मुझे मेरे प्रभु सबसे ज्यादा भक्त मानते है। पर नारद जी ने देखा कि हनुमान जी का नाम उस बही खाते में कहीं नही है? नारद जी सोचने लगे कि हनुमान जी तो प्रभु श्रीराम जी के खास भक्त है फिर उनका नाम, इस बही खाते में क्यों नही है? क्या प्रभु उनको भूल गए है?

नारद मुनि आये हनुमान जी के पास बोलेः हनुमान! प्रभु के बही खाते में उन सब भक्तों के नाम हैं जो नित्य प्रभु को भजते हैं पर आप का नाम उस में कहीं नहीं है?

हनुमानजी ने कहाः मुनिवर! होगा, आप ने शायद ठीक से नहीं देखा होगा?

नारदजी बोलेः नहीं नहीं मैंने ध्यान से देखा पर आप का नाम कहीं नही था।

अगर आपको कथा संग्रह की पोस्ट पसंद आती है तो आज ही सब्सक्राइब करें कथा संग्रह

हनुमानजी ने कहाः अच्छा कोई बात नहीं। शायद प्रभु ने मुझे इस लायक नही समझा होगा जो मेरा नाम उस बही खाते में लिखा जाये। पर नारद जी प्रभु एक अन्य दैनंदिनी भी रखते है उसमें भी वे नित्य कुछ लिखते हैं।

नारदजी बोलेः अच्छा?

हनुमानजी ने कहाः हाँ!

नारदमुनि फिर गये प्रभु श्रीराम के पास और बोले प्रभु! सुना है कि आप अपनी अलग से दैनंदिनी भी रखते है! उसमें आप क्या लिखते हैं?

प्रभु श्रीराम बोलेः हाँ! पर वो तुम्हारे काम की नहीं है।

नारदजीः प्रभु! बताईये, मैं देखना चाहता हूँ कि आप उसमें क्या लिखते हैं?

प्रभु मुस्कुराये और बोलेः मुनिवर मैं इन में उन भक्तों के नाम लिखता हूँ जिन को मैं नित्य भजता हूँ।

नारदजी ने डायरी खोल कर देखा तो उसमें सबसे ऊपर हनुमान जी का नाम था। ये देख कर नारदजी का अभिमान टूट गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो भगवान को सिर्फ जीव्हा से भजते है उनको प्रभु अपना भक्त मानते हैं, और जो ह्रदय से भजते है उन भक्तों के वे स्वयं भक्त हो जाते हैं। ऐसे भक्तों को प्रभु अपनी ह्रदय रूपी विशेष सूची में रखते हैं।

भगवान विष्णु ने मारा था शुक्राचार्य की माँ को, बदले की भावना में बने दैत्यगुरु!

पिंकी कुंडू

शुक्राचार्य का नाम तो सबने सुना ही होगा, इतना सबको पता है की वो दैत्यों और राक्षसो के गुरु थे लेकिन ये कोई नही जानता होगा की वो कौन थे कहां से आये थे. आपको बताते है उनके ऋषि से दैत्यगुरु होने की कथा.
संत भृगु जिन्होंने अपनी होने वाली पत्नी को अपनी आधी उम्र देके फिर जीवित किया!
नवग्रहों में शुमार शुक्र ही शुक्राचार्य है, शुक्राचार्य ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ भृगु ऋषि के पुत्र है भृगुऋषि जिन्हे धरती के सब ऋषियों ने तीनो देवो (ब्रह्मा विष्णु महेश) में कौन सर्वश्रेष्ठ है जांचने की जिम्मेदारी, ऐसे प्रतापि ऋषि का पुत्र होके भी शुक्राचार्य दैत्यों के गुरु कैसे बन गए.
बाद बहुत पुरानी है भृगु ऋषि की दो पत्निया थी पहली दक्ष की कन्या थी और दूसरी थी ख्याति जिनसे उन्हें पुत्र मिला शुक्राचार्य. उनके नाम पे ही शुक्र का नाम शुक्रवार पड़ा, पिता ने उन्हें ब्रह्मऋषि अंगिरा के पास शिक्षा के लिए भेजा.
गर्भवती माँ का राक्षस ने किया उत्पीड़न तो समय से पहले पैदा हुए च्यवन! अंगरीशी ब्रह्मा के मानस पुत्रो में सर्वश्रेष्ठ थे, शुक्राचार्य के साथ उनके पुत्र बृहस्पति (जो बाद में देवो के गुरु बने) भी पढ़ते थे.
शुक्राचार्य बृहस्पति की तुलना में काफी होशियार थे, लेकिन फिर भी बृहस्पति को पुत्र होने के चलते शुक्र को ज्यादा अच्छी तरह से शिक्षा नही मिली. ईर्ष्या वश वो वहा से दीक्षा छोड़ के सनक ऋषियों और गौतम ऋषि से शिक्षा लेने लगे.
इस दौरान उन्हें प्रेरणा मिली और जब बृहस्पति देवो के गुरु बने तो ईर्ष्या वष वो दैत्यों के गुरु बने. दैत्य देवो से नित हारते थे इसलिए उन्होंने (शुक्राचार्य) शिव को प्रसन्न कर संजीवनी मन्त्र (मरे हुए को जीवित करने का मन्त्र) हेतु तपस्या में बैठ गए. लेकिन देवो ने मौके का फायदा उठा के दैत्यों का संघार आरम्भ कर दिया, शुक्राचार्य को तपस्या में जान दैत्य उनकी माता ख्याति की शरण में चले गए. ख्याति ने दैत्यों को शरण दी और जो भी देवता दैत्यों को मारने आता वो उसे मूर्छित कर देती या अपनी शक्ति से लकवाग्रस्त.
ऐसे में दैत्य बलशाली हो गए और धरती पर पाप बढ़ने लगा, धरती पे धर्म की स्थापना के लिए भगवान विष्णु ने शुक्राचार्य की माँ और भृगु ऋषि की पत्नी ख्याति का सुदर्शन चक्र से सर काट दैत्यों के संघार में देवो की और समूचे जगत की मदद की. शुक्राचार्य को बेहद खेद हुआ और वो शिव की तपस्या में और कड़ाई से लग गए
आखिर कार उन्होंने संजीवनी मन्त्र पाया और दैत्यों के राज्य को पुन: स्थापित कर अपनी माँ का बदला लिया, तब से शुक्राचार्य का भगवान विष्णु से छत्तीस का आंकड़ा हो गया और वो उनके शत्रु बन गए. भृगु ऋषि ने भगवान विष्णु को इस पर श्राप दिया की तुम्हे बार बार पृथ्वी में जाके गर्भ में रह कष्ट भोगना पड़ेगा चूँकि उन्होंने एक स्त्री का वध किया.
उससे पहले भगवान प्रकट हो के ही अवतार लेते थे जैसे की वराह, मतस्य, कुर्मा और नरसिंघ लेकिन उसके बाद उन्होंने परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध रूप में जन्म लिया तो माँ के पेट में कोख में रहने की पीड़ा झेलनी पड़ी थी!

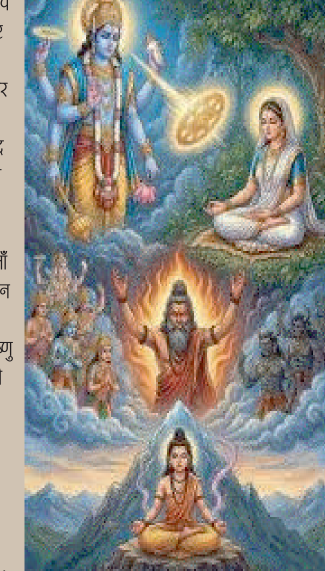

जब संत मार्गदर्शन करते हैं तो कोई लक्ष्य असंभव नहीं होता : बेदी

225 बेड का आयुर्वेद चिकित्सालय मानवता की सेवा का बनेगा मंदिर बोले -- कैबिनेट मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 1 फरवरी। हरियाणा सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने रविवार को गांव माजरा दूबलधन स्थित तपोभूमि जटेला धाम स्वामी नितानंद जी महाराज के आश्रम में आयोजित पूर्णिमा महोत्सव एवं सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री श्री बेदी ने उपस्थित जनों को पूर्णिमा दिवस तथा संत शिरोमणि गुरु रविदास जी महाराज के प्रकाशोत्सव की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि स्वामी नितानंद जी का यह धाम अध्यात्मिक चेतना से जोड़ता है। जटेला धाम की यह पवित्र तपोभूमि संतों के आशीर्वाद से अध्यात्मिक केंद्र के रूप में पहचान स्थापित कर रही है।

उन्होंने कहा कि जब संत मार्गदर्शन करते हैं तो समाज सही दिशा में चलता है और कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। स्वामी नितानंद जी महाराज जैसे महान संतों की बदौलत ही मजबूत भारत हमें मिला है। उन्होंने कहा कि स्वामी नितानंद महाराज जी के जीवन मूल्यों को धारण करते हुए समाज के हर वर्ग को आगे आना चाहिए। स्वामी नितानंद मिशन फाउंडेशन समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के मिशन में निरंतर कार्य कर रहा है।

मानवता की सेवा का आश्रम बनेगा चिकित्सा संस्थान

कैबिनेट मंत्री श्री बेदी ने कहा कि स्वामी नितानंद मिशन फाउंडेशन के सान्निध्य में बन रहा यह 225 बेड का आयुर्वेद चिकित्सालय मानवता की सेवा का एक मंदिर है। इस संस्थान के बनने के बाद क्षेत्र के लोगों को चिकित्सा सुविधा मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित होने वाले इस संस्थान से झज्जर ही नहीं बल्कि साथ लगते क्षेत्रों को भी स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। हमारी सरकार निरंतर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार कर रही है। हर जिले में आधुनिक सुविधाओं से लैस अस्पताल होगा।

इस दौरान उन्होंने इस नेक कार्य में अपना तन मन धन से योगदान देने वालों को सम्मानित किया।

कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने कहा कि जटेला धाम समाज कल्याण कि दिशा में लगातार कार्य किए जा रहा है। सामाजिक समरसता बढ़ाने के लिए व प्रत्येक वर्ग के विकास के लिए धाम द्वारा लगातार कार्य किया जा रहा है। स्वामी नितानंद जी एक महान संत थे जिनकी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का महान कार्य जटेला धाम के महंत स्वामी राजेंद्र दास द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने निर्माणाधीन आयुर्वेदिक अस्पताल के लिए अपने ऐच्छिक कोष से 11 लाख रुपए देने की घोषणा की।

संतो के मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनाएं नागरिक : राजेंद्र दास जी महाराज

महंत राजेंद्र दास महाराज जी ने कहा कि स्वामी नितानंद एक महान स्तंभ थे जो समाज को प्रेरणा देता है। ऐसे संत अच्छे विचार देते हैं जिन पर चलते हुए समाज आगे बढ़ता है। उन्होंने कहा कि मानव देह संत की अपार कृपा से मिलती है। जन्म के बाद मनुष्य अशुभ कार्यों में लग जाता है जो कि अपने ही बुरे कर्म बना रहा है जिसके परिणाम भी बहुत ही गलत होंगे। उन्होंने कहा कि संतों के दिखाए मार्ग पर चलकर ही इस जीवन को सफल बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अगर संत नहीं होते तो समाज आज इतने बेहतर स्वरूप में नहीं होता। बेहतर समाज के निर्माण में संतों की अहम भूमिका है।

श्री राजेंद्र दास महाराज जी ने कहा कि हमारी संगत ने एक साल में लगभग एक साल में एक लाख से ज्यादा पेड़ पर्यावरण संरक्षण में कदम बढ़ाते हुए लगाएं हैं।

उन्होंने बताया कि चिकित्सा संस्थान आयुर्वेद शोध और उसके नवाचार के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में विकसित होगा। यहां पर आयुर्वेदिक पद्धति को नई तकनीक के साथ चिकित्सीय सेवा में बदलने का लिए समाज-कल्याण का कार्य करेगा। उन्होंने बताया कि संजय अग्रवाल महेंद्रगढ़ ने अस्पताल के में लगने वाली सभी कंक्रीट (रेती, रोड़ी बजरी आदि) सेवा हेतु उपलब्ध करवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि लाखों दानदाताओं द्वारा इस अस्पताल के निर्माण हेतु दान दिया जा रहा है।

समारोह में ये गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

सुखासा महाराज रोहतक, संत शुभाराम कटेसरा, राकेश कादयान सीजेएम गुरुग्राम, नगरपालिका बेरी के चेयरमैन देवेंद्र कादयान, मार्केट कमेटी बेरी के चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, प्रोफेसर अजय कादयान व यशवीर वत्स, रिटायर्ड डीईओ ओमप्रकाश कादयान, ब्लॉक समिति मेंबर सूरजमल कौशिक, माजरा बी से सरपंच प्रतिनिधि नीरज, सरपंच विनोद कुमार माजरा डी, मास्टर चांद, ग्राम पंचायत बेलरखां से सरपंच पृथ्वी सिंह, डाबीटेक सिंह गांव से सरपंच वीरेंद्र सिंह, पदार्थखेड़ा के सरपंच मैनेजर सिंह तथा रेवर गांव के सरपंच ओमप्रकाश तथा प्रशासनिक तौर पर रेणुका नांदल एसडीएम बेरी, एसीपी बेरी अनिल कुमार, नायब तहसीलदार सुरेंद्र कुमार, एसएचओ विकास कुमार सहित हजारों की संख्या में संगत उपस्थित रही।

रोहिणी में विराट हिंदू सम्मेलन भव्यता के साथ संपन्न

डॉ. शंभु पंवार

नईदिल्ली, 1 फरवरी। हिंदू समाज को संगठित करने, उसकी परंपराओं, संस्कृति एवं मूल्यों के संरक्षण के उद्देश्य से रोहिणी स्थित रामलीला मैदान में एक भव्य विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में जनसमुदाय की उपस्थिति रही और सामाजिक एकता, स्वच्छता तथा राष्ट्रीय विकास से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श हुआ।

कार्यक्रम में मंचासीन विशिष्ट अतिथियों में प्रसिद्ध कथावाचक नवल किशोर जी महाराज, राम निवास यादव (सेवा निवृत्त पुलिस महानिदेशक, हरियाणा गौरव से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा तथा मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रखर नेता फैज खान उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में संघ प्रचारक अजय जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सामाजिक भूमिका और राष्ट्र निर्माण में उसके योगदान पर अपने विचार रखे।

सम्मेलन में सभी माननीय अतिथियों का सम्मान पीली पगड़ी, अंगवस्त्र एवं "विशिष्ट प्रतिभा सम्मान प्रतीक" प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ, जिसके पश्चात रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, नृत्य-नाटिका तथा विभिन्न सम्मान समारोह आयोजित किए गए। इस अवसर पर मेधावी छात्र सम्मान, नारी शक्ति सम्मान एवं विशिष्ट व्यक्तित्व सम्मान के अंतर्गत क्षेत्र की कई विभूतियों और प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। साथ ही बॉडी बिल्डरों द्वारा किए गए शक्ति प्रदर्शन ने उपस्थित जनसमुदाय को विशेष रूप से आकर्षित किया।

डॉ.सविता चड्ढा को विशिष्ट प्रतिभा सम्मान से किया अलंकृत

प्रख्यात साहित्यकार डॉ.सविता चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस सम्मेलन में सहभागिता उनके लिए नए जन्म के समान है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का पुनर्जन्म केवल शारीरिक नहीं, बल्कि विचारों में नवीनता के प्रवेश से भी होता है। अपने संबोधन में उन्होंने महिलाओं की भूमिका और समाज से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए ।सम्मेलन का कुशल एवं प्रभावी संचालन निकुंज शर्मा ने किया। सम्मेलन की आयोजन समिति में हरीश जी, भूपेंद्र शर्मा, राजेश गोयल, कपिल शर्मा, सुरेश कुमार एवं विनीत अग्रवाल प्रमुख रूप से शामिल रहे। आयोजकों ने उपस्थित जनमानस को समाज में एकता, स्वच्छता अभियान तथा विभिन्न राष्ट्रीय विकास योजनाओं की जानकारी दी।

संपूर्ण आयोजन अनुशासित, गरिमामय और सामाजिक समरसता का संदेश देने वाला रहा।

एक मज़बूत, गरिमामय और सशक्त बार काउंसिल की स्थापना के लिए शाहिद अली एडवोकेट का व्यापक विज़न

शम्सआगाज

नई दिल्ली: एडवोकेट समुदाय की समग्र भलाई, पेशेवर सुरक्षा और संस्थागत सुदृढ़ता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शाहिद अली एडवोकेट ने एक व्यापक, दूरदर्शी और सुधारोन्मुखी विज़न प्रस्तुत किया है। इस विज़न का मूल लक्ष्य ऐसी बार का निर्माण है जो न केवल युवा वकीलों का संरक्षण करे, बल्कि वरिष्ठ वकीलों के अनुभव, सेवाओं और गरिमा का भी पूर्ण सम्मान करे, और प्रत्येक वकील के जीवन, संपत्ति, सम्मान तथा पेशेवर स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करे।

शाहिद अली द्वारा प्रस्तुत विज़न में नवोदित वकीलों को दरपेश आर्थिक चुनौतियों को समझते हुए एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक प्रस्ताव शामिल है। इसके तहत वकालत के शुरुआती तीन वर्षों में युवा वकीलों को प्रतिमाह 15,000 रुपये का वजीफ़ा प्रदान करने की बात कही गई है। इस पहल का उद्देश्य यह है कि नए लॉ ग्रेजुएट्स वित्तीय दबाव, असुरक्षा और शोषण से मुक्त रहते हुए गरिमा, आत्मविश्वास और एकाग्रता के साथ अपने पेशे में आगे बढ़ सकें।

इसी विज़न के अंतर्गत वकालत के क्षेत्र में दशकों तक सेवाएँ देने वाले वरिष्ठ वकीलों के लिए भी एक सार्थक और गरिमामय कदम प्रस्तावित किया गया है। 60 वर्ष से अधिक आयु के वकीलों को प्रतिमाह 30,000 रुपये का मानदेय देने की योजना उनकी दीर्घकालिक संघर्षशीलता, पेशेवर सेवाओं और न्यायिक व्यवस्था की मजबूती में उनके योगदान का व्यावहारिक सम्मान होगी।

वकीलों की सुरक्षा के मुद्दे को अत्यंत गंभीरता से लेते हुए शाहिद अली ने एडवोकेट्स प्रोटेक्शन एक्ट के प्रभावी, सशक्त और स्पष्ट कार्यान्वयन पर ज़ोर दिया है। उनके अनुसार वकीलों को उत्पीड़न, दबाव, झूठे मामलों, पुलिस अत्याचार और अवैध हस्तक्षेप से सुरक्षित रखना न केवल वकील समुदाय, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए भी अनिवार्य है। साथ ही, वकीलों की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु वेलफेयर सुधारों और वित्तीय संरक्षण प्रणाली को आधुनिक ढांचे पर विकसित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। इसके अंतर्गत पारदर्शी, जवाबदेह और टिकाऊ वेलफेयर फंड्स की स्थापना तथा दुर्घटना, बीमारी या आपात परिस्थितियों में त्वरित आर्थिक सहायता सुनिश्चित करने की व्यवस्था शामिल है।

डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शाहिद अली के विज़न में वकीलों की डिजिटल सशक्तिकरण को विशेष महत्व दिया गया है। इसके तहत मैनूपात्रा, ऑनलाइन एससीसी, LiveLaw और एआईआर जैसे विश्वसनीय कानूनी डेटाबेस तक वकीलों को निःशुल्क पहुंच प्रदान करने, साथ ही आधुनिक लीगल टेक्नोलॉजी, ई-फाइलिंग और डिजिटल रिसर्च से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने के प्रस्ताव शामिल हैं, ताकि वकील बदलती न्यायिक प्रणाली के साथ तालमेल बनाए रख सकें।

कौन-कौन आते हैं सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के दायरे में

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 की धारा 2(एच) में यह प्रावधान किया गया है कि कौन-कौन से विभाग, संस्थान या निकाय इस कानून के दायरे में आते हैं। इन्हें अधिनियम में ₹लोक प्राधिकारी₹ (पब्लिक अथॉरिटी) कहा गया है।

ये संस्थान जन सूचना अधिकार अधिनियम (आरटीआई) के दायरे में आते हैं :-

1. संवैधानिक और वैधानिक निकाय (कंस्यूटिटूशनल एवं स्टेटटरी बॉडीज):-

वे सभी संस्थाएं जिनका गठन निम्न तरीकों से हुआ है:-

ड्ड संविधान के तहत (जैसे- चुनाव आयोग, राष्ट्रपति कार्यालय, सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट, यूपीएससी, कैग आदि)।

ड्ड संसद द्वारा बनाए गए कानून के तहत (जैसे- केंद्रीय विश्वविद्यालय, सेबी, एलआईसी आदि)।

ड्ड राज्य विधानसभा/विधान मंडल द्वारा बनाए गए कानून के तहत (जैसे- राज्य परिवहन निगम, राज्य विश्वविद्यालय आदि)।

2. सरकारी आदेश / अधिसूचना द्वारा स्थापित/ गठित कोई प्राधिकारी या निकाय या स्वायत्त सरकारी संस्था ।

3. सरकार द्वारा वित्त पोषित (फाइनेंसड) संस्थाएं-

इसमें दो महत्वपूर्ण श्रेणियां शामिल हैं :

स्वामित्व या नियंत्रण -

ऐसी संस्थाएं /निकाय जिनका स्वामित्व सरकार के पास है या जिन पर सरकार का नियंत्रण है।

वित्त पोषित : ऐसी संस्थाएं, जो सरकार द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध कराई गई निधियों द्वारा सारभूत रूप से वित्त पोषित हैं।

4. गैर-सरकारी संगठन (एनजीओज) -वे सभी स्वयंसेवी संगठन (एनजीओज) भी जन सूचना अधिकार अधिनियम के दायरे में आते हैं, जो सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्याप्त मात्रा में वित्त पोषित हैं।

क्या प्राइवेट (निजी) संस्थाओं पर सूचना अधिकार अधिनियम लागू होता है ?

आमतौर पर निजी संस्थाएं/फर्म/ कंपनियां आदि सीधे तौर पर सूचना अधिकार अधिनियम के दायरे में नहीं आती हैं।

अपवाद:- धारा 2(एफ) के तहत, यदि किसी निजी संस्था की जानकारी किसी ₹लोक प्राधिकारी₹ (सरकारी विभाग) के पास उपलब्ध है या कानूनन वह विभाग उस जानकारी को निजी संस्था से मांग सकता है, तो आप उस सरकारी विभाग के माध्यम से निजी संस्था की वह जानकारी मांग सकते हैं।

संक्षेप में, हर वह दफ्तर, निकाय, स्वायत्त संस्था, संस्थान जो सरकारी है या सरकारी वित्त पोषण से चलता है या सरकारी कानून से बना है, उन पर जन सूचना अधिकार अधिनियम लागू होता है।

मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र सिंह ने किया शहीद मोहित की शहादत को नमन

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के शोक संदेश के साथ शहीद मोहित के निवास पर पहुंचे ओएसडी

झज्जर, 1फरवरी। प्रदेश के मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र सिंह ने रविवार को शहीद मोहित चौहान के पैतृक गांव गिजारोड में उनके निवास स्थान पर पहुंचकर वीर सपूत को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी का संदेश शोकाकुल परिवार तक पहुँचाते हुए कहा कि झज्जर को वीरभूमि के रूप में जाना जाता है। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने शहीद मोहित के पिता सतपाल सिंह चौहान के नाम संदेश में अपनी भावपूर्ण संवेदनाएं प्रकट करते हुए शहीद मोहित की शहादत को कोटि कोटि नमन किया है। उन्होंने शहीद के इस सर्वोच्च बलिदान को नमन करते हुए आश्वस्त किया है कि हरियाणा सरकार शहीद मोहित के परिवार के साथ हर समय मजबूती से खड़ी है तथा शहीद का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्होंने यह भी संदेश दिया कि सरकार शहीद के परिवार के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगी और उनके त्याग को सदैव सम्मान के साथ स्मरण रखा जाएगा।

मुख्यमंत्री के ओएसडी ने शहीद मोहित की धर्मपत्नी अंजलि, पिता सतपाल सिंह चौहान, माता रेखा देवी और छोटे भाई जितेंद्र को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के सपूतों की देशसेवा की गौरवशाली परंपरा रही है, जिन्होंने भारत माता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर किए हैं। इस दौरान योगेश सिलानी, गांव के सरपंच सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

पंडित जसराज जी की जयंती पर फतेहाबाद में दो फरवरी को होगा राज्य स्तरीय कार्यक्रम

जिला के कलाकारों से सहभागिता का आह्वान : उपायुक्त

झज्जर, 1 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि 2 फरवरी (सोमवार) को महान शास्त्रीय संगीतज्ञ पंडित जसराज जी की जयंती के अवसर पर राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन फतेहाबाद जिला के गाँव पीली मँदोरी में प्रातः 11 बजे किया जा रहा है। इस गरिमामय कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे।

उपायुक्त ने बताया कि पंडित जसराज जी का जन्म फतेहाबाद जिले के पीली मँदोरी गाँव में हुआ था। वे मेवाती घराने के सुप्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायक थे, जिन्होंने भारतीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। उनकी स्मृति में यह राज्य स्तरीय आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में मुंबई से पंडित जसराज जी के परिजनों के साथ-साथ देश के कई प्रसिद्ध संगीतकारों और भजन गायकों के भाग लेने की संभावना है, जिनमें सोनू निगम, अनूप जलोटा सहित अन्य कलाकारों के नाम प्रमुख हैं।

उपायुक्त ने जिला के सभी शास्त्रीय गायकों, भजन गायकों एवं लोक कलाकारों से इस राज्य स्तरीय कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया है, ताकि पंडित जसराज जी की संगीत साधना और सांस्कृतिक विरासत को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जा सके।

जिला व उपमंडल स्तर पर आयोजित होंगे समाधान शिविर

सुबह 10 से 12 बजे तक नागरिकों की समस्याओं का होगा त्वरित निवारण

झज्जर, 1 फरवरी। जिले में आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से आज(सोमवार 02 फरवरी) को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ये शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक संचालित होंगे।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त करेंगे। इस अवसर पर उपायुक्त नागरिकों की विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें एवं समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे।

वहीं, उपमंडल स्तर पर समाधान शिविरों का आयोजन संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में किया जाएगा। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, आईएएस, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में समाधान शिविर आयोजित होंगे, जहां नागरिकों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान सुनिश्चित किया जाएगा।

उपायुक्त ने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी मंच हैं। उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर प्रत्येक सप्ताह सोमवार एवं गुरुवार को नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी मौके पर उपस्थित रहते हैं, जिससे आमजन को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का समाधान उपलब्ध हो सके।

अमृत उद्यान आम जनता के लिए 3 फरवरी से खुलेगा.

पिंकी कुंडू

31 मार्च तक दर्शक सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक अमृत उद्यान देखने आ सकते हैं. शाम 5 बजे प्रवेश बंद कर दिया जाएगा. उद्यान सोमवार को, और 4 मार्च को होली के अवसर पर बंद रहेगा.

आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने #amritudyan का औपचारिक उद्घाटन किया. उद्यान में प्रवेश निःशुल्क, लेकिन ऑनलाइन बुकिंग के जरिए होता है. बुकिंग के लिए क्लिक करें: https://visit.rashtrapatibhavan.gov.in

पुरुष सेपक टकराव ने टोक्यो में आयोजित एशियाई खेल में स्वर्ण पदक जीतकर भारत का नाम किया रौशन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नईदिल्ली ।भारतीय पुरुष सेपक टकराव टीम ने मजबूत अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एशियाई खेलों 2026 के टेस्ट इवेंट में टोक्यो में स्वर्ण पदक जीता। टीम को मुख्य कोच हेमराज द्वारा विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया और सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव श्री नरेश कुमार द्वारा कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया गया। स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम में आकाश युमनाम,संदीप कुमार,अरुण,राम कुमार,बॉबी कुमार और एस मालमंगबा सिंह शामिल थे,जिनके सामूहिक प्रयास और समर्पण ने देश को गौरव दिलाया ।यह उल्लेखनीय उपलब्धि भारतीय सेपकटकरा के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई,जो एशियाई स्तर पर टीम की बढ़ती ताकत और प्रतिस्पर्धी कद को दर्शाती है।श्री पेरिका सुरेश,संयुक्त सचिव,सेपक टाकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया श्री एस.आर.प्रेम राज, अध्यक्ष, साउथ एशिया सेपक टकराव एसोसिएशन और सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष श्री श्रीनिवासुलु ने टीम की सफलता पर बेहद खुशी व्यक्त की। उन्होंने भारतीय टीम को बधाई दी और आगामी 7 से 10 फरवरी 2026 तक कोलंबो में आयोजित होने वाली छठी दक्षिण एशियाई सेपक टकराव चैंपियनशिप के लिए अपनी अग्रिम शुभकामनाएं दीं। जॉइंट सेक्रेटरी सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया के जॉइंट सेक्रेटरी श्री सुरेश ने कहा कि यह खेल लगातार लोकप्रियता का नया-नया मुकाम बना रही है। उन्होंने कहा कि देश में भी यह खेल काफी लोकप्रिय हो रहा है और युवा भारी संख्या में इस खेल से जुड़ रहे हैं।

डॉ. जितेन्द्र सिंह की दो कविताएँ साझा काव्य-संग्रह में शामिल

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 1फरवरी, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लेखक, कवि एवं सामाजिक चिंतक डॉ. जितेन्द्र सिंह की दो महत्वपूर्ण कविताएँ मुंबई से प्रकाशित साझा काव्य-संग्रह "लोकप्रिय हिंदी कविताएँ" में चयनित होकर प्रकाशित हुई हैं। इन कविताओं के शीर्षक हैं— "बिना छत का आसमान" तथा "पेड़ों की धीमी आवाज़ें"।

डॉ. सिंह की रचनाएँ मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना और जीवन-मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। कविता "बिना छत का आसमान" स्वतंत्रता, संघर्ष और मानवीय आकांक्षाओं की प्रतीकात्मक प्रस्तुति है, वहीं "पेड़ों की धीमी आवाज़ें" प्रकृति के मौन संवाद और गहन अनुभूतियों को शब्द देती है।

यह साझा काव्य-संग्रह मुंबई स्थित इंकलाब पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के चर्चित और उभरते रचनाकारों की कविताएँ संकलित की गई हैं। इस संग्रह में डॉ. जितेन्द्र सिंह की रचनाओं का चयन उनकी साहित्यिक प्रतिभा, रचनात्मक दृष्टि और सामाजिक सरोकारों की व्यापक स्वीकृति को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि डॉ. जितेन्द्र सिंह की लेखनी लंबे समय से सामाजिक सुधार, मानवता और नैतिक मूल्यों के संवर्धन के लिए जानी जाती रही है। इससे पूर्व भी उनकी अनेक पुस्तकें, काव्य-संग्रह और लेख राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित होकर सराहे जा चुके हैं। डॉ. सिंह ने इस उपलब्धि के लिए इंकलाब पब्लिकेशन, मुंबई के प्रकाशक एवं संपादक मंडल का आभार व्यक्त करने के साथ ही उन्होंने सभी सह-रचनाकारों और पाठकों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त की, जिनके सहयोग और स्नेह से यह साहित्यिक यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है।

डॉ. शंभु पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर) अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक)

इंफाल मार्च का मजबूत संदेश: लोगों ने केंद्र से मणिपुर की सीमाओं की सुरक्षा की मांग की

संगिनी घोष,

मणिपुर की राजधानी इंफाल में इस सप्ताह हजारों की संख्या में लोग सड़कों पर उतरे और केंद्र सरकार से राज्य की वर्तमान सीमाओं की रक्षा करने की मांग की। यह शांतिपूर्ण मार्च उन बढ़ती चिंताओं को दर्शाता है, जो लोगों के मन में चल रहे राजनीतिक घटनाक्रमों को लेकर हैं।

छात्रों से लेकर स्थानीय नागरिकों तक, बड़ी संख्या में लोग इस रैली में शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि मणिपुर की सीमाएं केवल नक्शे की रेखाएं नहीं हैं, बल्कि यह राज्य की पहचान, सुरक्षा और स्थिरता से जुड़ा विषय है।

लोगों ने केंद्र सरकार से साफ आश्वासन मांगा कि कोई भी ऐसा निर्णय नहीं लिया जाएगा जो मणिपुर की क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर करे।

इंफाल फोकस: शांतिपूर्ण प्रदर्शन, लेकिन गंभीर चिंता

मार्च पूरी तरह शांतिपूर्ण रहा और शहर के प्रमुख इलाकों में पुलिस तथा सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी। हालांकि प्रदर्शन का संदेश काफी स्पष्ट और मजबूत था।

कई लोगों ने कहा कि चल रही राजनीतिक चर्चाओं और अनिश्चितता के कारण यह डर बढ़ रहा है कि कहीं राज्य की वर्तमान संरचना में बदलाव न किया जाए। प्रदर्शनकारियों के अनुसार, मणिपुर की सीमाओं की रक्षा करना जरूरी है ताकि पहले से संवेदनशील हालात और न बिगड़ें।

मणिपुर में यह मुद्दा इतना संवेदनशील क्यों है?

मणिपुर पिछले कुछ वर्षों में तनाव और सामाजिक अशांति का सामना करता रहा है। ऐसे में भूमि, पहचान और प्रशासन से जुड़े सवाल बेहद संवेदनशील बन जाते हैं।

इसी कारण सीमाओं में बदलाव की आशंका भी स्थानीय समुदायों के लिए भावनात्मक मुद्दा बन जाती है। मेरे अनुसार, इस बड़े मार्च से यह साफ है कि लोग शांति चाहते हैं, लेकिन साथ ही वे चाहते हैं कि उनकी चिंताओं को गंभीरता से सुना जाए।

मुख्य बिंदु

स्थान: इंफाल, मणिपुर

घटना: हजारों लोगों का शांतिपूर्ण मार्च

मुख्य मांग: मणिपुर की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा

जनता की चिंता: राजनीतिक घटनाक्रमों से बढ़ती अनिश्चितता

सुरक्षा व्यवस्था: कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस तैनात

संदेश: मणिपुर की मौजूदा सीमाओं से कोई समझौता नहीं

राष्ट्रीय असर और आगे की राह

इस तरह के बड़े जन-आंदोलन यह दिखाते हैं कि क्षेत्रीय मुद्दों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विशेषज्ञों का मानना है कि केंद्र सरकार पर अब दबाव बढ़ेगा कि वह स्पष्ट जवाब दे और स्थानीय समुदायों से संवाद बढ़ाए, ताकि आगे किसी तरह की अशांति न फैले।

आने वाले दिन महत्वपूर्ण होंगे, क्योंकि केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया पर सबकी नजर रहेगी।

डिजिटल मेटा डिस्क्रिप्शन (SEO):

इंफाल में हजारों लोगों ने शांतिपूर्ण मार्च निकालकर केंद्र सरकार से मणिपुर की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा की मांग की। यह प्रदर्शन राजनीतिक घटनाक्रमों और राज्य की मौजूदा सीमाओं को लेकर बढ़ती चिंताओं को दर्शाता है।

बजट 2026 से विकसित भारत की नींव मजबूत, गरीब-युवा-महिला सशक्त : दिलीप देवतवाल

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। मदनगीर मंडल कार्यालय स्थित ब्लू स्टार हॉल, डीडीए फ्लैट मदनगीर में केंद्रीय बजट 2026 को लेकर एक प्रभावशाली एवं राजनीतिक रूप से अहम प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने किया। आयोजन में विकसित भारत के लक्ष्य को लेकर सरकार की दूरदर्शी सोच और जनकल्याणकारी नीतियों को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत संत शिरोमणि रविदास जी की जयंती के अवसर पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए की गई। इस दौरान सामाजिक समरसता, समानता और श्रम सम्मान के मूल्यों को आत्मसात करने का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम में निगम प्रत्याशी मनीषा बैरवा जी की विशेष उपस्थिति रही, जबकि मुख्य वक्ता नवीन गुप्ता ने बजट के प्रावधानों को तथ्यों और आंकड़ों के साथ विस्तार से रखते हुए कहा कि यह बजट विकसित भारत@2047 के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक मजबूत और निर्णायक कदम है।

मुख्य वक्ता नवीन गुप्ता ने बताया कि बजट में

देश के इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के लिए ₹11 लाख करोड़ से अधिक का प्रावधान कर विकसित भारत के लिए आधुनिक सड़क, आवास और शहरी ढांचे को गति दी गई है।

शिक्षा क्षेत्र के लिए ₹1.20 लाख करोड़ से अधिक का बजट युवाओं को कौशल, तकनीक और रोजगार से जोड़कर भारत को वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जाने वाला कदम है।

स्वास्थ्य सेवाओं के लिए ₹90 हजार करोड़ से अधिक का प्रावधान कर एक सशक्त, स्वस्थ और सक्षम विकसित भारत की आधारशिला रखी गई है।

महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूहों के लिए ₹3 लाख करोड़ से अधिक की योजनाएं महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाकर राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी को मजबूत करती हैं।

वहीं मध्यम वर्ग और व्यापारियों को कर राहत देकर आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे विकसित भारत की अर्थव्यवस्था और सुदृढ़ होगी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंडल अध्यक्ष दिलीप देवतवाल ने कहा, "बजट 2026 केवल आंकड़ों का दस्तावेज नहीं, बल्कि विकसित भारत के संकल्प को जमीन पर उतारने का रोडमैप है। गरीब, युवा, महिला और मध्यम वर्ग को सशक्त किए बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी है।"

उन्होंने कहा कि जहां विपक्ष केवल भ्रम और नकारात्मकता फैलाने में लगा है, वहीं यह बजट सरकार की विकास, सुशासन और विकसित भारत की स्पष्ट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। देवतवाल ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे बजट की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाएं।

निगम प्रत्याशी मनीषा बैरवा जी ने कहा कि बजट में शहरी विकास, स्वच्छता, महिला सुरक्षा और रोजगार सृजन से जुड़े प्रावधान नगर निगम स्तर पर भी विकसित भारत की सोच को मजबूती देंगे।

कार्यक्रम में मंडल के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ कार्यकर्ता, पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। आयोजन संगठनात्मक एकता, राजनीतिक स्पष्टता और विकसित भारत के संकल्प के साथ संपन्न हुआ।

भारतीय कृषक समाज हरियाणा के चेयरमैन एवं सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय (भारत सरकार) के सदस्य अजीत तेवतिया ने विकसित भारत के बज़ट को सराहनीय एवं आम लोगो के हितों में बताया है।

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय कृषक समाज हरियाणा के चेयरमैन एवं सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय (भारत सरकार) के सदस्य अजीत तेवतिया ने विकसित भारत के बज़ट को सराहनीय एवं आम लोगो के हितों में बताया है । किसानों की आय को बढ़ाने के लिए उपज को बढ़ावा, नारियल किसानों की कृषि को आधुनिक करना । डेयरी ,पोल्ट्री, पशुधन को बढ़ावा वेटनरी कालेज अस्पताल की योजना से किसान लाभान्वित होगे ।

महिला उद्यमियों के लिए शी-मार्ट का गठन , अख़रोट बादाम की खेती को बढ़ावा ।

क्षेत्रिय चिकित्सा केंद्र खोल कर बुजुर्गों के इलाज पर ख़ास ध्यान केयर इको सिस्टम , स्टॉर्ट अप स्किल, टूरिज़म एवं सात दुर्लभ बीमारियों की दवा को सस्ता करना आम जन मानस को राहत किया है युवा ग़रीब किसान महिलाओं पर फोकस , नए जल मार्ग विकसित करना, सात नए रेल कॉरिडोर बनाये जाने से यात्रा को सुगम किया गया है ।बजट 2025-26 देश के नागरिकों के हित में है ।और मैन्युफैक्चर और इन्फ्रा से देश के विकास को गति मिलेगी ।

जनपद लखनऊ में भिक्षावृत्ति से शहर को मुक्त करने हेतु

परिवहन विशेष न्यूज

भिक्षावृति मुक्त लखनऊ अभियान विगत दो वर्षों से निरंतर अभियान संचालित है।जिसमें जिला प्रशासन की ओर से महिला कल्याण विभाग, समाज कल्याण विभाग, नगर निगम एवं डूडा के कार्मिकों को सम्मिलित करते हुए शहर के मुख्य 19 चौराहा पर निगरानी करने हेतु 7 टास्क फोर्स का गठन करते हुए उनको निर्धारित चौराहा पर निगरानी करने हेतु ड्यूटी लगाई गई है।

जिसके तहत वह प्रतिदिन शहर में भिक्षावृत्ति के उद्देश्य से आने वाले व्यक्ति महिला, पुरुष एवं बच्चों को भिक्षावृत्ति करने से रोकते हुए समझाकर उनको विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ने एवं स्वालंबन की तरफ ले जाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है।

जिसके क्रम में आज दिनांक 31.1.2026 को जिलाधिकारी महोदय के निर्देशानुसार तथा जिला प्रोबेशन अधिकारी व ए0सी0एम0-7 के नेतृत्व में महिला कल्याण विभाग की टीम, थाना गुडंबा के पुलिसकर्मीओ एवं नगर निगम के कार्मिकों के सहयोग से टेढ़ी पुलिया पुल के नीचे अस्थाई रूप से बसावट कर रह रहे व्यक्तियों को समझाकर वहां से हटाया गया और पुल के नीचे के स्थान को खाली कराया गया जिससे वह आसपास के क्षेत्र में जाकर भिक्षावृत्ति का कार्य न कर सके तथा टीम का लगातार प्रयास है कि हम भविष्य में लखनऊ जनपद को भिक्षावृत्ति से मुक्त कराने में सफल रहे।

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा "टीचर्स ऑफ बिहार" संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

परिवहन विशेषन्यूज

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी....

मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।

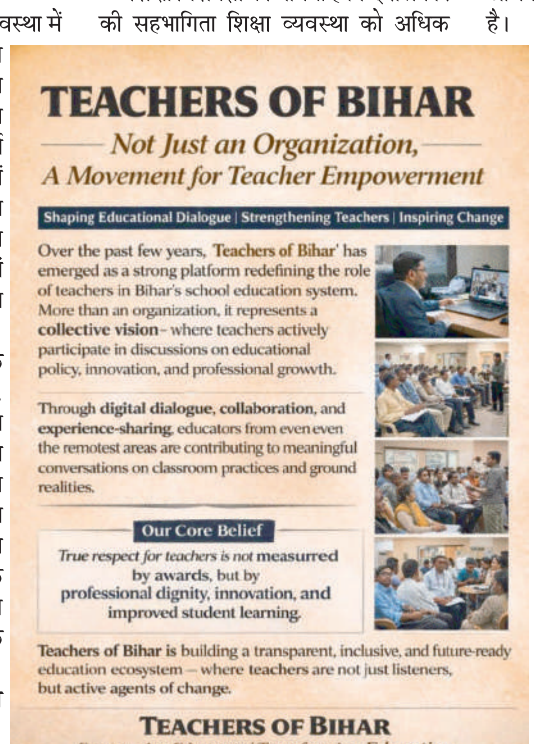

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर ज़ोर....

टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।

मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका....

शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ....

शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों के विचार....

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष....

कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

NCSL-NIEPA नई दिल्ली के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बिहार का प्रतिनिधित्व करने वाले मुजफ्फरपुर जिले के प्रधान शिक्षक केशव कुमार को मिला "शिक्षा दीप- नेतृत्व एवं नवाचार सम्मान"।

परिवहन विशेष न्यूज

मुजफ्फरपुर जिले के शत-प्रतिशत प्रारंभिक विद्यालयों में प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग आधारित माइक्रो इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट को दीक्षा ऐप पर क्रियान्वित कराकर पूरे बिहार में मुजफ्फरपुर जिला को प्रथम स्थान प्राप्त कराने में उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन करने वाले मुजफ्फरपुर जिले के जिला तकनीकी टीम के सदस्य - सह- प्रधान शिक्षक केशव कुमार को मिला ₹जिला स्तरीय उत्कृष्ट तकनीकी सेवा सम्मान 2025-26₹

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली के अंतर्गत कार्यरत राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र के द्वारा 17 से 19 जनवरी तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में सफल विद्यालय नेतृत्व उत्सव के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में मुजफ्फरपुर जिले के मुरौल प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार को बिहार का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अपर सचिव, धीरज साहु, (भा.प्र.से.) ने सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया था। यह मुजफ्फरपुर जिला सहित पूरे बिहार किए गौरव की बात है। इस उपलब्धि के लिए जिला कार्यक्रम पदाधिकारी प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान, बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर सुजीत कुमार दास ने प्रधान शिक्षक केशव कुमार को ₹शिक्षा दीप- नेतृत्व एवं नवाचार सम्मान₹ प्रदान किया।

वही प्रोजेक्ट बेस्ट लर्निंग आधारित माइक्रो इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन में मुजफ्फरपुर जिले को बिहार में प्रथम स्थान प्राप्त कराने में उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन करने हेतु जिला तकनीकी टीम के सदस्य - सह- जिले के मुरौल प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू के प्रधान शिक्षक केशव कुमार को जिला शिक्षा पदाधिकारी, मुजफ्फरपुर, कुमार अरविंद सिन्हा, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान, बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर, सुजीत कुमार दास एवं जिला शिक्षा समन्वयक बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर, मनोज कुमार के संयुक्त हस्ताक्षर युक्त प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न ₹जिला स्तरीय उत्कृष्ट तकनीकी सेवा सम्मान 2025-26₹ के रूप में प्रदान किया गया।

भभुआ कैमूर : सीनियर अधिवक्ता चंदौली मिश्रा एवम सीनियर अधिवक्ता वाहिद खा के आवास पर जाकर मिले जिला अधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के अधिवक्ता मंटू पाण्डेय ने लिया हालचाल

भभुआ कैमूर

सीनियर अधिवक्ता चंदौली मिश्रा एवम सीनियर अधिवक्ता वाहिद खा के आवास पर जाकर मिले जिला अधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के अधिवक्ता मंटू पाण्डेय ने लिया हालचाल

आज दिनांक 1 फरवरी 2026 को जिला अधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के अधिवक्ता मंटू पाण्डेय जिलाअधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर वरीय अधिवक्ता चंद्रमौली मौली मिश्रा 96 वर्षीय से फोन पर हाल चाल लिया। और आज सुबह 9:00 बजे जिलाअधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के वरीय अधिवक्ता वाहिद खान 90 वर्षीय से उनके भभुआ आवास पर जाकर उनका हाल-चाल लिया और आशीर्वाद लिया। वारी अधिवक्ता चंद मौली मिश्रा जिला अधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर में सन 1963 में सदस्य बने थे भभुआ विधानसभा के विधायक भी बने थे। सीनियर अधिवक्ता श्री चंद्र मौली मिश्रा अस्वस्थ रहने के कारण न्यायालय जाने में असमर्थ है। वर्तमान में सीनियर अधिवक्ता वाहिद खान भी अस्वस्थ रहने के कारण वह भी अपने आवास पर रह रहे हैं वाहिद खान अधिवक्ता 1964 ईस्वी में जिलाअधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के सदस्य बने थे और वह 15 बरस तक लगभग लोक अभियोजक के पद पर सिविल कोर्ट भभुआ कैमूर में रहे। अब वह घर पर रह रहे हैं। इन दोनों लोगों के आवास पर जाकर इन लोगों का आशीर्वाद लेने लेकर बहुत ही सुखद आनंद प्राप्त होता है। इन लोगों से पुरानी पद्धति बीते हुए जमाने की बातें याद आती है यह दोनों लोग जिलाअधिवक्ता संघ भभुआ कैमूर के सबसे सीनियर अधिवक्ता है 1

रिपोटर संतोष कुमार चतुर्वेदी

भैरूजी का जागरण

कोरेमुला स्थित श्री आई माताजी मंदिर में आयोजित श्री खेतलाजी भैरूजी के जागरण में भजन प्रस्तुत करते मोहनलाल भायल एंड पार्टी। अवसर पर उपस्थित संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालुराम काग, उपाध्यक्ष राजाराम पंवार, सह सचिव राजाराम गेहलोत, समस्त कार्यकारणी सदस्यगण व अन्य।

युवा बजट 2026-27 के आर्थिक मायने विशिष्ट, विकसित भारत 2047 के सपने होंगे पूरे

कमलेश पांडेय

जहां तक कुल बजट आकार की बात है तो यह 53.5 लाख करोड़ रुपये है, जिसमें पूंजीगत व्यय 12.2 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाया गया। भले ही राजकोषीय घाटा जीडीपी (GDP) का 4.3% रखा गया, जो पिछले साल के 4.4% की तुलना में कुछ कम है। वहीं, जहां तक कर सुधार की बात है तो आयकर दरों में कोई बदलाव नहीं आया; जबकि नया आयकर अधिनियम 2026 अप्रैल से लागू होगा। वहीं, एफ एंड ओ (F&O) पर एसटीटी (STT) बढ़ाकर 0.05-0.15% किया गया, विदेशी पर्यटन/शिक्षा हेतु टीसीएस (TCS) 2% किया गया।

भारत सरकार का 2026-27 का केंद्रीय बजट विकास, रोजगार सृजन और राजकोषीय अनुशासन पर केंद्रित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी 2026, दिन रविवार को इसे संसद की पटल पर प्रस्तुत करके एक नया रिकॉर्ड कायम किया। लिहाजा इसके आर्थिक मायने और राजनीतिक प्रभाव महत्वपूर्ण है। इसपर बहस तेज हो गई, जो कई कारणों से अभिप्रेरित है। जहां सत्ता पक्ष ने इसे युवा शक्ति का प्रतीक बजट ठहराया, वहीं विपक्ष ने इसे अदृश्य बजट करार देते हुए जमकर आलोचना की।

जहां तक कुल बजट आकार की बात है तो यह 53.5 लाख करोड़ रुपये है, जिसमें पूंजीगत व्यय 12.2 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाया गया। भले ही राजकोषीय घाटा जीडीपी (GDP) का 4.3% रखा गया, जो पिछले साल के 4.4% की तुलना में कुछ कम है। वहीं, जहां तक कर सुधार की बात है तो आयकर दरों में कोई बदलाव नहीं आया; जबकि नया आयकर अधिनियम 2026 अप्रैल से लागू होगा। वहीं, एफ एंड ओ (F&O) पर एसटीटी (STT) बढ़ाकर 0.05-0.15% किया गया, विदेशी पर्यटन/शिक्षा हेतु टीसीएस (TCS) 2% किया गया।

जहां तक बजट में क्षेत्रीय प्रावधान किये जाने की बात है तो रोजगार-एमएसएमई के लिए 10,000 करोड़ का वृद्धि कोष प्रस्तावित है, जबकि क्रेडिट गारंटी दोगुनी की गई। वहीं, बुनियादी ढांचा हेतु 7 हाईस्पीड रेल कॉरिडोर का विकास, शहरी विकास के लिए 5,000 करोड़ प्रति वर्ष का प्रस्ताव और स्वास्थ्य-कृषि क्षेत्र में 17 कैंसर दवाएं सस्ती किये जाने की घोषणा, बायोफार्मा को 10,000 करोड़ दिए जाने का प्रस्ताव और मखाना बोर्ड मजबूत किये जाने का प्रस्ताव शामिल है। वहीं, अन्य महत्वपूर्ण बजट घोषणाओं में नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स और निर्यात प्रोत्साहन पर फोकस प्रदान करते हुए सुधारों का 'रिफॉर्म एक्सप्रेस' जारी रखा गया। लिहाजा यह विकसित भारत 2047 का रोडमैप है।

इन बजट प्रस्तावों के आर्थिक मायने दूरगामी महत्व वाले हैं, क्योंकि बजट में पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) को 12.2 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाया गया है, जो बुनियादी ढांचे, विनिर्माण और हरित ऊर्जा को बढ़ावा देगा। वहीं, राजकोषीय घाटा 4.3% जीडीपी (GDP) पर लक्षित है, जबकि ऋण-जीडीपी अनुपात 55.6% तक सुधरेगा, जो वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करेगा। वहीं, कर राहत जैसे टीसीएस (TCS)/टैक्स सीमा बढ़ाना, एमएसएमई (MSME) क्रेडिट गारंटी दोगुनी करना और स्टार्टअप फंड कंज्यूमर (consumer) खर्च व निवेश को प्रोत्साहित करेगा।

जहां तक बजट प्रस्तावों के राजनीतिक प्रभाव की बात है तो निश्चय ही सरकार ने रोजगार (जैसे चमड़ा क्षेत्र में 22 लाख नौकरियां), किसान योजनाएं (मखाना बोर्ड) और स्वास्थ्य (10,000 मेडिकल सीटें) पर फोकस कर एनडीए (NDA) सहयोगियों व ग्रामीण मतदाताओं को मजबूत संदेश दिया है। जबकि विपक्ष ने इसे 'राजनीतिक बजट' करार दिया है, खासकर राज्य-विशिष्ट घोषणाओं पर, लेकिन विकास लक्ष्य (विकसित भारत 2047) बीजेपी की छवि को मजबूत करेंगे। कुल मिलाकर, यह गठबंधन स्थिरता और 2029 के आम चुनाव सहित 2026, 27 और 28 की विधानसभा चुनाव की तैयारी को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

लिहाजा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बजट 2026-27 को 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं का प्रतीक बताया। उन्होंने इसे सुधारों को मजबूत करने और विकसित भारत के लिए स्पष्ट रोडमैप करार दिया। मोदी ने कहा कि यह बजट नारी शक्ति का सशक्त प्रतिबिंब है और अपार अवसर प्रदान करता है। युवाओं के लिए नया आयाम तथा हर घर लक्ष्मी का आगमन सुनिश्चित करने वाला बताया। विकास फोकस करते हुए उन्होंने इसे आत्मनिर्भरता, रोजगार सृजन और समावेशी विकास का माध्यम माना, जो देश को 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य की ओर ले जाएगा। विपक्ष की आलोचना के बीच सरकार की सकारात्मक छवि मजबूत करने वाला कदम है।

हालांकि, भारत के 2026-27 बजट पर विपक्ष ने कड़ी आलोचना की है। विभिन्न दलों ने इसे निराशाजनक, फीका और अपेक्षाओं से कम बताया। जहां कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश ने इसे ₹पूरी तरह फीका₹ कहा, जिसमें भारी माहौल के बावजूद कोई स्पष्ट आवंटन या पारदर्शिता नहीं है। जबकि कांग्रेस नेता सुरेंद्र राजपूत ने आरोप लगाया कि सरकार अर्थव्यवस्था को गर्त में डुबो रही है। वहीं कांग्रेस नेता जेबी माथेर ने केरल के लिए इसे निराशाजनक बताया है।

वहीं, समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने कहा कि इस बजट में महिलाओं, युवाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य व कृषि के लिए कुछ नहीं है। जबकि सपा नेता और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने इसे गरीब-किसान-युवा विरोधी बजट बताया। जबकि सपा सांसद राम गोपाल यादव ने कहा कि ₹मोदी सरकार से ही उन्हें कोई उम्मीद नहीं है।"

वहीं, टीएमसी नेत्री और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मौजूदा बजट में भी बंगाल की उपेक्षा का आरोप लगाते हुए इसे ₹दिशाहीन₹ बजट कहा। जबकि तृणमूल कांग्रेस के सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि यह बजट उनकी समझ में नहीं आया, इसलिए कोई नंबर नहीं देंगे। कुल मिलाकर विपक्ष ने राज्य-विशिष्ट घोषणाओं की कमी, मध्यम वर्ग व किसानों की अनदेखी तथा राजनीतिक बजट करार दिया।

हालांकि, भारत के 2026-27 बजट पर विपक्ष की आलोचना के जवाब में भाजपा सरकार ने इसे ऐतिहासिक, समावेशी और विकासोन्मुखी बजट बताया। बीजेपी नेताओं ने आरोप लगाते हुए कहा कि विपक्ष नकारात्मक राजनीति कर रहा है। जहां केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बजट को सराहते हुए विपक्ष पर तंज कसा कि वे अर्थव्यवस्था की मजबूती को नहीं देख पा रहे। वहीं, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसे विकसित भारत के संकल्प में मील का पत्थर करार देते हुए कहा कि यह बजट हर वर्ग के लिए कल्याणकारी है। जबकि यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने इसे विकसित भारत का रोडमैप करार दिया, और कहा कि इसके विभिन्न प्रस्तावों से सामाजिक-आर्थिक विकास का स्वर्णिम अध्याय पूरा होगा। कुलमिलाकर सरकार ने जोर दिया कि कैपेक्स, रोजगार और किसान योजनाएं विपक्ष की 'फीका' टिप्पणी को गलत साबित करेंगी। इस प्रकार यह बजट एनडीए की एकजुटता को भी दिखाता है।

संपादकीय
चिंतन-मनन

कैंसर और डायबिटीज की दवाएं सस्ती होंगी; यूनियन बजट 2026 में मरीजों को बड़ी राहत - डॉ यादव

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला 1 फरवरी - जीवन-घातक और पुरानी बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के लिए बड़ी राहत की खबर है। यूनियन बजट 2026 में आवश्यक दवाओं की कीमतों में भारी कमी की घोषणा की गई है, जिसमें कैंसर और डायबिटीज की दवाएं भी शामिल हैं। संसद में बजट पेश करते हुए केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि सरकार का लक्ष्य आम लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक किफायती और सुलभ बनाना है।

राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा कि ₹इस बजट से कैंसर उपचार में इस्तेमाल होने वाली 17 दवाएं सस्ती होंगी, साथ ही कैंसर और डायबिटीज सहित सात गंभीर बीमारियों से संबंधित दवाओं की कीमतों में भी कमी आएगी। इस कदम से मरीजों और उनके परिवारों पर पड़ने वाला आर्थिक बोझ काफी हद तक कम होने की उम्मीद है, खासकर उन लोगों पर जो लंबे समय तक इलाज पर निर्भर हैं।

सरकार ने जीवन रक्षक दवाओं और चिकित्सा सामग्री पर कस्टम ड्यूटी तथा टैक्स में तर्कसंगत बदलाव का प्रस्ताव किया है, जिसका सीधा असर खुदरा कीमतों पर पड़ेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत करेगा और सभी के लिए किफायती इलाज के विजन को समर्थन देगा।

दवाओं के अलावा, बजट में उपभोक्ताओं को भी राहत मिली है। मोबाइल फोन, माइक्रोवेव ओवन और कपड़े जैसे कई रोजमर्रा के और घरेलू सामान सस्ते होने वाले हैं, क्योंकि इनके कलपुर्जों और कच्चे माल पर ड्यूटी कम की गई है।

हालांकि, बजट में कुछ वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी भी संकेतित है। शराब और खनिज-आधारित उत्पादों पर बढ़ी हुई ड्यूटी और संशोधित कर नियमों के कारण ये महंगे हो सकते हैं।

कुल मिलाकर, यूनियन बजट 2026 ने सार्वजनिक कल्याण और राजस्व संतुलन के बीच संतुलन बनाया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में बहुत जरूरी राहत देते हुए गैर-आवश्यक और खनिज-आधारित वस्तुओं पर करों में समायोजन किया गया है।

संतुलन की पतली रस्सी पर बजट 2026

- डॉ० प्रियंका सौरभ

आज 1 फरवरी 2026 को संसद में पेश केंद्रीय बजट 2026 ने एक बार फिर साबित कर दिया कि सरकार आर्थिक अनुशासन और जनता की आकांक्षाओं के बीच संकरी राह पर चल रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भाषण की शुरुआत ही स्थिरता, निरंतरता और दीर्घकालिक विकास की सोच से की। कोई अप्रत्याशित लोकलुभावन घोषणाओं का धमाका नहीं हुआ, बल्कि बजट ने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। राजकोषीय घाटे को वित्तीय वर्ष 2026 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4.4 प्रतिशत रखा गया, जो पूर्व निर्धारित 4.5 प्रतिशत लक्ष्य से भी नीचे है। यह कदम वित्तीय अनुशासन की मजबूत मिसाल पेश करता है। पूंजीगत व्यय को पिछले वर्ष के 11.2 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 12.5 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया, जो लगभग 12 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। यह बढ़ोतरी बुनियादी ढांचे, शहरी विकास परियोजनाओं और डिजिटल तकनीक क्षेत्रों पर केंद्रित है। निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संपत्ति मुद्रीकरण योजना के तहत 10 लाख करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था ने पिछले वित्तीय वर्ष में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की थी, लेकिन वैश्विक आर्थिक मंदी, अमेरिका-चीन व्यापार तनाव और घरेलू मुद्रास्फीति जैसी चुनौतियां बरकरार हैं। बजट ने राजकोषीय घाटे को सख्ती से 4.4 प्रतिशत पर नियंत्रित रखा, जबकि प्रभावी राजस्व घाटे को 96,654 करोड़ रुपये तक सीमित किया गया, जो जीडीपी का मात्र 0.3 प्रतिशत है। पूंजीगत व्यय पर 12.5 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा पाइपलाइन को नई गति देगा। राजमार्ग निर्माण में अतिरिक्त 50,000 किलोमीटर का लक्ष्य, रेलवे विद्युतीकरण और आधुनिकीकरण पर 2.5 लाख करोड़ रुपये का आवंटन भविष्य की नींव को अटल बनाने का संकल्प दिखाता है। राज्यों को 1.5 लाख करोड़ रुपये का 50 वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जाएगा, जो संघीय ढांचे को मजबूत करेगा। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल को बढ़ावा देने के लिए कर छूट, एकल खिड़की प्रणाली और तेज मंजूरी प्रक्रिया जैसे उपाय किए गए हैं। सरकार ने स्पष्ट संदेश दिया है—निवेशक आइए, हम पूरी तरह तैयार हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या ये विशाल निवेश ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन करेंगे, या केवल महानगरों की चकाचौंध तक सीमित रहेंगे?

मध्यम वर्ग, जो देश की जीडीपी में लगभग 40 प्रतिशत योगदान देता है, को इस बजट में ठोस कर राहत मिली है। पुरानी कर व्यवस्था में मानक कटौती को 50,000 रुपये से दोगुना बढ़ाकर 1 लाख रुपये कर दिया गया, जबकि वरिष्ठ नागरिकों के लिए यह और अधिक उदार है। नई कर व्यवस्था में स्लैबों को सरल बनाया गया—5 लाख रुपये तक की आय पर शून्य कर। शिक्षा ऋण पर टीसीएस हटाया गया (10 लाख रुपये तक), जबकि किराया टीडीएस सीमा को 2.4 लाख से बढ़ाकर 6 लाख रुपये किया गया। दो स्व-व्यवहृत आवासीय संपत्तियों पर कर राहत का प्रावधान, आयकर रिटर्न दाखिल करने की समय सीमा को 2 वर्ष से बढ़ाकर 4 वर्ष किया गया। कर संहिता को 819 धाराओं से घटाकर 536 धाराओं में सरलीकृत करने का वादा सराहनीय है। ये कदम करदाता को राजस्व का मात्र स्रोत न मानकर भरोसेमंद भागीदार बनाने की दिशा में हैं। हालांकि, जमीनी स्तर पर अनुपालन प्रक्रिया को और सरल बनाना होगा, वरना ये राहतें कागजी औपचारिकताओं तक सीमित रह सकती हैं।

कृषि क्षेत्र, जो अभी भी 18 प्रतिशत जीडीपी और 65 प्रतिशत ग्रामीण आबादी का आधार है, पर बजट ने विशेष ध्यान दिया। प्रधानमंत्री धन-धान्य योजना को 100 जिलों में विस्तारित किया गया, फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन, सिंचाई और भंडारण क्षमता बढ़ाने पर जोर। पीएम किसान सम्मान निधि में वृद्धि, किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा बढ़ाई गई। मत्स्य पालन विकास के लिए अंडमान-लक्षद्वीप में आर्थिक क्षेत्र घोषित, फल-सब्जी आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने का प्रावधान। मनरेगा बजट में वृद्धि, ग्रामीण क्रेडिट स्कोरिंग प्रणाली से स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को ऋण सुगम। चमड़ा-फुटवियर और खिलौना उद्योगों से 22 लाख नए रोजगार का अनुमान है। ये प्रावधान ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देंगे, लेकिन वास्तविक परीक्षा यही होगी कि क्या ये योजनाएं कागजों से निकलकर खेतों, बाजारों तक पहुंच पाएंगी। छोटे और सीमांत किसानों को लाभ मिलना चाहिए, न कि बड़े जमींदारों तक सीमित रहना चाहिए।

महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकता देते हुए लक्ष्मी वंदना योजना का विस्तार, स्वरोजगार ऋण पर गारंटी हटाई गई (20 लाख तक)। शहरी महिलाओं के लिए घर-आधारित कार्य को कर छूट का लाभ। पंचायती राज संस्थाओं के लिए 10,000 करोड़ रुपये का विशेष प्रावधान हरियाणा जैसे राज्यों में, जहां महिला आरक्षण 50 प्रतिशत है, वास्तविक नेतृत्व को बढ़ावा देगा। ये कदम लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन पंचायत स्तर तक प्रभावी क्रियान्वयन जरूरी होगा।

देश की 60 प्रतिशत युवा आबादी (35 वर्ष से कम) को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा क्षेत्र में 1.35 लाख करोड़ रुपये से अधिक का बजट, जिसमें 50 नए आईआईटी और मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। स्किल इंडिया कार्यक्रम को 2 लाख करोड़ रुपये, इंटर्नशिप योजना से 5 करोड़ युवाओं को प्रतिमाह 1 लाख रुपये स्टाइपेंड। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को सहायता, रोजगार-केंद्रित विकास मॉडल। बेरोजगारी दर को 8 प्रतिशत से नीचे लाने का दृढ़ संकल्प दिखता है। स्टार्टअप इंडिया फंड को 50,000 करोड़ रुपये का आवंटन युवा उद्यमिता को प्रोत्साहित करेगा। लेकिन सवाल वही है—क्या ये प्रयास नौकरियों का अवसर बनेंगे, या युवा पीढ़ी नौकरी के पीछे भटकती रहेगी?

तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) केंद्र स्थापना, 5जी स्पेक्ट्रम नीलामी से 2 लाख करोड़ राजस्व लक्ष्य। डिजिटल इंडिया को 1 लाख करोड़ रुपये। स्वच्छ ऊर्जा पर 5 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान—सौर पार्क, ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) पर 100 प्रतिशत बीमा, जन विश्वास विधेयक 2.0 से 100 से अधिक पुराने कानून सरलीकृत। ये कदम भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की रणनीति का हिस्सा हैं, लेकिन डिजिटल विभाजन को पाटना होगा ताकि ग्रामीण क्षेत्र भी तकनीक से वंचित न रहें।

अंत में, चुनौतियां भी कम नहीं। मुद्रास्फीति को 5.5 प्रतिशत पर नियंत्रित रखना, खाद्य महंगाई पर अंकुश। रक्षा बजट 6.5 लाख करोड़ रुपये से सीमा सुरक्षा मजबूत। पर्यावरण संरक्षण पर 1 लाख करोड़ रुपये, निर्यात प्रोत्साहन और नवाचार को बढ़ावा। बजट ने दिशा स्पष्ट कर दी है—अब क्रियान्वयन की रफ्तार और ईमानदारी ही परिणाम तय करेगी।

बजट 2026 गरीब, किसान, युवा, महिलाओं पर केंद्रित 10 प्रमुख क्षेत्रों का यथार्थवादी रोडमैप है। यह न केवल उम्मीदें जगाता है, बल्कि सवाल भी खड़े करता है। असली कसौटी अमल में होगी—दिशा साफ है, अब गति दिखाने की बारी!

बजट 2026-27 @ विज़न 2047- लोकलुभावन के आगे आत्मनिर्भर विकसित भारत क़ी लाज़वाब

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत का आम बजट २०२६ किसी चुनावी वर्ष की तात्कालिक लोकप्रियता की तलाश में गढ़ा गया दस्तावेज़ नहीं, बल्कि एक ऐसे राष्ट्र की आत्मविश्वासी घोषणा है जो अब अपने विकास की दिशा स्वयं तय करना चाहता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत यह बजट न तो भावनात्मक नारों से भरा है और न ही तात्कालिक राहतों की चकाचौंध में उलझा हुआ। हालांकि बजट पेश होते ही शेयर मार्केट सोना चांदी के रेट धड़ाम से गिरे बजट भाषण शुरू होने से पहले चला ग रिवट का दौर बजट स्पीच के बाद भी जारी रहा ग रिवट ग रिवट और स र्फि ग रिवट, शेयर बाजार से लेकर सोने- चांदी तक में आज के द नि ग रिवट हावी रही, सोने-चांदी में ग रिवट का हाल यह रहा क पि छिले एक से दो हफ्ते में ज तिना चढ़ा,उससे ज्यादा प छिले द नि में ग रि गया.परंतु इसकेविपरीत,मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह बजट भारत को अगले दो दशकों में एक आत्मनिर्भर, तकनीकी रूप से सक्षम और वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की ठोस रूपरेखा पेश करता है।75 वर्षों से चली आ रही बजट प्रस्तुति की परंपरा में सूक्ष्म लेकिन अर्थपूर्ण बदलाव करते हुए इस बार बजट के वैचारिक और नीतिगत केंद्र को नए सिरे से परिभाषित किया गया है, जो अपने आप में एक संकेत है कि भारत अब केवल प्रतिक्रिया देने वालीअर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि रणनीति गढ़ने वाला राष्ट्र बन चुका है।पिछले दशकों में केंद्रीय बजटों की संरचना ऐसी रही है जिसमें भाग 'ए' में व्यापक आर्थिक दृष्टिकोण और सरकार की प्राथमिकताएं रखी जाती थीं, जबकि भाग 'बी' को कर सुधारों और नीतिगत घोषणाओं तक सीमित कर दिया जाता था।बजट २०२६ में इस परंपरा से हटते हुएनीतिगत घोषणाओं को आर्थिक दर्शन से अलग नहीं रखा गया, बल्कि दोनों को एक ही निरंतर कथा में पिरोया गया है। यह बदलाव केवल तकनीकी नहीं,बल्कि वैचारिक है। इसका अर्थ है कि सरकार अब कर नीति, पूंजी निवेश, तकनीकी मिशन और सामाजिक ढांचे को अलग- अलग खानों में नहीं देखती, बल्कि उन्हें एक साझा राष्ट्रीय लक्ष्य की ओर अग्रसर उपकरण मानती है। पेपरलेस बजट की निरंतरता और लाल कपड़े से आगे डिजिटल युग की प्रस्तुति यह दर्शाती है कि शासन की भाषा और संरचना दोनों आधुनिक भारत के साथ कदम से कदम मिला रही हैं।

साथियों बात अगर हम 1 फरवरी २०२६ को पेश हुए बजट की करें तो,यह बजट ऐसे समय में आया है जब वैश्विक अर्थव्यवस्था अस्थिरता, भू- राजनीतिक तनाव और सप्लाई- चेन पुनर्संरचना के दौर से गुजर रही है।अमेरिका- चीन व्यापार तनाव, यूरोप की ऊर्जा चुनौतियां और उभरते बाज़ारों पर बढ़ता कर्ज़ दबाव इन सभी के बीच भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह शॉर्ट-टर्म लोक लुभावनवाद के बजाय दीर्घकालिक आर्थिक अनुशासन को प्राथमिकता देगा। वित्तमंत्री ने अपनें 90 मिनट के भाषण की शुरुआत ही निरंतरता, स्थिरता और दीर्घकालीन विकास की सोच से की,जो अपने आप में यह संदेश था कि यह बजट किसी एक वर्ष की नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों की दिशा तय करने वाला दस्तावेज़ है। चौंकाने वाली घोषणाओं की अनुपस्थिति को कमजोरी नहीं, बल्कि सटीक रूप से रणनीतिक परिपक्वता के रूप में देखा जाना चाहिए।

साथियों बात अगर हम इस बजट की सबसे हटकर बात की करें तो सरकार इस बजट में आर्थिक अनुशासन और जनता की आकांक्षाओं के बीच जिस संकरी राह पर चलती दिखती है, वह भारत जैसे विकासशील लेकिन महत्वाकांक्षी राष्ट्र के लिए अनिवार्य भी है। राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण रखते हुए विकास को गति देना किसी भी सरकार के लिए आसान कार्य नहीं होता, विशेषकर तब जब सामाजिक कल्याण,रोजगार सृजन और बुनियादी ढांचे की मांगें एक साथ खड़ी हों। बजट २०२६ ने यथार्थवादी और संयमित रुख अपनाते हुए यह स्वीकार किया है कि विकास का स्थायित्व केवल खर्च बढ़ाने से नहीं,बल्कि खर्च की गुणवत्ता सुधारने से आता है। यही कारण है कि इस बजट का केंद्रीय तत्व 'कैपेक्स- ड्रिवन ग्रोथ' है, न कि सब्सिडी- ड्रिवन कंजम्पशन।इस सोच का सबसे ठोस प्रमाण सेमीकंडक्टर मिशन २.0 की घोषणा में दिखाई देता है।वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में सेमीकंडक्टर अब केवल इलेक्ट्रॉनिक्स का घटक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, औद्योगिक आत्मनिर्भरता और भू- राजनीतिक शक्ति का प्रतीक बन चुके हैं।लगभग 40,000 करोड़ रूपए के निवेश के साथ इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन २.0 यह स्पष्ट संकेत देता है कि भारत अब केवल डिज़ाइन और सॉफ्टवेयर तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि हार्डवेयर निर्माण की वैश्विक वैल्यू-चेन में भी निर्णायक भूमिका निभाना चाहता है। यह पहल न केवल आयात निर्भरता कम करेगी, बल्कि भारत को एशिया- प्रशांत क्षेत्र में एक विश्वसनीय सेमीकंडक्टर हब के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखती है।पूंजीगत व्यय में प्रस्तावित वृद्धि इस बजट की रीढ़ है। वित्तवर्ष २7 के लिए 13.२ लाख करोड़ रूपए का कैपेक्स, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 9 प्रतिशत अधिक है, केवल एक संख्या नहीं बल्कि सरकार की प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत है। बुनियादी ढांचे, लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा और शहरी विकास में यह निवेश रोजगार सृजन के साथ-साथ निजी निवेश को भी आकर्षित करने का माध्यम बनेगा। आर्थिक इतिहास गवाह है कि जब सरकार पूंजीगत व्यय पर जोर देती है,तो उसका मल्टीप्लायर प्रभाव अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में महसूस किया जाता है। इस दृष्टि से बजट २०२६ एक क्लासिक क्राउड-इन रणनीति को अपनाता दिखता है, जिसमें सरकारी निवेश निजी क्षेत्र के लिए रास्ते खोलता है। इसी रणनीति का विस्तार हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर की घोषणाओं में भी दिखाई देता है। मुंबई-पुणे, हैदराबाद-बेंगलुरु और दिल्ली- वाराणसी जैसे मार्ग केवल परिवहन परियोजनाएं नहीं हैं,बल्कि शहरी- औद्योगिक क्लस्टरों को जोड़ने वाले विकास गलियारे हैं। सात हाई-स्पीड रेल मार्गों की घोषणा यह संकेत देती है कि भारत अब केवल सड़कों और पारंपरिक रेलवे तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि भविष्य की मोबिलिटी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निवेश कर रहा है। ये कॉरिडोर क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन को कम करने, पर्यटन को बढ़ावा देने और समय-लागत में कमी लाने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।रेयर अर्थ कॉरिडोर और ईस्ट-वेस्ट फ्रेट कॉरिडोर की योजना वैश्विक संसाधन राजनीति के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण

है ओडिशा केरल, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में रेयर अर्थ संसाधनों का विकास भारत को उन रणनीतिक सामग्रियों में आत्मनिर्भर बना सकता है जिन पर आज चीन का प्रभुत्व माना जाता है। यह पहल न केवल औद्योगिक सुरक्षा को मजबूत करेगी,बल्कि इलेक्ट्रिक वाहन,रिन्यूएबल एनर्जी और रक्षा क्षेत्र में भारत की क्षमता को भी नई ऊंचाई देगी। फ्रेट कॉरिडोर के माध्यम से लॉजिस्टिक्स लागत में कमी और सप्लाई-चेन की दक्षता बढ़ाना भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए अनिवार्य है।एमएसएमई क्षेत्र को लेकर बजट २०२६ का दृष्टिकोण भी उल्लेखनीय है। 10,000 करोड़ रूपए के एसएमई ग्रोथ फंड की स्थापना यह स्वीकार करती है कि भारत की आर्थिक रीढ़ छोटे और मध्यम उद्यम हैं। वित्तीय और तकनीकी सहायता के माध्यम से इन उद्यमों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़ना रोजगार सृजन और निर्यात वृद्धि के लिए आवश्यक है। यह पहल केवल क्रेडिट उपलब्धता तक सीमित नहीं, बल्कि स्किल, टेक्नोलॉजी और मार्केट एक्सेस को भी संबोधित करती है, जो लंबे समय से एमएसएमई सेक्टर की कमजोर कड़ी रही है।बायोफार्मा शक्ति योजना के अंतर्गत अगले पांच वर्षों में 10,000 करोड़ रूपए का निवेश भारत को वैश्विक स्वास्थ्य आपूर्ति श्रृंखला में और अधिक मजबूत स्थान दिला सकता है। कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि फार्मास्यूटिकल आत्मनिर्भरता किसी भी देश के लिए रणनीतिक आवश्यकता है। बायोफार्मा क्षेत्र में अनुसंधान, उत्पादन और नवाचार को बढ़ावा देकर भारत न केवल घरेलू जरूरतें पूरी कर सकेगा, बल्कि विकासशील देशों के लिए भरोसेमंद स्वास्थ्यभागीदार भी बन सकता है।

साथियों बात अगर हम कर सुधारों के संदर्भ में बजट को समझने की करें तो,२०२६ ने सरलता और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी है। आयकर अधिनियम के नवीनतम रूप के तहत नियमों का सरलीकरण, संशोधित रिटर्न फाइलिंग की समय सीमा में बदलाव और टीडीएस-टीसीएस में राहत जैसे कदम कर अनुपालन को आसान बनाने की दिशा में उठाए गए हैं।यह दृष्टिकोण दंडात्मक कर संस्कृति से हटकर 'ट्रस्ट-बेस्ड टैक्सेशन' की ओर बढ़ने का संकेत देता है, जो निवेशकों और करदाताओं दोनों के लिए सटीक सकारात्मक संदेश है।

साथियों बात अगर हम पर्यावरणीय ख़ुर्जा जलवायु और बजट के तालमेल को समझने की करें तो इस आयाम को नजर अंदाज किए बिना बजट ने कार्बन कैप्चर, यूटिलाइजेशन एंड स्टोरेज तकनीक के लिए २0,000 करोड़ रूपए का प्रस्ताव रखा है।यह कदम यह दर्शाता है कि भारत विकास और पर्यावरण संरक्षण को परस्पर विरोधी नहीं मानता, बल्कि उन्हें पूरक मानकर चलता है। ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाते हुए यह निवेश भारत को ग्रीन ट्रांजिशन का नेतृत्वकर्ता बना सकता है।मध्यम और छोटे शहरों के लिए प्रस्तावित सिटी इकोनॉमिक रीजन योजना शहरीकरण की नई सोच को प्रतिबिंबित करती है। प्रत्येक क्षेत्र के लिए 5,000 करोड़ रूपए के चुनौती-मोड निवेश यह संकेत देते हैं कि विकास केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहेगा। यह पहल क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने, स्थानीय रोजगार सृजन और संतुलित शहरी विकास के लिए निर्णायक साबित हो सकती है।जलमार्ग और हवाई जैसे ढांचागत विकास की घोषणाएं भी इस बजट की समग्र दृष्टि को रेखांकित करती हैं। अगले पांच वर्षों में २0 नए राष्ट्रीय जलमार्गों की शुरुआत और नेशनल वाटरवेज को सक्रिय करने की योजना लॉजिस्टिक्स में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। कम लागत, कम कार्बन उत्सर्जन और अधिक क्षमता ये तीनों लाभ जलमार्ग परिवहन को भविष्य का विकल्प बनाते हैं।इन सभी पहलों के बीच यह भी महत्वपूर्ण है कि बजट २०२६-२7 में पहले ही पूंजीगत व्यय को 15 लाख करोड़ तक बढ़ाया गया था, जो यह दर्शाता है कि सरकार का कैपेक्स- फोकस कोई एक- वर्षीय प्रयोग नहीं, बल्कि निरंतर नीति है। यह निरंतरता निवेशकों, उद्योग और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए विश्वास का आधार बनती है।

अत:अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि समग्र रूप सेदेखा जाए तो बजट २०२६ किसी लोक लुभावन कथा का विस्तार नहीं, बल्कि भारत के दीर्घकालिक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनने की ठोस रणनीति है। यह बजट वैश्विक मंच पर भारत को एक जिम्मेदार, अनुशासित और दूरदर्शी अर्थव्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करता है ऐसी अर्थव्यवस्था जो आज के लाभ के लिए कल को गिरवी नहीं रखती, बल्कि भविष्य की नींव वर्तमान में ही मजबूत करती है।

विश्व आर्द्र भूमि दिवस 2 फरवरी : जैव विविधता की समृद्धि का आधार है आर्द्रभूमि

प्रमोद दीक्षित मलय

प्रकृति जीवों-पादपों की पोषक है, सांसों का स्पंदन है। प्रकृति की रचना में जीवन का सौंदर्य एवं लास्य नर्तन है। ऊंचे उठे नभ छूते गिरि शिखरों पर हिम की रजत चादर हो या पर्वतों से जीवन धारा बन निकली बलखाती चंचल सरिताएं हों। तमाम पशु-पक्षियों एवं मानव को भोजन, आश्रय एवं जीवनोपयोगी संसाधन भेंट करते समृद्ध कानन हों या सतत गर्जना करते उत्ताल लहरों से लोक को नाना प्रकार के रत्नों के उपहार बांटते रत्नाकर महासागर हों। पशु-पक्षियों की क्षुधा मिटाते घास के विस्तीर्ण मैदान हों या फिर नागफनी जैसे कंटीले पौधों के रंग-बिरंगे फूलों से सजा रेगिस्तान। प्रकृति की यह वैविध्यपूर्ण बनावट धरती में जीवन गढ़ती है, रचती है। नदी, झील, डेल्टा, घाटी, जल, जंगल, पर्वत, पठार, उदधि, उपवन, रेत, खेत इन सभी में सौंदर्य बिखरा पड़ा है जो मानव मन को आकर्षित करता है। लेकिन प्रकृति की तमाम अद्भुत रचनाओं में से एक रचना पर हमारा ध्यान कभी नहीं जाता, हम उसके महत्व एवं पारिस्थितिकी तंत्र में उसकी भूमिका से सर्वथा अपरिचित हैं और वह अप्रतिम प्राकृतिक संरचना है आर्द्रभूमि अर्थात धरती का नमी वाला क्षेत्र। वायुमंडल में जलवाष्प की उपलब्धता, आंधी-तूफान और सागरीय चक्रवात, वर्षा एवं वायु विक्षोभ आदि का आधार भूमि की आर्द्रता ही होती है, यह हममें से बहुत कम लोग जानते हैं। इसलिए आर्द्रभूमि के महत्व एवं योगदान से परिचित कराने हेतु वैश्विक आयोजन प्रत्येक वर्ष 2 फरवरी को विश्व आर्द्रता दिवस के रूप में किया जाता है। रामसर सम्मेलन में हुई संधि की 55वीं वर्षगांठ हम 2026 में मना रहे हैं।

इसके पहले कि मैं आर्द्रभूमि दिवस मनाने के उद्देश्यों, जीवों-पादपों के जीवन चक्र पर आर्द्रता के पड़ने वाले प्रभावों एवं पारिस्थितिकी तंत्र की बनावट-बसाहट पर बात करूं, मुझे लगता है कि आर्द्रभूमि को समझना समीचीन होगा। आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र अंतर्गत धरती का वह विशेष क्षेत्र होता है जो आंशिक या पूर्णतः वर्ष भर, न्यूनतम आठ महीने, प्रायः जल में डूबा रहता है और जहां जलीय पादपों एवं जल-जीवों की तमाम प्रजातियां विकसित होकर इको सिस्टम को समृद्ध करती हैं। एक प्रकार से भरपूर नमीयुक्त यह दलदली भूभाग जलीय एवं स्थलीय जैव विविधता का मिलन बिंदु या संधि क्षेत्र होता है। दुर्भाग्य से मानवीय दख़ल एवं हस्तक्षेप से सम्पूर्ण विश्व में आर्द्रभूमि पर संकट उभरा है जो न केवल मानव जीवन बल्कि पूरे जीव-पादप विकास एवं जैव जीवन पर खतरा बनकर मंडरा रहा है, क्योंकि आर्द्रभूमि का खत्म होना या क्षेत्र कम होना पारिस्थितिकी तंत्र के प्राकृतिक चक्र को अस्थिर कर देगा और तब तमाम जीव-पादप प्रजातियां विलुप्त हो जायेंगी। इस दृष्टि से विचार करके 2 फरवरी, 1971 को कैस्पियन सागर के तट पर ईरान के रामसर नगर में आर्द्रभूमि के संरक्षण, युक्तिसंगत उपयोग एवं तत्संबंधी वैश्विक जागरूकता के लिए आयोजित सम्मेलन में एक समझौता हुआ जिसे रामसर संधि कहा जाता है। जिसमें कहा गया कि प्रत्येक देश अपने यहां नेचुरल वेट लैंड अर्थात प्राकृतिक आर्द्रभूमि को चिह्नित करेगा। ऐसे चिह्नित सभी स्थल रामसर साइट कहे जायेंगे और उनकी एक समग्र वैश्विक सूची बनाई जायेगी। वर्तमान समय में इस सूची में 172 देशों की 2530 से अधिक आर्द्र भूमियों का अंकन किया गया है। संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक रामसर साइट यूनाइटेड किंगडम में हैं तो क्षेत्रफल के हिसाब से दक्षिण अमरीकी देश बोलविया शीर्ष पर है। संयुक्त राज्य अमेरिका का एवरग्लेड्स वेटलैंड विश्व की सबसे बड़ी रामसर साइट है। इसके साथ ही इन सूचीबद्ध रामसर आर्द्रभूमियों में से ऐसे स्थल जो मानवीय हस्तक्षेप, प्रदूषण एवं तकनीकी विकास के कारण बड़े बदलावों का शिकार हुए या हो रहे हैं, उन्हें मोंट्रिक्स रिकार्ड नामक एक पंजिका में अंकित कर संरक्षण के विशेष प्रयास किये जाने हेतु योजना बनाई गयी है और सरकारी एजेंसियों एवं पर्यावरण मुद्दे पर केंद्रित स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा योजनानुसार संरक्षण कार्य किये जा रहे हैं। मोंट्रिक्स रिकार्ड सूची में भारत के दो आर्द्र स्थल शामिल हैं। वर्ष 1990 में केवलादेव घना पक्षी बिहार, भरतपुर (राजस्थान) तथा 1993 में लोमतक झील मणिपुर को संकटग्रस्त रामसर साइट के रूप में पहचाना गया। रामसर सम्मेलन के 26 साल बाद 2 फरवरी, 1997 को पहली बार विश्व आर्द्र भूमि दिवस मनाया गया।

बजट में ओडिशा के लिए बड़ी घोषणा, मिनरल कॉरिडोर और 5 जलमार्गों का निर्माण शुरू होगा

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: फाइनेंस मिनिस्टर निर्मला सीतारमण ने संसद में 9वां यूनियन बजट पेश किया है। देश के इंडस्ट्रियल और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट को नया लुक देने के लिए फाइनेंस मिनिस्टर निर्मला सीतारमण ने 'मिनरल कॉरिडोर' बनाने का बड़ा ऐलान किया है।वित्त मंत्री के अनुसार, यह मिनरल कॉरिडोर ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और केरल में बनाया जाएगा।ये कॉरिडोर मिनरल रिसोर्स से भरपूर इलाकों को सीधे इंडस्ट्रियल एरिया और पोर्ट से जोड़ेंगे। 5 साल में 20 नए वॉटरवे शुरू किए जाएंगे। ओडिशा में नेशनल वॉटरवे-5 शुरू किया जाएगा। यह तालचेर-अंगुल-कलिंग शहर को पारादीप से जोड़ेगा। इस कॉरिडोर के बनने से राज्य की इकोनॉमिक ग्रोथ तेज़ होगी। इससे हज़ारों डायरेक्ट और इनडायरेक्ट रोज़गार के मौके बनेंगे। खासकर ओडिशा के माइनिंग ज़िलों में इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप होगा और इन्वेस्टर नई इंडस्ट्री लगाने के लिए अट्रैक्ट होंगे।

प्लस टू परिख्या के लिए हब पर कड़ी सुरक्षा, AI कैमरे क्वेश्चन पेपर्स की सुरक्षा करेंगे

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्लस टू की परीक्षाएं 18 फरवरी से शुरू होंगी। इससे पहले, प्रश्नपत्र दो चरणों में परीक्षा मैनेजमेंट हब भेजे जाएंगे। परीक्षा में किसी तरह की गड़बड़ी न हो, इसके लिए काउंसिल ऑफ हायर सेकेंडरी एजुकेशन (CHSE) ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। पहले इस परीक्षा मैनेजमेंट हब में साधारण CCTV कैमरे लगाए गए थे।इस साल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) CCTV कैमरे लगाए जा रहे हैं। ये कैमरे क्वेश्चन पेपर पर नज़र रखेंगे। अगर हब में कोई गड़बड़ी दिखती है, तो यह तुरंत हेडक्वार्टर को अलर्ट करेगा। इसके लिए हेडक्वार्टर में 24 घंटे का कंट्रोल रूम खोला जाएगा। जिसमें कर्मचारी और अधिकारी CCTV पर नज़र रखेंगे। CHSE के मुताबिक, क्वेश्चन पेपर स्टोर करने के लिए 311 एग्जाम मैनेजमेंट हब (EMH) बनाए गए हैं। पहले फेज़ में क्वेश्चन पेपर 12 से 14 तारीख के बीच भेजे जाएंगे।

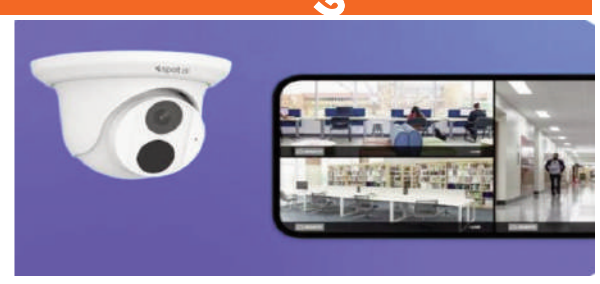

इसी तरह, दूसरे फेज़ में क्वेश्चन पेपर 4 से 6 मार्च के बीच हब पहुंच जाएंगे। हब सुपरवाइजर और डिप्टी सुपरवाइजर को हर समय अलर्ट रहने को कहा गया है। दूसरी ओर, CHSE इस बात के लिए सतर्क है कि एग्जाम के कंडक्ट में कोई गलती न हो। क्वेश्चन पेपर हब के स्ट्रांग रूम में चारों तरफ से AI कैमरे लगाए जाएंगे। स्ट्रांग रूम में जाने के लिए सिर्फ एक ही एंट्री होगी जहां ग्रिल वाला एक दरवाजा लगाया जाएगा। यह क्वेश्चन पेपर मिलने के बाद इसे अच्छे लॉक से सील कर दिया जाएगा। हब और हब के बाहर पुलिस और सिक्योरिटी वाले पहरा देंगे। बिना इजाज़त के लोग एग्जाम सेंटर में नहीं आ पाएंगे। लोकल पुलिस स्टेशन का IIC पुलिस सिक्योरिटी देगा।
24 घंटे AI कैमरों की लाइव स्ट्रीम चलेगी। अगर किसी वजह से CCTV काम नहीं करता है, तो हब अधिकारियों के खिलाफ एक्शन लिया जाएगा। CHSE के अधिकारी CCTV के सामने हब अधिकारियों को क्वेश्चन पेपर देंगे। हब में कौन आ-जा रहा है, इसकी डिटेल्स रजिस्टर में रखी जाएंगी। क्वेश्चन पेपर बांटने में कोई कन्फ्यूज़न न हो, इसके लिए CHSE की तरफ से 29 तारीख को सभी कॉलेज प्रेसिडेंट को लेटर लिखकर ज़रूरी क्वेश्चन पेपर की संख्या की जानकारी देने को कहा गया था। यह भी साफ किया गया है कि अगर अधिकारी जानकारी देने में कोई गलती करते हैं और क्वेश्चन पेपर की कमी होती है, तो CHSE ज़िम्मेदार नहीं होगा। बल्कि अधिकारियों के खिलाफ एक्शन लिया जाएगा।

केंद्र सरकार द्वारा बजट 2026 –2027 पेश किया गया जिसके लिए माननीय प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री जी को कोटी कोटी प्रणाम
टेक्सटाइल सेक्टर में मेगा पार्क और खादी–हथकरघा को मजबूत करने की 'महात्मा गांधी ग्राम स्वराज' पहल,
किसानों के लिए नारियल, काजू जैसी फसलों को बढ़ावा, कृषि विविधीकरण पर जोर।
सर्विस सेक्टर में रोजगार बढ़ाने

के लिए हाई–पावर्ड कमेटी गठित करने का ऐलान किया गया व
छोटे करदाताओं के लिए 6 महीने की विदेशी संपत्ति घोषणा योजना ओर इसी के साथ ITR फाइलिंग डेडलाइन बढ़ाने जैसे टैक्स राहत उपाय किए गए जो बहुत ही सराहनीय कदम उठाया गया उसके लिए भाजपा सरकार को धन्यवाद व आभार

भोलाराम पंवार
सचिव
सीरवी समाज बडेर शमशाबाद
हैदराबाद

रांची के अन्तरराज्य बस टर्मिनल खादगढ़ा मे छह बसें जलकर स्वाहा

एक ब्रेकडाउन शेष पांच विभिन्न जिलों तक चलती थी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , राजधानी रांची के लोअर बाजार थाना क्षेत्र अंतर्गत कांटाटोली खादगढ़ा स्थित अंतरराज्यीय बस टर्मिनल में रविवार को दिनदहाड़े भीषण आग लगने से छह बसें जलकर पूरी तरह नष्ट हो गईं। यह घटना दोपहर करीब ढाई बजे की है, जिससे बस स्टैंड परिसर में अफरा-तफरी मच गई। आग से बस संचालकों को लाखों रुपये का नुकसान होने का अनुमान है।

जानकारी के अनुसार, आग की चपेट में आई सभी बसें 40 सीट क्षमता वाली थीं। ये रांची से सिमडेगा, जमशेदपुर, धनबाद और आसपास के जिलों के लिए संचालित होती थीं। इनमें से एक बस लंबे समय से ब्रेकडाउन हालत में खड़ी थी, जबकि शेष पांच बसें चालू अवस्था में थीं। आगजनी में एलडी मोटर्स, किरण ट्रेवल्स, झारखंड पर्यटन की दो बसें, शिवचरण ट्रेवल्स और चंचल बस सर्विस की बसें शामिल हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सबसे पहले चंचल बस सर्विस की खड़ी बस में अचानक आग लगी। देखते ही देखते आग की लपटें आसपास खड़ी अन्य बसों तक फैल गईं। आग लगने के बाद बस स्टैंड पर मौजूद संवाहक, एजेंट, हॉकर, बुकर और यात्रियों में भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। स्थानीय लोगों ने उपलब्ध संसाधनों से आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग तेजी से फैलती चली गई।

घटना की सूचना मिलते ही खादगढ़ा टीओपी और लोअर बाजार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। डोरंडा से अग्निशमन विभाग की तीन दमकल गाड़ियां भी घटनास्थल पर भेजी गईं। दमकलकर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

आर्द्रभूमियाँ-प्रकृति का कवच और मानव अस्तित्व की कुंजी

-सुनील कुमार महला

हर वर्ष 2 फरवरी को विश्व आर्द्रभूमि दिवस (वर्ल्ड वेटलैंड्स डे) मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिवस 1971 में ईरान के रामसर शहर में हुए 'रामसर कन्वेंशन ऑन वेटलैंड्स' के हस्ताक्षर की स्मृति में मनाया जाता है। इस कन्वेंशन का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर की आर्द्रभूमियों (वेटलैंड्स) का संरक्षण और उनका विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि आर्द्रभूमियाँ (वेटलैंड्स) धरती के सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों में से एक हैं। ये वे क्षेत्र होते हैं जहाँ पानी और मिट्टी आपस में मिलते हैं, और जहाँ पूरे वर्ष या वर्ष के कुछ महीनों तक जलभराव रहता है, जैसे कि झीलें, तालाब, दलदल, मैंग्रोव, नदियों के किनारे के क्षेत्र आदि ।आर्द्रभूमियों को 'धरती के गुर्दे' कहा जाता है, क्योंकि ये पानी को स्वच्छ करने का काम करती हैं। ये जल में मौजूद प्रदूषकों, तलछट और अतिरिक्त पोषक तत्वों को सोख लेती हैं, जिससे भूजल साफ और सुरक्षित रहता है। इन्हें 'जैविक सुपरमार्केट' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ अत्यंत विस्तृत खाद्य जाल (फूड वेब) पाया जाता है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि पृथ्वी की लगभग 40% जैव विविधता आर्द्रभूमियों पर निर्भर है, जबकि ये पृथ्वी की सतह के केवल 6% क्षेत्र में ही फैली हुई हैं। आर्द्रभूमियाँ स्पंज की तरह कार्य करती हैं। बारिश के समय ये अतिरिक्त पानी को अपने अंदर समाहित कर लेती हैं और इस तरह बाढ़ की तीव्रता को कम करती हैं। साथ ही, ये कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर मिट्टी में जमा करती हैं, और कई बार जंगलों से भी अधिक प्रभावी ढंग से ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में मदद करती हैं। इसी कारण इन्हें 'कार्बन सिंक' भी कहा जाता है ।विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य आर्द्रभूमियों के पारिस्थितिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। इसके साथ ही, इनके संरक्षण और सतत प्रबंधन को बढ़ावा देना, ताकि ये प्राकृतिक प्रणालियाँ लंबे समय तक बनी रहें। इस दिवस का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य स्थानीय समुदायों और नीति निर्माताओं को जोड़ना है, ताकि आर्द्रभूमियों के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास किए जा सकें ।हर वर्ष इस दिवस के लिए एक विशेष थीम निर्धारित की जाती है ।2025 की थीम थी-'हमारे साझा भविष्य के लिए आर्द्रभूमि का संरक्षण ।' इस वर्ष यानी कि 2026 की थीम है-'आर्द्रभूमियाँ और पारंपरिक ज्ञान: सांस्कृतिक विरासत का उत्सव ।' वास्तव में, यह थीम यह दर्शाती है कि पारंपरिक और स्थानीय समुदायों का ज्ञान आर्द्रभूमियों के संरक्षण और प्रबंधन में हमेशा से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है और आज भी उनकी संस्कृति व जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यदि हम यहां पर आर्द्रभूमियों के महत्व की बात करें तो ये पानी का नियमन और शुद्धिकरण करती हैं,जैव विविधता का घर हैं, आजीविका का स्रोत हैं (मछली पकड़ना, कृषि, पर्यटन और रोजगार),तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायक हैं। बहरहाल, यदि वैश्विक आँकड़ों पर नज़र डालें, तो विश्व में कुल 2,520 रामसर साइट्स हैं, जो लगभग 2.53 करोड़ हेक्टेयर (25.3 मिलियन वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र में फैली हुई हैं तथा अब तक 172 से अधिक देशों ने रामसर कन्वेंशन को अपनाया है, और यह दुनिया का सबसे बड़ा संरक्षित पारिस्थितिक तंत्र नेटवर्क माना जाता है। भारत की बात करें तो यहाँ 98 रामसर साइट्स हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियों के रूप में मान्यता मिली है। हाल ही में पटना बर्ड सैंक्चुअरी और छारी-धंध बर्ड सैंक्चुअरी को इस सूची में जोड़ा गया है। ये सभी मिलकर लगभग 13.60 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करती हैं। उल्लेखनीय है कि रामसर साइट्स की संख्या के मामले में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर और एशिया में पहले स्थान पर है ।इसके अलावा, झारखंड में उधवा झील, तमिलनाडु में तीरतंगल और सक्काराकोट्टई, तथा सिक्किम में खेचियोपलरी को भी नवीन रामसर स्थलों की सूची में शामिल किया गया है। ये झारखंड और सिक्किम के पहले रामसर स्थल हैं ।इसके साथ ही, भारत में रामसर स्थलों की संख्या बढ़कर 89 भी बताई गई है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार तमिलनाडु में सबसे अधिक 20 रामसर स्थल हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में 10 स्थल हैं ।भारत के प्रमुख वेटलैंड्स में क्रमशः चिल्का झील (ओडिशा), केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान), सांभर साल्ट लेक (राजस्थान), लोकटक झील (मणिपुर) और सुंदरबन मैंग्रोव (पश्चिम बंगाल) प्रमुख हैं ।आज विश्व और भारत में आर्द्रभूमियाँ अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। हालिया अध्ययनों के अनुसार, दुनिया की 20% से अधिक आर्द्रभूमियाँ पिछले दशकों में नष्ट हो चुकी हैं ।भूमि उपयोग में बदलाव, प्रदूषण, कृषि विस्तार, औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन इसके प्रमुख कारण हैं। आर्द्रभूमियों के लिए सबसे बड़ा खतरा औद्योगिक और मानवीय अपशिष्ट से उत्पन्न प्रदूषण है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत सरकार ने जून 2023 में 'अमृत धरोहर पहल' की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य रामसर स्थलों का संरक्षण करना है। यह पहल चार प्रमुख क्षेत्रों प्रजाति और आवास संरक्षण, प्रकृति पर्यटन,आर्द्रभूमि आधारित आजीविका तथा आर्द्रभूमि कार्बन पर केंद्रित है। यह कहना गलत नहीं होगा कि वेटलैंड्स को बचाना केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की रक्षा है। बाढ़ और सूखे से सुरक्षा, भूजल रिचार्ज, जैव विविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से लड़ाई, खाद्य और आजीविका सुरक्षा-इन सबके लिए आर्द्रभूमियाँ अनिवार्य हैं ।आर्द्रभूमियों को बचाने के लिए अतिक्रमण पर सख़्त रोक लगानी होगी, झीलों, तालाबों, दलदलों और मैंग्रोव क्षेत्रों में अवैध निर्माण व भराव पर कार्रवाई करनी होगी। इतना ही नहीं, आर्द्रभूमियों का स्पष्ट सीमांकन (डिमार्केशन) करना आवश्यक है ।इसके साथ ही, घरेलू सीवेज, औद्योगिक कचरा और प्लास्टिक को आर्द्रभूमियों में जाने से रोकना होगा। नालों के पानी को ट्रीटमेंट प्लांट में शोधन के बाद ही छोड़ा जाना चाहिए। पूजा सामग्री और मूर्ति विसर्जन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करनी होगी। आर्द्रभूमियों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक जल प्रवाह बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। नदियों, नालों और झरनों का वेटलैंड्स से प्राकृतिक जुड़ाव बना रहना चाहिए। अनावश्यक बाँधों, सड़कों और तटबंधों से जल मार्ग अवरुद्ध नहीं होने चाहिए ।स्थानीय समुदायों की भागीदारी आर्द्रभूमि संरक्षण में सबसे महत्वपूर्ण है। मछुआरों, किसानों और ग्रामीणों को संरक्षण का साझेदार बनाना होगा तथा पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय तरीकों का उपयोग करना होगा ।इसके साथ ही जैव विविधता का संरक्षण,पक्षियों, मछलियों और जलीय पौधों की रक्षा,बाहरी और आक्रामक प्रजातियों पर नियंत्रण, मैंग्रोव और जलीय वनस्पतियों का पुनरोपण आवश्यक है ।साथ ही साथ, कानून और नीतियों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। वेटलैंड्स (संरक्षण एवं प्रबंधन) नियम–2017 को प्रभावी रूप से लागू करना, सभी रामसर स्थलों के लिए विशेष प्रबंधन योजना बनाना और पर्यावरण प्रभाव आकलन को अनिवार्य करना बेहद जरूरी है ।सबसे अंत में, जन-जागरूकता और शिक्षा सबसे प्रभावी हथियार है। स्कूलों और कॉलेजों में वेटलैंड शिक्षा, 2 फरवरी को जागरूकता अभियान, मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी फैलाकर आर्द्रभूमियों को बचाया जा सकता है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या और विकास के इस दौर में हमें प्रकृति-संवेदनशील शहरी विकास अपनाना होगा। वास्तव में, आज हमें कंक्रीट नहीं, कनेक्टिविटी का सिद्धांत अपनाना होगा। स्मार्ट सिटी योजनाओं में ब्लू-ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देकर आर्द्रभूमियों को सुरक्षित रखा जा सकता है ।यह बात हमें अपने जेहन में रखनी चाहिए कि आर्द्रभूमियाँ हमारे जीवन का आधार हैं तथा इन्हें बचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी और कर्तव्य है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

दिखावे का रोग: एक आधुनिक महामारी

डॉ विजय गर्ग

आज का समाज एक अजीब बीमारी से ग्रस्त होता जा रहा है—दिखावे का रोग। यह रोग न शरीर में दिखाई देता है, न मेडिकल रिपोर्ट में पकड़ा जाता है, लेकिन यह धीरे-धीरे मन, रिश्तों और मूल्यों को खोखला कर देता है। आधुनिक जीवनशैली, सोशल मीडिया और प्रतिस्पर्धा ने इसे और भी घातक बना दिया है।

दिखावे का अर्थ है—वह बनने की कोशिश करना, जो हम वास्तव में नहीं हैं। महंगे कपड़े, बड़ी गाड़ियाँ, सोशल मीडिया पर "परफेक्ट लाइफ" की तस्वीरें, उधार लेकर किए गए शौक, और हैसियत से बढ़कर खर्च—ये सब इसी रोग के लक्षण हैं। व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान से असंतुष्ट होकर दूसरों को प्रभावित करने में ऊर्जा खपाने लगता है।

यह रोग केवल आर्थिक नुकसान तक सीमित नहीं है। इसके कारण मानसिक तनाव, ईर्ष्या, हीनभावना और अकेलापन बढ़ता है। लोग मुस्कुराती तस्वीरों के पीछे चिंता, कर्ज़ और टूटे रिश्ते छिपाए रहते हैं। दिखावे की दौड़ में इंसान अपनों से भी प्रतिस्पर्धा करने लगता है, जिससे पारिवारिक और सामाजिक संबंध कमजोर होते जाते हैं।

सोशल मीडिया इस रोग को खाद-पानी देता है। वहाँ जीवन की सच्चाई नहीं, बल्कि संपादित क्षण दिखाए जाते हैं। तुलना की यह आदत हमें यह महसूस कराती है कि हम "कम" हैं—कम सफल, कम खुश, कम स्टाइलिश। जबकि सच्चाई यह है कि हर जीवन में संघर्ष होता है, बस उसे फ़िल्टर के पीछे छुपा दिया जाता है।

दिखावे का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह संतोष को मार देता है। जब संतोष खत्म होता है, तो आनंद भी चला जाता है। व्यक्ति "होने" से ज़्यादा "दिखने" पर ध्यान देने लगता है। धीरे-धीरे मूल्यों, सादगी और ईमानदारी की जगह ब्रांड, लाइक्स और वाहवाही ले लेती है।

इस रोग का इलाज मुश्किल नहीं, बस ईमानदारी चाहिए—खुद से। अपनी सीमाओं को स्वीकार करना, जरूरत और चाहत में फर्क समझना, और यह जानना कि सच्ची खुशी बाहरी चमक में नहीं, भीतर की शांति में है। सादगी कोई कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मविश्वास की पहचान है।

दिखावे का रोग: एक आधुनिक महामारी

1. सोशल मीडिया और 'परफेक्ट' लाइफ का भ्रम

आजकल हमारी जिंदगी का बड़ा हिस्सा स्क्रीन पर बीतता है। हम भोजन का स्वाद लेने से पहले उसकी फोटो खींचते हैं ताकि दुनिया को दिखा सकें कि हम कितना ₹लक्जरी₹ जीवन जी रहे हैं। लाइक, शेयर और कमेंट्स की भूख ने हमें आत्म-प्रदर्शन का गुलाम बना दिया है। अक्सर लोग दूसरों की एडिट की हुई तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जिंदगी को 'कमतर' आंकने लगते हैं।

2. प्रदर्शन की अर्थव्यवस्था

लोग वह सामान खरीद रहे हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं है, उन पैसों से जो उनके पास नहीं हैं (क्रेडिट कार्ड या लोन), सिर्फ उन लोगों को प्रभावित करने के लिए जिन्हें वे पसंद भी नहीं करते।

महंगे गैजेट्स: हर साल नया फोन लेना जरूरत नहीं, स्टेटस सिंबल बन गया है।

दिखावे की शादियाँ: लोग सालों की कमाई एक दिन के दिखावे में उड़ा देते हैं।

3. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रहार

दिखावे की यह होड़ हमें मानसिक रूप से खोखला कर रही है। जब हम अपनी वास्तविकता और दिखावटी छवि के बीच के अंतर को नहीं भर पाते, तो निम्नलिखित समस्याएं जन्म लेती हैं:

तुलना का जहर: दूसरों से अपनी तुलना करना ही दुख का मूल कारण है।

अकेलापन: भीड़ में चमकने की चाहत में हम अपनों से असली जुड़ाव खो देते हैं।

तनाव और चिंता: हमेशा 'अप-टू-डेट' दिखने का दबाव हमें चैन से जीने नहीं देता।

समाज तभी स्वस्थ होगा, जब हम दिखावे से बाहर निकलकर वास्तविकता को अपनाएँगे। जो हैं, वही रहना—आज के समय में यही सबसे बड़ा साहस है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

नीट—जेईई से आगे भी एक दुनिया है

डॉ विजय गर्ग

हर साल लाखों विद्यार्थी नीट यूजी और जेईई की तैयारी में अपना किशोरावस्था और युवावस्था का बड़ा हिस्सा लगा देते हैं। कोचिंग सेंटर, मॉक टेस्ट, रैंक, कट-ऑफ—सब कुछ जीवन का केंद्र बन जाता है। सफलता मिली तो जश्न, नहीं मिली तो आत्मग्लानि। लेकिन एक जरूरी सवाल अक्सर अनसुना रह जाता है—क्या जीवन केवल नीट या जेईई तक ही सीमित है?

सच यह है कि ये परीक्षाएँ करियर के एक रास्ते खोलती हैं, पूरा भविष्य तय नहीं करतीं। भारत जैसे विशाल और विविध देश में प्रतिभा के लिए अवसरों की कमी नहीं है, कमी है तो जानकारी और दृष्टि की। विज्ञान, तकनीक और चिकित्सा के अलावा भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहाँ जुनून, कौशल और निरंतर सीखने से सार्थक और सम्मानजनक जीवन बनाया जा सकता है।

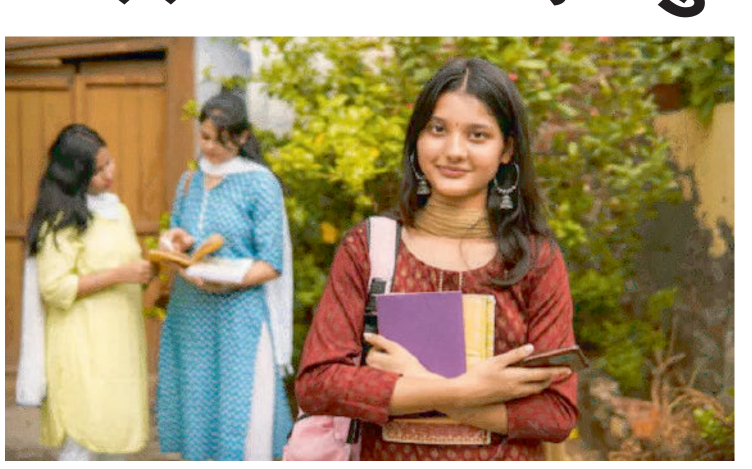

आज के समय में बेसिक साइंस, डेटा साइंस, बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरण अध्ययन, डिज़ाइन, आर्किटेक्चर, लॉ, इकोनॉमिक्स, पब्लिक पॉलिसी, जर्नलिज़्म, एजुकेशन, साइंस कम्युनिकेशन और स्टार्टअप्स जैसे क्षेत्र तेज़ी से उभर रहे हैं। कई बार ये क्षेत्र व्यक्ति की रुचि और स्वभाव से ज़्यादा मेल खाते हैं, जिससे काम बोझ नहीं, आनंद बन जाता है।

नीट/जेईई की तैयारी अपने आप में व्यर्थ नहीं है। यह अनुशासन, परिश्रम और धैर्य सिखाती है। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब परीक्षा का परिणाम व्यक्ति के आत्म-मूल्य से जोड़ दिया जाता है। असफलता को अयोग्यता मान लेना सबसे बड़ा भ्रम है। इतिहास गवाह है—कई महान वैज्ञानिक, लेखक, उद्यमी और शिक्षक पारंपरिक "टॉपर" नहीं थे। माता-पिता और समाज की भूमिका यहाँ निर्णायक है। बच्चों को एक ही फ्रेम में फिट करने के बजाय उनकी रुचियों को पहचानना और विकल्पों की जानकारी देना ज़रूरी है। करियर एक मैरेथन है, सौ मीटर की दौड़ नहीं। रास्ते बदलते हैं, लक्ष्य परिभाषित होते रहते हैं।

नीट–जेईई से आगे सोचने का अर्थ है—
रैंक से आगे सीखना,
डिग्री से आगे कौशल,
और तुलना से आगे आत्मविश्वास।

अंततः सफलता वही है, जहाँ व्यक्ति न सिर्फ़ अच्छा कमा सके, बल्कि सार्थक योगदान दे सके और मानसिक रूप से संतुलित रह सके। परीक्षा एक पड़ाव है, मंज़िल नहीं। जीवन की किताब का यह सिर्फ़ एक अध्याय है—पूरी कहानी अभी बाकी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

परिवहन विशेष के सभी पाठकों के लिए खुशखबरी

संजय कुमार बाठला:- मुख्य संपादक

3 फरवरी 2026 से आपके लिए दैनिक समाचार पत्र परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक और English Daily में उपलब्ध हो जाएगा।

अब आप परिवहन विशेष को दोनों भाषाओं में आनलाइन और हार्ड कापी में प्राप्त कर सकते हैं और अपने लेख, समाचार, कविता, एवम्-अपनी समस्याओं को हमें दोनों भाषाओं में भेज सकते है और जनकल्याण जनसूचना जानकारी दोनों भाषाओं में प्राप्त कर सकते हैं।

जल्द ही आप ₹परिवहन विशेष₹ समाचार पत्र को गुरुमुखी और बंगाली भाषा मे भी प्राप्त कर पाएंगे।

वर्ष 2026 में ही परिवहन विशेष दैनिक समाचार पत्र 5 भाषाओं में आनलाइन और हार्ड कापी में आप सभी पाठकों के लिए संपूर्ण भारत में उपलब्ध हो जाएगा।

इसी के साथ 2027 अंत तक आपको परिवहन विशेष का न्यूज चैनल 24 घंटे के लिए उपलब्ध हो जाएगा।

आप हम से सच जानने के लिए जुड़े रहे और हमें अपने विचार और समाचार पत्र को आपके प्रति और बेहतर बना कर पहुंचाने के लिए अपने विचार भेजते रहे।

आपके विचार हमारे लिए अनमोल हैं

Registrtoin No :- DLENG/26/A0658 www.newsparivahan.com India's First Leading English Transport Newspaper

Parivahan Vishesh

Vol. 01, Issue 01, New Delhi, Satuday 28 January 2026, ₹ 5, Page 8

03 NMC data shows India added just 21 doctors in a | 06 School Students Visit Delhi Assembly Exhibition | 08 'I didn't say give your Nobel to me': Trump

Medical education body makes nationwide faculty attendance tech go high tech

Parivahan Vishesh News

Nitin Gadkari Sets 5-Year Target To Make India's Auto Industry World's No. 1

Parivahan Vishesh News

New Delhi. Union Minister for Road Transport and Highways Nitin Gadkari recently outlined a bold vision to make India's automobile industry the largest in the world within the next five years. Speaking at the Federation of Automobile Dealers Associations' (FADA) 7th Auto Retail Conclave, Gadkari emphasised that the sector's growth trajectory, cost competitiveness and adoption of new technologies could propel India ahead of the United States and China to become the No. 1 global auto industry by 2030. Also Read Ola Electric CEO Busts EV Myths: Electric Scooters Are 90% Cheaper To Run Than ICE 2Ws Gadkari noted the industry's rapid expansion during his tenure, highlighting that when he assumed office, the sector was valued at around ₹14 lakh crore and ranked seventh globally. India has since overtaken Japan and become the third-largest automobile market, with an industry size of approximately ₹32 lakh crore. The United States remains the largest market at roughly ₹78 lakh crore, followed by China at around ₹49 lakh crore. The minister stressed that India's competitive manufacturing costs and good vehicle quality position it favourably for global leadership. ₹By developing alternative fuels, biofuels, battery chemistries, new technology, and innovation, I am confident that within five years our target is to make India number one in the world. It is difficult, but not impossible,₹ he said. Gadkari outlined several structural strengths that support this ambition. He pointed to India's large and skilled workforce, cost-effective production ecosystem, and the presence of major global automakers with local manufacturing and export operations. These factors, he said, provide a foundation for scaling production and enhancing India's role as a global manufacturing hub with a strong export focus. Recommended For You Toyota Urban Cruiser Ebella Vs eVitara: Design, Range, Features Compared Clean mobility technologies were central to his remarks. Gadkari emphasised that future growth would be anchored not just in conventional automotive manufacturing but also in electric vehicles, hydrogen, ethanol and other low-carbon fuel technologies. He acknowledged that the transition to greener vehicles would be gradual, noting that established internal combustion demand would continue alongside emerging technologies as part of a broader industry shift. The minister also pointed to India's success in exports, especially in the two-wheeler segment, where production for international markets has expanded significantly. He highlighted that India now hosts production and export operations for numerous global brands, suggesting that export-oriented manufacturing will be a key driver of future growth. While the target of becoming the world's No. 1 automobile industry within five years is ambitious, Gadkari's vision reflects the government's strategic focus on industrial growth, export capacity expansion, and technology adoption as it aims to enhance global competitiveness. However, if this vision can actually be executed is something only time will tell.

School Students Visit Delhi Assembly Exhibition on PM Modi's Journey

A group of school children visited the exhibition titled "Service is the Resolve, India First the Inspiration — 75 Years, An Experience and An Exhibition" underway at the Delhi Legislative Assembly, here today.

Parivahan Vishesh News

New Delhi . Agroup of school children visited the exhibition titled "Service is the Resolve, India First the Inspiration — 75 Years, An Experience and An Exhibition" underway at the Delhi Legislative Assembly, here today. The exhibition is dedicated to showcasing the life, journey, and contributions of Prime

The exhibition offered young minds a meaningful opportunity to engage with India's recent history and leadership. Deputy Speaker

that such initiatives help instil patriotic values and civic awareness among the younger generation.

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत की अपील

पिंकी कुंडू

कल से नकद राशि में भीख देना बंद कर दीजिए भिखारियों को (भोजन + पानी) जरूर दें, लेकिन एक भी रुपया कैश नहीं दे ।

पूरे जयपुर में इस तरह का एक अलग आंदोलन शुरू हुआ हो, चाहे किसी भी प्रकार का भिखारी हो वहां के लोगों ने प्रण किया है की वह नकद राशि में किसी भी भिखारी को भीख नहीं देंगे, मदद करेंगे वह कपड़े, फल और भोजन के रूप में और यह आंदोलन बिल्कुल सही है।

आप भी प्रण लें चाहे कोई भी (महिला / पुरुष / वृद्ध / दिव्यांग / बच्चा) भीख मांग रहा हो, आप पैसे की बजाय (भोजन + पानी) देंगे, लेकिन आज से पैसे की भीख नहीं देंगे।

इसका परिणाम यह होगा कि अंतरराष्ट्रीय / राष्ट्रीय / राज्य स्तर पर सक्रिय 'भिखारी' गिरोह टूट जाएंगे और छोटे बच्चों का अपहरण अपने आप बंद हो जाएगा। अपराध की दुनिया में सक्रिय ऐसे गिरोहों का अंत होगा।

आप से निवेदन है की एक भी रुपया भिखारी को कृप्या ना दें। अगर बहुत दया आती हो तो गाड़ी में 2 बिस्किट के पैकेट रखें, लेकिन पैसे ना दें।

श्री हनुमान धाम में 18 फरवरी को होगा भव्य प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

अमृतसर 1 फरवरी +साहिल बेरी)

जय श्री राम के उद्घोष के साथ ए-ब्लाक, श्री गुरु तेग बहादुर नगर, माल मंडी स्थित श्री हनुमान धाम में भगवान श्री हनुमान जी के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ किया जा रहा है। यह पावन आयोजन 15 फरवरी से 18 फरवरी 2026 तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ संपन्न होगा।

आयोजकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, कार्यक्रमों की शुरुआत 15 फरवरी 2026 (रविवार) को प्रातः 10:00 बजे हवन के साथ होगी। इसके उपरांत प्रातः 11:00 बजे कलश यात्रा तथा दोपहर 1:00 बजे शोभा यात्रा निकाली जाएगी।

16 फरवरी 2026 (सोमवार) को प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक जलवास-अवसास का आयोजन किया जाएगा।

इसके पश्चात 17 फरवरी 2026 (मंगलवार) को प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक महास्नान एवं महानिवास की विधियां संपन्न होंगी।

मुख्य आयोजन 18 फरवरी 2026 (बुधवार) को प्रातः 9:00 बजे से प्राण प्रतिष्ठा पूजा के साथ आरंभ होगा, जबकि दोपहर 12:00 बजे पूर्ण आहूति डाली जाएगी। पूर्ण आहूति के पश्चात श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद की व्यवस्था की गई है।

इस पावन अवसर पर श्री हनुमान सेवा परिवार ट्रस्ट (रजि.) द्वारा समस्त भक्तजनों एवं उनके परिवारों को सादर आमंत्रित किया गया है। आयोजकों ने अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालुओं से उपस्थित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करने की अपील की है।

अमृतसर वेस्ट विधायक ऑफिस में श्रद्धा से मनाई गुरु रविदास जी की 649वीं जयंती

-गुरु रविदास जी ने अपना पूरा जीवन समाज में फैली कुरीतियों को मिटाने और समानता का संदेश देने में समर्पित किया- विधायक जसबीर संधू

अमृतसर,1फरवरी(साहिल बेरी)

अमृतसर हल्का वेस्ट ऑफिस में गुरु रविदास जी की 649वीं जयंती बड़ी श्रद्धा से विधायक डॉक्टर जसबीर सिंह संधू की ओर से मनाई गयी। गुरु रविदास जी के सुंदर स्वरूप पर फूलों से श्रृंगार किया गया और श्रद्धा के साथ नाम जपते हुए माथा टेका। इस मौके विधायक संधू की ओर से पहुंचे वेस्ट साथियों में लड्डू प्रसाद भी बाटा गया। इस मौके विधायक डॉक्टर जसबीर सिंह संधू ने कहा कि आज पूरी दुनिया मे गुरु रविदास जी की जयंती श्रद्धा से मनाई जा रही और जगह-जगह पर लंगर लगाए है व सोभा यात्रा निकाली जा रही है। विधायक संधू ने कहा कि

15वीं शताब्दी के महान संत, समाज सुधारक और कवि गुरु रविदास जी ने अपना पूरा जीवन समाज में फैली कुरीतियों को मिटाने और समानता का संदेश देने में समर्पित कर दिया। वे हमेशा जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे रहते थे और मानते थे कि ईश्वर द्वारा बनाए गए सभी लोग, चाहे अमीर हों या गरीब, समान हैं। उनोने कहा कि

इस दिन संत रविदास के अनुयायी उनकी कही बातों को याद करते हैं। संत रविदास ने अपने जीवन में अनेक दोहों की रचना की। ये दोहे हमारे जीवन को भी नई दिशा दे सकते हैं। इसलिए हमेशा हमें उनके दोहे पढ़ने चाहिए और सेंध लेनी चाहिए।संगठन इंचार्ज हरप्रीत सिंह बेदी, पार्षद विजय भगत, पार्षद अमरजीत गुमटाला, दिलबाग सिंह वडाली, पंकज शर्मा, सुरजीत सिंह खालसा, बलविंदर सिंह गोरा, दविंदर सिंह, सुरजीत सिंह मल्ही, अजय कुमार ,पी ए माधव शर्मा आदि उपस्थित थे ।

श्री गुरु रविदास जी की जयंती पर डॉ गुप्ता ने विभिन्न कार्यक्रमों में पहुंचकर गुरु जी के चरणों में नतमस्तक होकर आशीर्वाद लिया

अमृतसर, 1 फरवरी (साहिल बेरी)

2026 :सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत श्री गुरु रविदास जी की 649 वीं जयंती पर केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता ने शहर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमो में पहुंच कर गुरु जी के चरणों में नतमस्तक होकर आशीर्वाद लिया तथा गुरु चरणों में सरबत के भले की अरदास की। विधायक डॉ गुप्ता ने भूषण पूरा क्षेत्र, हॉल गेट , शक्ति नगर, गोल हट्टी चौक और अन्य क्षेत्रों में श्री गुरु रविदास जी मंदिर में नतमस्तक हुए , जहां आयोजक कमेटी के सदस्यों द्वारा विधायक डॉ अजय गुप्ता को सम्मानित भी किया गया।

विधायक डॉ गुप्ता ने सभी को श्री गुरु रविदास जी की जयंती पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गुरु रविदास जी ने अपने समय में गैर बराबरी पर आधारित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर चोट की थी। गुरु जी के दोहे 'ऐसा चाहूं राज मैं मिले सबों को अन्न छोट बड़ सम बसें रविदास रहे प्रसन्न' का उच्चारण करते हुए विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि इस दोहे के माध्यम से गुरु रविदास जी ने सामाजिक एवं आर्थिक विषमता को मिटाकर समाजिक एवं आर्थिक क्षमता की वकालत की।

विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि गुरु रविदास जी ने अपने सत्संग और कीर्तन के माध्यम से निर्गुण भक्ति करते हुए जगह-जगह घूम कर देश के दलित पीड़ित शोषित समाज को जागृत करने का काम किया। आज भी उनके जीवन और संघर्षों से प्रेरणा लेकर समाज को जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने सभी को गुरु जी दर्शाए मार्ग पर चलते हुए अपने गुरुओं और महापुरुषों के सपनों को पूरा करने का आह्वान किया। उन्होंने गुरु रविदास जी के जीवन और संघर्षों से प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त जातिवाद एवं अन्य विषमता को दूर करने की भी अपील की।

वित्त मंत्री निर्मला का हुआ निर्देश मानसिक स्वास्थ्य व तन्त्रिका विज्ञान का दुसरा अस्पताल पुनः रांची मे

मंत्री निर्मला सीतारमण ने दूसरी यूनिट देने की घोषणा की, उत्तर भारत कों मिलेगा फायदा

कार्तिक कुमार परिच्छा , स्टेट हेड -झारखंड

रांची, केंद्रीय बजट में झारखंड को हेल्थ सेक्टर में बड़ी सौगात मिला है। राजधानी रांची में राज्य को अपना पहला NIMHANS मिलने वाला है, जिससे उत्तरी भारत में मेंटल हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर और बेहतर होगा। रांची पहले से ही अपने मेंटल हेल्थ संस्थानों के लिए जानी जाती है।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रविवार को रांची में दूसरे नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज (NIMHANS 2.0) की स्थापना की घोषणा की। पहला NIMHANS बेंगलुरु में स्थित है।

रांची में दो बड़े हेल्थ इंस्टीट्यूट पहले से ही काम कर रहे हैं। इनमें से एक केंद्र सरकार द्वारा चलाया जाने वाला सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ साइकियाट्री (CIP) और दूसरा राज्य सरकार का रांची इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो-साइकियाट्री एंड एलाइड साइंसेज (RINPAS) है। ये दोनों सालों से साइकियाट्रिक केयर, रिसर्च और रिहैबिलिटेशन के लिए प्रमुख सेंटर के तौर पर काम कर रहे हैं।

सिआईपी अधिकारियों ने इस घोषणा पर खुशी जताई है और कहा है कि वे NIMHANS की तर्ज पर संस्थान को अपग्रेड करने की मांग कर रहे थे। इस संस्थान की स्थापना अंग्रेजों ने 17 मई, 1918 को रांची यूरोपियन ल्यूनेटिक असाइलम नाम से की थी।

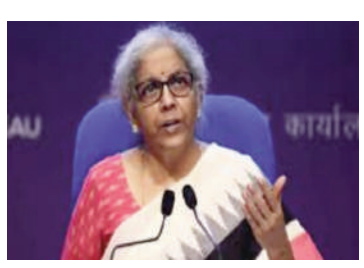

सीआईपी रांची के डायरेक्टर विजय कुमार चौधरी ने कहा कि उन्होंने संस्थान को अपग्रेड करने का प्रस्ताव पहले ही केंद्र सरकार को भेज दिया है। चौधरी ने पीटीआई को बताया कि हमने संस्थान कैंपस में 500 बेड के नए अस्पताल का प्रस्ताव दिया है, जिसमें न्यूरो-सर्जरी, न्यूरोलॉजी विभाग और पीडियाट्रिक्स विभाग जैसी सुविधाएं होंगी।

उन्होंने कहा कि हमें भरोसा है कि आने वाले फाइनेंशियल ईयर में बजट पास हो जाएगा। यह सबसे बड़े अपग्रेड में से एक होगा और इससे झारखंड और आसपास के राज्यों के लोगों को फायदा होगा।उन्होंने आगे कहा कि CIP 220 एकड़ में फैला हुआ है। हमें उम्मीद है कि हम आने वाले फाइनेंशियल ईयर में प्रोजेक्ट शुरू कर देंगे।

संसद में केंद्रीय बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि उत्तर भारत में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए कोई राष्ट्रीय संस्थान नहीं हैं। इसलिए हम NIMHANS 2.0 स्थापित करेंगे और रांची और तेजपुर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों को भी क्षेत्रीय शीर्ष संस्थानों के रूप में काम करेगें ।

ओल आदिवासी स्टूडेंट ऐसोसिएशन आफ आसाम के मंच पर तिनसुकिया पहुंचे हेमंत सोरेन

बौद्धिक व आर्थिक रूप से मजबूत लोगों ने झारखंड को 15 साल पीछे ढकेलने का प्रयास किया : हेमंत सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज असम के तिनसुकिया जिला में ऑल आदिवासी स्टूडेंट एसोसिएशन ऑफ आसाम द्वारा आयोजित ₹21वीं आदिवासी महासभा-2026₹ को संबोधित करते हुए कहा कि यहां आप सभी आदिवासी समुदाय के लोग जो लगभग डेढ़ सौ वर्षों से यहां रह रहे हैं उनसे रू-ब-रू होने का आज मुझे मौका मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड के वैसे सभी आदिवासी-मूलवासी समुदाय के जनमानस जो असम में रह कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं उनकी तकलीफों, उनपर हो रहे अत्याचारों और व्यथा को सुनने के लिए हम आज यहां आए हैं। हम लोग झारखंड से आए हैं, कहीं न कहीं आप सभी का जुड़ाव भी झारखंड से बहुत पुराना रहा है। झारखंड एक ऐसा प्रदेश है जब देश के लोग आजादी का सपना भी नहीं देखे थे, उस समय आजादी की लड़ाई हमारे पूर्वज अंग्रेजों के साथ लड़ रहे थे। देश की आजादी में धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा, सिदो कान्हू, तिलका मांझी सहित झारखंड के अनगिनत वीर सपूतों का अहम योगदान रहा है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे वीर सपूतों ने पीढ़ियों को बचाने, जल, जंगल, जमीन को बचाने के लिए अपना बलिदान दिया है। आदिवासी समाज के लोगों ने ही अंग्रेजों से सबसे पहले लोहा लेने का काम किया था।आखिर किस कारण से आज देश के विभिन्न हिस्सों में आदिवासी समाज के लोग अपने हक-अधिकार की लड़ाई के लिए संघर्ष कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी, मूलवासी, दलित, पिछड़ा वैसे वर्ग है जो समाज के सबसे कमजोर एवं नीचे पायदान में रहने वाले लोग हैं। ऐसी क्या परिस्थिति आ गई जो यहां के आदिवासी-मूलवासी अलग-थलग होकर बिखरने को मजबूर हुए हैं। कई जगहों पर आदिवासी समुदाय के लोग हाशिए पर रहकर अपना जीवन जी रहे हैं। इन विषयों पर गंभीर चिंतन की जरूरत है।मौके पर मुख्यमंत्री ने असम के कद्दावर आदिवासी नेता स्व० प्रदीप नाग एवं प्रसिद्ध गायक स्व० जुबिन गर्ग को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि देश आजाद हुए 75 साल हो गए हैं। देश में कई नीतियां-कानून बने। देश के संविधान से हमें रक्षा कवच मिला उसके बावजूद आज हम कहां खड़े हैं। आज हमारा समाज कितना संघर्ष कर रहा है यह बहुत बेहतर तरीके से आप सभी लोग जानते हैं। आज सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक रूप से आदिवासी समुदाय कमजोर है और इसी कमजोरी का फायदा बड़े एवं सामंती विचारधारा वाले लोग बहुत चालाकी से उठाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आदरणीय दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी आज हमारे बीच नहीं हैं, जब उन्होंने अलग राज्य की परिकल्पना की तो कुछ लोग मजाक उड़ाते थे कि आदिवासी लोग अलग राज्य बनाएंगे। आज सच्चाई पूरे देश के सामने हैं। वर्ष 2000 में अलग झारखंड राज्य झारखंड बना। यह बात सही है कि उस समय क्या नारा लगता था, कैसे लेंगे झारखंड, लड़के लेंगे झारखंड। उस समय न मोबाइल, न गाड़ी, न मोटर उसके बावजूद झारखंड के लोग जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए चीटियों की तरह एकजुट हो जाते थे। राज्य अलग हुआ लेकिन इसका फायदा आदिवासी समुदाय को नहीं मिला। हम लोगों को तो राज्य लेना था, हमारे अग्रणी नेताओं ने सोचा कि राज्य अलग होगा तो यहां के आदिवासियों-मूलवासियों का विकास होगा। झारखंड राज्य अलग होने के बाद बौद्धिक रूप से मजबूत लोगों ने 15 वर्ष से ज्यादा समय तक झारखंड को पीछे धकेलने का काम किया, नतीजा यह हुआ कि राशन कार्ड लेकर लोग भात-भात-कहते हुए भूख से मरने को विवश हुए, फिर हमने प्रखंड-प्रखंड, गांव-गांव, टोला-टोला पहुंचकर लोगों को जागरूक करने का काम किया फिर लोगों ने हमें राज्य की बागडोर संभालने का मौका दिया। राज्य का बागडोर संभालते ही हमने 5 साल के भीतर स्थिति को बदलने की कोशिश की और हमें सफलता भी मिली। वैसे गरीब, पीड़ित, शोषित, आदिवासी-मूलवासी समुदाय के लोग जो कभी जिला ऑफिस, प्रखंड कार्यालय नहीं देखे थे, बीडीओ, सीओ, डीसी, एसपी को नहीं जानते थे उनतक हमने राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को पहुंचाने का काम किया है।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में झारखंड सबसे ज्यादा योगदान देने वाला राज्य है। हमारी सरकार ने यह तय किया है कि इस राज्य ने बहुत कुछ दिया है अब इस राज्य के लोगों को वापस देने की जरूरत है। हमारे राज्य के संसाधन का सही मूल्य मिले इस पर हम बेहतर कार्यपद्धति से आगे बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहली बार विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) के वार्षिक सम्मेलन में एक आदिवासी मुख्यमंत्री के नेतृत्व में झारखंड ने अपनी ऐतिहासिक उपस्थिति दर्ज किया है। आज झारखंड ने वैश्विक पटल पर अपनी बातें पहुंचाई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य की आधी आबादी को आत्मनिर्भरता की राह पर ले जाने का काम कर दिखाया है। प्रत्येक माह राज्य की लगभग 55 लाख महिलाओं को मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत उनके बैंक खाते में 2500 रुपए की राशि भेजी जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब हमारे विकास मॉडल की कॉपी दूसरे राज्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की राशि पिछले दो वर्षों से निरंतर यहां की महिलाओं को मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने झारखंड के नौजवानों के लिए गए महत्वाकांक्षी स्कीम्स लागू किए हैं। यहां के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए 15 लख रुपए तक का एजुकेशन लोन बिना कोई गारंटी के उपलब्ध कराई जा रही है।

इस अवसर पर मंत्री चमरा लिंडा, सांसद विजय हांसदा, विधायक मो० ताजुद्दीन उर्फ एमटी राजा, आसा सेंट्रल कमेटी के अध्यक्ष रेजन होरो, उपाध्यक्ष डेविड तिर्की , अमरजीत केरकेट्टा, अल्बर्ट ओरिया सहित अन्य सदस्यगण, असम के कोने-कोने से बड़ी संख्या में पहुंचे महिला, पुरुष, नौजवान, बच्चे, बच्चियां सहित आदिवासी समुदाय के लोग उपस्थित थे

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**